श्रम संगम

वर्ष: 7, अंक: 1

जनवरी–जून 2021

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान द्वारा प्रकाशित जर्नल

लेबर एंड डेवलपमेंट

लेबर एंड डेवलपमेंट संस्थान की एक छमाही पत्रिका है, और यह सैद्धांतिक विश्लेषण एवं आनुभविक अन्वेषण के जरिए श्रम के विभिन्न मुद्दों का प्रसार करने के लिए समर्पित है। इस पत्रिका में आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक मुद्दों के साथ–साथ विधिक पहलुओं पर बल देते हुए श्रम एवं संबंधित विषयों के क्षेत्र में उच्च शैक्षिक गुणवत्ता वाले लेखों का प्रकाशन किया जाता है। साथ ही, विशेषकर विकासशील देशों के संदर्भ में उन लेखों पर अनुसंधान टिप्पणियों एवं पुस्तक समीक्षाओं का भी इसमें प्रकाशन किया जाता है।

अवार्ड्स डाइजेस्टः श्रम विधान का जर्नल

अवार्ड्स डाइजेस्ट एक तिमाही जर्नल है, जिसमें श्रम और औद्योगिक संबंधों के क्षेत्र के अद्यतन मामला विधियों का सार प्रकाशित किया जाता है। इस जर्नल में उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों, प्रशासनिक अधिकरणों तथा केंद्रीय सरकारी औद्योगिक अधिकरणों द्वारा श्रम मामलों के बारे में दिए गए निर्णय प्रकाशित किए जाते हैं। इसमें श्रमकानूनों से संबंधित लेख, उनमें किए गए संशोधन, अन्य संगत सूचना शामिल होती है। यह पत्रिका कार्मिक प्रबंधकों, ट्रेड यूनियन नेताओं और श्रमिकों, श्रम कानूनों के परामर्शदाताओं, शैक्षिक संस्थानों, सुलह अधिकारियों, औद्योगिक विवादों के मध्यस्थों, प्रैक्टिस करने वाले अधिवक्ताओं और श्रम कानून के विद्यार्थियों के लिए एक बहुमूल्य संदर्भ पत्रिका है।

श्रम विधान

श्रम विधान तिमाही हिन्दी पत्रिका है। श्रम कानूनों और उनमें समय–समय पर होने वाले बदलावों की जानकारी को आधारिक स्तर (Grass Roots Level) तक सरल और सुबोध भाषा में पहुंचाने के लिए इस पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। इस पत्रिका में संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्रों के लिए अधिनियमित मौजूदा कानूनों की सुसंगत जानकारी, उनमें होने वाले संशोधनों, श्रम तथा इससे संबद्ध विषयों पर मौलिक एवं अनूदित लेख, भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी अधिसूचनाओं के प्रकाशन के साथ–साथ श्रम से संबंधित मामलों पर उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों तथा केंद्रीय प्रशासनीक न्यायाधिकरणों द्वारा दिए गए फैसलों को सार के रूप में प्रकाशित किया जाता है।

चंदे की दरः लेबर एंड डेवलपमेंट पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 150 रुपए तथा संस्थानों के लिए 250 रुपए है। अवार्ड्स डाइजेस्ट पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 240 रुपए तथा संस्थानों के लिए 300 रुपए है। श्रम विधान पत्रिका के लिए वार्षिक चंदा, व्यक्तियों के लिए 240 रुपए तथा संस्थानों के लिए 300 रुपए है। चंदे की दर प्रति कैलेण्डर वर्ष (जनवरी–दिसम्बर) है। ग्राहक प्रोफार्मा संस्थान की वेबसाइट www.vvgnli.gov.in पर उपलब्ध है। ग्राहक प्रोफार्मा पूरी तरह भरकर डिमांड ड्राफ्ट सहित जो वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान के पक्ष में एवं दिल्ली / नौएडा में देय हो, इस पते पर भेजेः

प्रकाशन प्रभारी
वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान
सैक्टर–24, नौएडा–201301, उत्तर प्रदेश
ई–मेलः publications.vvgnli@gov.in

मुख्य संरक्षक
डॉ. एच. श्रीनिवास
महानिदेशक

संपादक मंडल
डॉ. संजय उपाध्याय
वरिष्ठ फेलो

डॉ. ओतोजीत क्षेत्रिमयूम
फेलो

श्री बीरेन्द्र सिंह रावत
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान
सैक्टर-24, नौएडा-201301
उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का दायित्व स्वयं लेखकों का है तथा पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के लिए वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान उत्तरदायी नहीं है।

मुद्रण: चन्दु प्रेस
डी-97, शकरपुर
दिल्ली-110092

श्रम संगम

वर्ष: 7, अंक: 1, जनवरी-जून 2021

अनुक्रमणिका

❍	महानिदेशक की कलम से	2
❍	अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अर्थशास्त्री: अमर्त्य सेन – डॉ. संजय उपाध्याय	3
❍	राजभाषा सम्मान	5
❍	चिकित्सा क्षेत्र का कायाकल्प – राजेश कुमार कर्ण	6
❍	प्रमुख राष्ट्रीय प्रतीक: तिरंगा – गीता अरोड़ा	10
❍	गरीबी, कोरोनाकाल और सरकारी उपाय – बीरेन्द्र सिंह रावत	12
❍	कोरोना (कविता) – दिगम्बर सिंह बिष्ट	17
❍	नवनिर्माण की ओर नया भारत – राजेश कुमार कर्ण	18
❍	देश के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी: शहीद करतार सिंह सराभा – सुधा वोहरा	29
❍	सावधानी हटी, दुर्घटना घटी (कविता) – बीरेन्द्र सिंह रावत	31
❍	एक शब्दहीन नदी (कहानी) – शैलेश मटियानी	32
❍	हिंदी गीतों के राजकुमार डॉ. कुँवर बेचैन – राजेश कुमार कर्ण	37
❍	भारत की पहली महिला सर्जन: डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी – अवनीन्द्र कुमार श्रीवास्तव	41
❍	अंकों का अद्भुत संसार – बीरेन्द्र सिंह रावत	42
❍	राजभाषा नीति संबंधी मार्गदर्शन एवं अनुश्रवण के लिए गठित समितियाँ	44

महानिदेशक की कलम से...

हिंदी सरल, सहज एवं शिष्ट भाषा है तथा इसे आसानी से बोला/सीखा जा सकता है। यह जन–जन की भाषा है तथा इसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में विभिन्न भाषा–भाषी लोगों को एक साथ चलकर आजादी की लड़ाई लड़ने में अहम भूमिका अदा की थी। राजा राममोहन राय, केशवचंद्र सेन, बंकिम चंद्र चटर्जी, दयानंद सरस्वती, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक और बिपिन चंद्र पाल जैसे अनेकों स्वतंत्रता सेनानियों ने अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी के प्रयोग की महत्ता खुद भी समझी और लोगों को भी प्रेरित किया कि वे इसका प्रयोग करें। इस तरह हिंदी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय जनमानस की आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनी। 1918 में मराठी भाषी लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से यह घोषणा की थी कि भारत की राजभाषा हिंदी होगी। आज जब देश में स्वतंत्रता का 75वाँ वर्ष 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तौर पर मनाया जा रहा है, ज्ञात–अज्ञात सभी स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए हम सब सारे कार्य राजभाषा हिंदी में करने का संकल्प लें।

वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी राजभाषा संबंधी निदेशों का अनुपालन करने के साथ ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), नौएडा के विभिन्न कार्यकलापों में भी सदैव पूरी सक्रियता के साथ सहयोग करता रहता है। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन संबंधी कार्यकलापों में वर्ष 2019–20 के दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए संस्थान को नराकास, नौएडा द्वारा 29.01.2021 को ऑनलाईन आयोजित 41वीं बैठक में प्रथम पुरस्कार (चल वैजयंती, प्रथम शील्ड और सम्मान पत्र) से सम्मानित किया गया है।

श्रम संगम' पत्रिका की नियमितता बनाए रखने तथा इसके आगामी अंकों को अधिकाधिक रुचिकर बनाने हेतु आपके बहुमूल्य विचारों और सुझावों का सदैव स्वागत है। पत्रिका अनवरत इसी प्रकार आकर्षक रूप में हमारे बीच आती रहे तथा हिंदी के प्रचार–प्रसार में सदैव सफलता प्राप्त करे, इसके लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

¼Mk- ,p- Jhfuokl½

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अर्थशास्त्रीः अमर्त्य सेन

डॉ संजय उपाध्याय*

प्रख्यात कल्याण अर्थशास्त्री, 'द आर्ग्युमेंटेटिव इंडियन' तथा 'दि आइडिया ऑफ जस्टिस' जैसी अत्यंत लोकप्रिय और उपादेय पुस्तकों सहित अन्य अनेक पुस्तकों और दर्जनों लेखों के लेखक तथा नोबेल पुरस्कार एवं भारत रत्न जैसे श्रेष्ठतम अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय पुरस्कारों से एक साथ पुरस्कृत होने का गौरव प्राप्त करने वाले एक मात्र भारतीय होने के साथ–साथ श्री अमर्त्य सेन जी एक महान विचारक और दर्शनशास्त्री भी हैं। उन्होंने अपनी अधिकांश रचनाओं और शोध अध्ययनों के माध्यम से हमेशा से ही आर्थिक विकास और मानव कल्याण के बीच एक संतुलन कायम करने पर बल दिया है। उनका व्यक्तित्व अनेक दृष्टियों से अत्यंत प्रेरणादायी है। इन महान अर्थशास्त्री, विचारक और दर्शनशास्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्व के कुछ चुनिंदा पहलुओं पर इस आलेख में प्रकाश डाला गया है।

प्रारम्भिक जीवन एवं शिक्षा

अमर्त्य सेन जी का जन्म 03 नवम्बर 1933 को मणिकगंज (ब्रिटिश भारत में, वर्तमान बांग्लादेश) में एक बंगाली कायस्थ परिवार में, आशुतोष सेन और अमिता सेन के घर हुआ था। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने इनका नामकरण अमर्त्य (जिसका अर्थ बांग्ला भाषा में अमर होता है) किया। उनके पिता आशुतोष सेन ढाका विश्वविद्यालय में रसायन विज्ञान के प्रोफेसर, दिल्ली में विकास आयुक्त और पश्चिम बंगाल लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष रहे थे। वह 1945 में अपने परिवार के साथ पश्चिम बंगाल में बस गए थे। सेन की माँ अमिता सेन प्राचीन और मध्यकालीन भारत के प्रख्यात संस्कृतिविद् और विद्वान क्षिति मोहन सेन, जो रवींद्रनाथ टैगोर के करीबी सहयोगी थे, की बेटी थीं। क्षिति मोहन सेन ने 1953 से 1954 के दौरान विश्व भारती विश्वविद्यालय के दूसरे कुलपति के रूप में कार्य किया। अमर्त्य सेन ने अपनी स्कूली शिक्षा 1940 में ढाका के सेंट ग्रेगरी स्कूल में आरंभ की। 1941 के शुरू में उन्हें शांतिनिकेतन में भर्ती करा दिया गया जहाँ से उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा पूरी की। 1951 में उन्होंने कलकत्ता स्थित प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रवेश लिया जहाँ से उन्होंने बी.ए. (अर्थशास्त्र) की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। प्रेसीडेंसी कॉलेज में रहते हुए सेन को मुंह के कैंसर का पता चला और सौभाग्य से वह विकिरण (रेडिएशन) उपचार से जल्दी ठीक हो गए। 1953 में वह कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के ट्रिनिटी कॉलेज चले गए, जहाँ से उन्होंने 1955 में दूसरी बार बी.ए. (अर्थशास्त्र) की उपाधि प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान के साथ हासिल की। तत्पश्चात उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से एम. ए. एवं पीएच. डी. की उपाधियाँ हासिल कीं। ट्रिनिटी और कैम्ब्रिज, दोनों में सामाजिक पसंद सिद्धांत के लिए उत्साह की कमी के कारण सेन ने अपनी पीएच. डी. थीसिस के लिए एक अलग विषय चुना, जो 'द चॉइस ऑफ टेक्निक्स' था। 'द चॉइस ऑफ टेक्निक्स' पर सेन के काम ने मौरिस डोब के काम को अनुपूरित किया। एक विकासशील देश में डोब–सेन रणनीति निवेश योग्य अधिशेष को अधिकतम करने, निरंतर वास्तविक मजदूरी बनाए रखने और तकनीकी परिवर्तन के कारण श्रम उत्पादकता में संपूर्ण वृद्धि का उपयोग करके संचय की दर बढ़ाने पर निर्भर थी।

अकादमिक करियर

सेन ने अपने करियर की शुरुआत एक शिक्षक और अनुसंधान अध्येता के तौर पर अर्थशास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय से की। दरअसल, जब सेन आधिकारिक तौर पर कैम्ब्रिज में पीएच. डी. के छात्र थे, कलकत्ता में नव स्थापित जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें प्रथम–प्रोफेसर

* *वरिष्ठ फेलो, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, सैक्टर–24, नौएडा*

और अर्थशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष के पद की पेशकश की गई थी। वह अब तक अर्थशास्त्र विभाग की अध्यक्षता करने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति हैं। उन्होंने 1956 से 1958 तक नए अर्थशास्त्र विभाग की शुरुआत करते हुए उस पद पर कार्य किया। 1960 और 1961 के दौरान सेन संयुक्त राज्य अमेरिका में मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में एक विजिटिंग प्रोफेसर रहे थे, जहाँ वह पॉल सैमुएलसन, रॉबर्ट सोलो, फ्रेंको मोडिग्लिनी, और नॉर्बर्ट वीनर सरीखे प्रख्यात अर्थशास्त्रियों के संपर्क में आए। वह यूसी–बर्कले और कॉर्नेल में भी विजिटिंग प्रोफेसर रहे। उन्होंने 1963 और 1971 के दौरान दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। सेन अर्थशास्त्र के अनेक प्रतिष्ठित विद्वानों के सहयोगी भी रह चुके हैं जिनमें डॉ. मनमोहन सिंह (भारत के पूर्व प्रधान मंत्री और भारत में उदारवादी अर्थव्यवस्था के प्रणेता एवं एक अनुभवी अर्थशास्त्री), के. एन. राज (विभिन्न प्रधान मंत्रियों के सलाहकार और एक अनुभवी अर्थशास्त्री जो सेंटर फॉर डेवेलपमेंट स्टडीज के संस्थापक थे) और जगदीश भगवती (जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में सबसे महान भारतीय अर्थशास्त्रियों में से एक के रूप में जाने जाते हैं और वर्तमान में कोलंबिया विश्वविद्यालय में पढ़ाते हैं) शामिल हैं। अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में उन्होंने 1971 से 1977 तक लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स और तत्पश्चात 1977 से 1987 तक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। 1987 में वह हार्वर्ड विश्वविद्यालय में इकॉनॉमिक्स के थॉमस डब्ल्यू. लैंट यूनिवर्सिटी प्रोफेसर के रूप में चुन लिए गए। आपको 1988 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में ट्रिनिटी कॉलेज के मास्टर के रूप में नियुक्त किया गया था और वहां पर आप ऑक्सब्रिज कॉलेज के पहले एशियाई प्रमुख बने थे। वर्तमान में आप हार्वर्ड विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर हैं।

आपने इकोनोमेट्रिक सोसाइटी (1984), इंटरनेशनल इकोनॉमिक एसोसिएशन (1986–1989), इंडियन इकोनॉमिक एसोसिएशन (1989) और अमेरिकन इकोनॉमिक एसोसिएशन (1994) के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया है। आपने डेवलपमेंट स्टडीज एसोसिएशन और ह्यूमन डेवलपमेंट एंड कैपेबिलिटी एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में भी काम किया है। आप चीन में पेकिंग विश्वविद्यालय में सेंटर फॉर ह्यूमन एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट स्टडीज की अकादमिक सलाहकार समिति के साथ मानद निदेशक के रूप में जुड़े हुए हैं। आप ने यूनाईटेड किंगडम स्थित अंतर्राष्ट्रीय विकास चैरिटी ऑक्सफैम के मानद अध्यक्ष के रूप में कार्य किया है और वर्तमान में इसके मानद सलाहकार हैं।

अनुसंधान कार्य

अमर्त्य सेन जी ने अर्थशास्त्र के विभिन्न क्षेत्रों में अनेकों उच्च स्तरीय अनुसंधान कार्यों को भी अंजाम दिया। सेन को ट्रिनिटी कॉलेज में अध्ययन के दौरान एक फेलोशिप के लिए चुना गया था जिसमें उन्हें अपनी पसंद का कुछ भी करने के लिए चार साल की स्वतंत्रता दी गयी थी। उन्होंने दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने का क्रांतिकारी निर्णय लिया। सेन ने कहाः ''दर्शनशास्त्र में मेरे अध्ययन का विस्तार मेरे लिए न केवल इसलिए महत्वपूर्ण था कि अर्थशास्त्र में मेरी रुचि के कुछ मुख्य क्षेत्र दार्शनिक विषयों से काफी निकटता से संबंधित हैं (उदाहरण के लिए, सामाजिक पसंद सिद्धांत गणितीय तर्क का गहन उपयोग करता है और इसी तरह का सिद्धान्त असमानता एवं वंचन के अध्ययन में भी पाया जाता है), बल्कि इसलिए भी कि मैंने दार्शनिक अध्ययनों को अपने आप में बहुत फायदेमंद पाया।'' दर्शनशास्त्र में उनकी रुचि प्रेसीडेंसी कॉलेज, जहाँ उन्होंने दर्शनशास्त्र पर अनेकों किताबों का अध्ययन किया था और दार्शनिक विषयों पर परिचर्चाओं में भाग लिया था, में उनके कॉलेज के दिनों से ही रही है। केनेथ एरो की 'सोशल चॉइस एंड इंडिविजुअल वैल्यूज' उन किताबों में से एक थी जिनमें उनकी सबसे ज्यादा दिलचस्पी थी।

सेन ने 1981 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'पॉवर्टी एंड फेमिन्सः एन एस्से ऑन एंटाइटेलमेंट एंड डेप्रिवेशन' में यह तर्क दिया कि अकाल केवल भोजन की कमी से नहीं होता है, बल्कि भोजन वितरण के लिए तंत्र में निर्मित असमानताओं से भी होता है। सेन ने यह भी तर्क दिया था कि बंगाल का अकाल एक शहरी आर्थिक उछाल के कारण हुआ जिसने खाद्य कीमतों में वृद्धि की। इससे लाखों ग्रामीण श्रमिकों को भूख से मरना पड़ा क्योंकि उनकी मजदूरी में कोई इजाफा नहीं हुआ था। अकाल में सेन की रुचि व्यक्तिगत अनुभव से उत्पन्न हुई थी। नौ साल के लड़के के रूप में उन्होंने 1943 के बंगाल के अकाल को देखा था जिसमें 30 लाख लोग मारे गए थे। अकाल के कारणों पर उनके महत्वपूर्ण कार्य के अलावा विकास अर्थशास्त्र के क्षेत्र में सेन के कार्य का संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम द्वारा प्रकाशित 'मानव विकास रिपोर्ट' के निर्माण में काफी प्रभाव पड़ा है। इस वार्षिक प्रकाशन में विभिन्न प्रकार के आर्थिक और सामाजिक संकेतकों पर देशों की रैंकिंग निर्धारित की जाती है।

कल्याण अर्थशास्त्र में समुदाय के कल्याण पर उनके प्रभावों के संदर्भ में आर्थिक नीतियों का मूल्यांकन किया जाता है। अकाल, मानव विकास सिद्धांत, कल्याण अर्थशास्त्र, गरीबी के अंतर्निहित तंत्र, लैंगिक असमानता और राजनीतिक उदारवाद

पर उनके काम और अप्रतिम योगदान के लिए सेन को 'अपने पेशे की अंतरात्मा' और 'अर्थशास्त्र की मदर टेरेसा' कहा जाता है। हालांकि, उन्होंने मदर टेरेसा के साथ स्वयं की तुलना किए जाने से इनकार करते हुए कहा कि उन्होंने कभी भी समर्पित आत्म–बलिदान की जीवन शैली का पालन करने की कोशिश नहीं की है। उनके प्रभावशाली मोनोग्राफ 'कलेक्टिव चॉइस एंड सोशल वेलफेयर (1970)', जिसने व्यक्तिगत अधिकारों, न्याय और समानता, बहुमत नियम और व्यक्तिगत स्थितियों के बारे में जानकारी की उपलब्धता से संबंधित समस्याओं को संबोधित किया, ने शोधकर्ताओं को अपना ध्यान बुनियादी कल्याण के मुद्दों पर आकर्षित करने के लिए प्रेरित किया। सेन ने गरीबी को मापने के लिए ऐसे तरीके तैयार किए जिनसे गरीबों की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए उपयोगी जानकारी मिली। खाद्य संकट से निपटने में सरकारें और अंतर्राष्ट्रीय संगठन सेन के काम से प्रभावित थे। उनके विचारों ने नीति निर्माताओं को न केवल तत्काल कष्टों को कम करने पर ध्यान देने के लिए प्रोत्साहित किया, बल्कि गरीबों की खोई हुई आय को बढ़ाने के तरीके खोजने के लिए, उदाहरण के लिए सार्वजनिक कार्यों के माध्यम से, और भोजन के लिए स्थिर कीमतों को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित किया। राजनीतिक स्वतंत्रता के प्रबल रक्षक सेन का मानना रहा है कि कार्यशील लोकतंत्रों में अकाल नहीं पड़ते, उनके नेताओं को नागरिकों की मांगों के प्रति अधिक उत्तरदायी होना चाहिए। आर्थिक विकास हासिल करने के लिए उन्होंने तर्क दिया कि सामाजिक सुधार, जैसे कि शिक्षा और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार, आर्थिक सुधार से पहले होने चाहिए। 2009 में सेन ने कल्याण अर्थशास्त्र और सामाजिक पसंद सिद्धांत में अपने पिछले काम और अपने दार्शनिक विचारों के आधार पर 'द आइडिया ऑफ जस्टिस' नामक एक पुस्तक प्रकाशित की, इसमें उन्होंने न्याय का अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया।

पुरस्कार

आपने सामाजिक पसंद सिद्धांत, नैतिकता और राजनीतिक दर्शन, कल्याण अर्थशास्त्र, निर्णय सिद्धांत, विकास अर्थशास्त्र, सार्वजनिक स्वास्थ्य और लैंगिक अध्ययन सहित कई विषयों पर शोध किया है। कल्याण अर्थशास्त्र में आपके शानदार योगदान के लिए वर्ष 1998 में आपको अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार और वर्ष 1999 में भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया था। वर्ष 2020 में जर्मन पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स एसोसिएशन ने उन्हें वैश्विक न्याय के मुद्दों को संबोधित करने और शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा में सामाजिक असमानता का मुकाबला करने के लिए उनकी अग्रणी भूमिका के लिए जर्मन बुक ट्रेड के शांति पुरस्कार से सम्मानित किया।

राजभाषा सम्मान

वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान को राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन संबंधी कार्यकलापों में वर्ष 2019–20 के दौरान उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नौएडा द्वारा 29.01.2021 को ऑनलाइन आयोजित 41वीं बैठक में **प्रथम पुरस्कार** (चल वैजयंती, प्रथम शील्ड एवं सम्मान पत्र) से सम्मानित किया गया।

श्री अरविन्द कुमार, सदस्य सचिव (नराकास, नौएडा) से पुरस्कार पुरस्कार ग्रहण करते हुए
डॉ. संजय उपाध्याय, सीनियर फेलो एवं श्री बीरेंद्र सिंह रावत, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वीवीजीएनएलआई

चिकित्सा क्षेत्र का कायाकल्प

राजेश कुमार कर्ण*

जब देश आजाद हुआ था तो चिकित्सा के मामले में हर स्तर पर हम बहुत पीछे थे। आबादी और संसाधनों के हिसाब से कई प्रकार की चुनौतियां सामने थीं। इनमें सबसे बड़ी चुनौती थी, कमजोर स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने की। उस दौरान संक्रामक बीमारियों से जन–जीवन अस्त–व्यस्त था। टीबी, प्लेग, चेचक, पोलियो, हैजा आदि के संक्रमण के कारण प्रति वर्ष लाखों लोगों को जान गंवानी पड़ती थी। दवाओं व वैक्सीन का अभाव तो था ही, इससे भी ज्यादा कठिन था लोगों को इन रोगों के प्रति जागरूक करना और बचाव के तरीके समझाना। इसके लिए व्यापक अभियान चलाए गए और घर–घर जाकर समय पर उपचार लेने व इसे फैलने से रोकने के बारे में सजग किया गया। पोलियो तो भारत के लिए अभिशाप साबित हो रहा था। इसके कारण हर साल लाखों लोग दिव्यांग हो रहे थे। देश में इसे जड़ से मिटाने के लिए पोलियो वैक्सीन अभियान 1985 में शुरू हुआ। समय के साथ इस मुहिम ने रफ्तार पकड़ी और 1993 में पल्स पोलियो अभियान शुरू किया गया। इसका परिणाम रहा कि भारत 2011 में पोलियो मुक्त देश घोषित हुआ। आजादी के बाद कई बीमारियां देश के लिए चुनौती थी, लेकिन अब भारत पोलियो की ही तरह कोरोना को मिटाने में अग्रसर है। पहले चिकित्सा में प्रयोग में आने वाले उपकरणों के लिए हमें दूसरे देशों का मुंह ताकना पड़ता था, लेकिन आज भारत में तीन हजार से अधिक मेडिकल उपकरणों का निर्माण करने वाली कंपनियां हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक टीबी की जांच की सीबी नेट मशीन आयात की जाती थी, पर अब ट्रूनेट के नाम से विशुद्ध भारतीय मशीन हमारे देश के वैज्ञानिकों ने विकसित की है। आज ऐसी कोई आधुनिक शल्य चिकित्सा नहीं है, जो भारत में न हो रही हो या जिसके लिए लगातार शोध कार्य न हो रहे हों। आम आदमी को अच्छी चिकित्सा सुविधा मिल सके, इसके लिए आयुष्मान भारत जैसी ढेरों चिकित्सा योजनाएं उपलब्ध हैं।

केन्द्र सरकार ने पहली बार आम बजट में स्वास्थ्य क्षेत्र को 137 प्रतिशत की बढ़ोतरी के साथ सबसे बड़ी भागीदारी दी है जिसका मकसद देश के स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़े आधारभूत ढ़ांचा को सुधारना है। सभी राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रम जैसे टीबी, एचआईवी, मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2030 तक दुनिया को टीबी मुक्त करने का लक्ष्य रखा है, जबकि भारत ने अपने लिए इस लक्ष्य को वर्ष 2025 तक पूरा करने की प्रतिबद्धता जताई है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी टीबी मुक्त भारत अभियान की नई रणनीति योजना को लॉन्च कर चुके हैं। पहले तीन वर्षों में इसके लिए 12 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। भारत ने पोलियो और नवजात टिटनस के उन्मूलन में उल्लेखनीय प्रगति की है। सरकार ने वर्ष 2015 में टीकाकरण के विस्तार के लिए मिशन इंद्रधनुष की शुरुआत की थी। इसके अतिरिक्त मुख्य स्वास्थ्य संकेतकों, जैसे शिशु और मातृत्व मृत्यु दर में कमी और एचआईवी, टीबी और मलेरिया के मामलों में गिरावट हुई है। इनसे देश को स्वास्थ्य संबंधी विकास लक्ष्यों को पूरा करने में मदद मिली है।

हर सफलता और समृद्धि का आधार स्वास्थ्य होता है, फिर चाहे वो एक व्यक्ति से जुड़ी हो, परिवार या समाज से जुड़ी हो, या पूरे राष्ट्र से। विशेषकर ऐसे समय में जब भारत कोरोना वायरस जैसी भयंकर महामारी के सबसे भीषण दौर से गुजर रहा है, यह बात और महत्वपूर्ण हो जाती है। इस संकट से हम सबको मिल कर लड़ना, जीतना है और हम जीत कर रहेंगे। कोरोना की पहली लहर से दूसरी लहर तक केन्द्र सरकार ने देश के स्वास्थ्य ढांचे को बेहतर बनाने के साथ ही कोरोना से जुड़े हर मामले का बारीकी से अध्ययन किया है। केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ इंडियन काउंसिल फॉर मेडिकल रिसर्च, एम्स व मेडिकल विशेषज्ञों की टीम दिन–रात इस काम में जुटी रहती है। जरूरत के हिसाब से समय–समय पर आम लोगों के साथ अस्पतालों के लिए दिशा–निर्देश जारी किए जाते है। ऑक्सीजन, दवा और वैक्सीन सप्लाई के साथ टीकाकरण के हर पल का अपडेड प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तक पहुंचाया जाता है। कोरोना की पहली लहर में भारत जिस तरह जीता, डब्ल्यूएचओ से लेकर दुनिया की सभी एजेंसियों ने भी सराहा। अब वक्त दूसरी लहर को अपने हौसले के साथ सावधानी और वैक्सीन के जरिए कमतर साबित करने का है।

वर्ष 2014 में मोदी सरकार बनने के साथ ही पहली बार एक ऐसे सेक्टर में आमूलचूल बदलाव की भी शुरूआत हुई जिसकी ओर इससे पहले कभी उतना ध्यान नही नहीं दिया गया था। चाहे नए अस्पताल, मेडिकल कॉलेज हों या फिर गरीबों को निःशुल्क इलाज, गांव से लेकर अब छोटे शहरों के साथ बड़े शहरों तक स्वास्थ्य सुविधाओं के नए सिरे से निर्धारण की शुरूआत हो चुकी है। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए आयुष्मान योजना के तहत लगभग 10 करोड़ परिवारों को सालाना पांच लाख रुपये के स्वास्थ्य बीमा का लाभ मिल रहा है।

* *आशुलिपिक ग्रेड–II, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

आयुष्मान भारत योजना के तहत 150000 स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्र खोले जाने हैं जिसमें 50025 केंद्रों की शुरुआत कोरोना काल के दौरान 678 जिलों में की गई। 28 करोड़ से ज्यादा लोग इन केंद्रों पर लाभ ले चुके हैं। गरीबों को उनके दरवाजे पर प्राथमिक चिकित्सा के लिए टेलीमेडिसिन सेवा उपलब्ध कराने के लक्ष्य के मद्देनजर ई–संजीवनी के तहत टेलीमेडिसिन प्लेटफार्म को लगभग 30 राज्यों में लगभग 20000 स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों में स्पोक्स के रूप में और 1800 से अधिक हब में लागू किया गया है। 10 जून 2021 तक ई–संजीवनी सेवा ने 60 लाख परामर्श पूरे कर लिए हैं।

वर्ष 2014 से अब तक का समय चिकित्सा जगत के लिए स्वर्णिम काल रहा। इस दौरान 22 नए चिकित्सा संस्थान प्रारंभ हुए। भारत जैसे विकासशील देश के लिए उच्च चिकित्सा के क्षेत्र में यह एक बड़ी छलांग है। वर्ष 2014 तक देश में कुल 440 मेडिकल कॉलेज थे, लेकिन आज इन मेडिकल कॉलेज व चिकित्सा संस्थानों की संख्या बढ़कर 562 हो गई है, यह अच्छा संकेत है। स्वास्थ्य से जुड़े हर क्षेत्र के लिए संस्थानों की स्थापना का क्रम जारी है और इसी क्रम में आज देश में 566 डेंटल कॉलेज हैं। वर्ष 2014 तक देश में प्रति वर्ष एमबीएसएस छात्रों की संख्या 50000 तथा परास्नातक चिकित्सा की पढ़ाई के लिए छात्रों की संख्या 25000 थी जो वर्तमान में क्रमशः 84649 एवं 42720 हो गई है। यह चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धि है। स्वास्थ्य सेवाओं में हो रहे सरकारी प्रयासों के साथ प्राइवेट सेक्टर में भी बड़ा काम हो रहा है। केन्द्र सरकार की स्वास्थ्य योजनाओं के अंतर्गत आज 37 शहरों में 288 एलोपैथिक एवं 85 आयुष डिस्पेंसरीज स्थापित हो चुकी हैं। आज देश में कुल ब्लड बैंकों की संख्या 3108 है, वहीं 469 आई बैंक हैं।

जिस तेजी से चिकित्सा के क्षेत्र में उन्नति हुई है, वह गर्व की अनुभूति कराती है। स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाएं, नए शोध संस्थानों की स्थापना, स्वनिर्मित दवाओं व चिकित्सा उपकरणों पर आत्मनिर्भरता और कोरोना काल में ही वैक्सीन बना लेना गौरव की बात है। देश हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन रहा है तो फिर चिकित्सा का क्षेत्र कैसे छूट जाएगा। कोविड महामारी के चलते आत्मनिर्भर भारत अभियान की रफ्तार कुछ धीमी जरूरी हुई है, लेकिन इस अभियान के जरिए देश को सशक्त बनाना आज भी मोदी सरकार का संकल्प है।

कोविड–19 की दूसरी लहर पहली की तुलना में आर्थिक नुकसान से कहीं बढ़कर मानवीय क्षति पहुंचा रही है। इस चुनौती से पार पाने के लिए सरकार, उद्योग और समाज अपनी पूरी क्षमता से प्रयास कर रहे हैं। केंद्र सरकार के नेतृत्व में राज्य सरकारें भी कोविड–19 के खिलाफ जंग में अग्रिम मोर्चे पर लड़ रही हैं। आरबीआई ने इस दूसरी लहर की चुनौती से निकलने के लिए जो गैर–पारंपरिक कदम उठाए हैं, व्यक्तिगत कर्जदारों सहित छोटे कर्जदारों को राहत देने के कई एलान किए हैं, वे भरोसा बढ़ाने वाले हैं। इस महामारी में छोटे कारोबार और वित्तीय इकाइयां जमीनी स्तर पर सबसे अधिक मुश्किलों का सामना कर रही हैं। इसी के मद्देनजर रिजर्व बैंक ने 25 करोड़ रुपये तक के कर्ज के पुनर्गठन की मंजूरी दी है। साथ ही माइक्रो फाइनेंस, स्मॉल फाइनेंस बैंक और व्यक्तिगत कर्जदारों को उसने प्राथमिकता क्षेत्र में रखा है जिससे सबसे अधिक दबाव झेल रहे इस क्षेत्र को बड़ी राहत मिलेगी। सरकारी और निजी क्षेत्र के समूचे स्वास्थ्य क्षेत्र को मजबूती देने और टीका निर्माताओं को आसान कर्ज मुहैया कराना भी इस समय की एक बड़ी जरूरत थी, जिसे आरबीआई ने पूरा करने की कोशिश की है। स्वास्थ्य क्षेत्र की वित्तीय जरूरतों को पूरा करने के लिए आरबीआई ने 50000 करोड़ रुपये नकदी की व्यवस्था की है। इस योजना के तहत बैंक टीकों और चिकित्सीय उपकरणों के विनिर्माण, आयात या आपूर्ति से जुड़े कारोबारियों को ऋण दे सकेंगे। इसके अलावा बैंक अस्पतालों, डिस्पेंसरी और पैथलॉजी लैब्स को भी ऋण दे सकेंगे, लेकिन कोरोना के घातक रूप को देखते हुए कुछ और प्रभावी कदम उठाए जाने जरूरी हैं।

कोरोना वायरस महामारी के दौरान हमारे डॉक्टरों, नर्सों और अन्य स्वास्थ्यकर्मियों ने मानवता की जो सेवा की है, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। भारत ने बीते समय कोरोना की लड़ाई में आने वाली चुनौतियों का न सिर्फ मुकाबला किया, बल्कि चिकित्सा तंत्र को मजबूत भी किया। 30 जनवरी 2020 को जब भारत में कोरोना का पहला केस सामने आया, उस वक्त देश में केवल पुणे के नेशनल वायरोलॉजिकल इंस्टीट्यूट की लैब में ही इसके टेस्ट की सुविधा थी। आज देश की 2486 लैब में कोविड टेस्ट की सुविधा है। भारत में कोरोना संक्रमित पहला रोगी जब चिन्हित हुआ तो उसके पूर्व तक पर्याप्त मात्रा में पीपीई किट और एन–95 मास्क आदि हमारे पास नहीं थे, लेकिन आज भारत इनका निर्यात करने वाला दूसरा सबसे बड़ा देश बन गया है। केन्द्र सरकार देश में संक्रामक बीमारियों की रोकथाम, इन्हें शुरुआत में ही रोकने के उपाय समेत इलाज के लिए समूचा आधारभूत ढ़ांचा तैयार करने में जुटी है। वर्ष 2021–2022 के बजट में इसके लिए प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर स्वस्थ भारत योजना के तहत खास प्रावधान किए गए। कोविड जैसी महामारी ने हमें सिखाया है कि कैसे आपदा के बीच अवसर का निर्माण किया जा सकता है। इसे ही ध्यान में रखते हुए 64180 करोड़ रुपये की लागत से देश में प्रधानमंत्री आत्मनिर्भर स्वस्थ भारत योजना के तहत गांवों के साथ प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक स्तर की स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत बनाने की शुरुआत की गई। 3382 ब्लॉकों में लोक स्वास्थ्य इकाइयों की स्थापना की शुरुआत हो चुकी है। नेशनल डिजिटल हेल्थ मिशन की शुरुआत की गई है। 6 राज्यों में पायलट प्रोजेक्ट के तहत करीब 12 लाख लोगों को डिजिटल हेल्थ आईडी दी जा चुकी है। बाकी राज्यों में इसे जल्द शुरू किया जाएगा। वर्ष 2021–22 के लिए

23123 करोड़ रुपए की एक नई योजना ''भारत कोविड–19 आपात प्रतिक्रिया और स्वास्थ्य प्रणाली तैयारी पैकेज– चरण 2'' को स्वीकृति दे दी गई है। इस योजना का उद्देश्य बाल चिकित्सा देखभाल सहित स्वास्थ्य इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास व उचित परिणामों पर जोर के साथ शुरुआती रोकथाम, पहचान और प्रबंधन के उद्देश्यों से त्वरित प्रतिक्रिया के लिए स्वास्थ्य प्रणाली की तैयारियों में तेजी लाना है।

केंद्र सरकार के पास जन स्वास्थ्य कार्यक्रमों एवं नीतियों को सुचारु रूप से बनाने के लिए बड़े पैमाने पर आधारभूत ढांचा एवं तकनीकी विशेषज्ञ हैं। केन्द्र सरकार ने संवैधानिक दायित्व की अस्पष्टता के बावजूद सार्वजनिक स्वास्थ्य नीतियों का निर्धारण करने में सक्रिय भूमिका निभाई है। हाल ही में केन्द्र सरकार द्वारा एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति तैयार की गई है। इससे और 13वें स्वास्थ्य संबंधी कॉमन रिव्यू मिशन के निष्कर्षों से यह साफ जाहिर हुआ है कि बड़े शहरों एवं जिला अस्पतालों में तो स्वास्थ्य ढांचा एवं स्वास्थ्य सुविधाएं काफी अच्छी हैं, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में इन सबका बहुत अभाव है। इसीलिए यह अनुशंसा की गई कि ग्रामीण स्वास्थ्य ढांचे को सुदृढ़ करने के लिए संभावनाएं विकसित की जाएं। 15वें वित्त आयोग को सलाह देने के लिए गठित स्वास्थ्य पर एक उच्च स्तरीय समिति ने केंद्र और राज्यों के बीच अधिकारों को संतुलित करने के लिए जन स्वास्थ्य को राज्य सूची से समवर्ती सूची में करने का सुझाव दिया था। यह सुझाव इस मकसद से दिया गया कि राज्य केंद्र की स्वास्थ्य नीति एवं राष्ट्रीय कार्यक्रमों को पूरी तरह लागू करने के लिए प्रतिबद्ध हों। इसके साथ ही ऐसे तरीके अपनाएं जाने चाहिए, जिससे राज्यों की स्वायत्तता भी बनी रहे।

25 मार्च 2020 को जब पहली बार लॉकडाउन लगा तो अगले ही दिन 26 मार्च 2020 को 1.75 लाख करोड़ रूपए के विशेष पैकेज का एलान किया गया जिसके तहत 80 करोड़ लोगों को 5 किलो अनाज, दाल, 20 करोड़ महिलाओं के जनधन खाते में 500–500 रु., 8 करोड़ घरों में मुफ्त सिलेंडर, 3 करोड़ वृद्ध, दिव्यांग, विधवाओं को 1000 रु. की मासिक पेंशन, श्रमिकों को घरों तक पहुंचाने की व्यवस्था और सभी राज्यों को प्रवासियों की देखभाल के लिए 11 हजार करोड़ रूपए की राशि जारी की थी। कोरोना की दूसरी लहर की चुनौतियों के बीच 23 अप्रैल 2021 को केन्द्र सरकार द्वारा घोषित की गई प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत 80 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को प्रत्येक महीने पांच किलो प्रति व्यक्ति के हिसाब से अनाज मुफ्त दिया जा रहा है। यह अनाज राशन प्रणाली के तहत हर महीने प्राप्त होने वाले 35 किलो अनाज प्रति परिवार से अलग है। इस कार्यक्रम को कम से कम इस साल के अंत तक जारी रखने की जरूरत है। यह सच है कि कोरोना काल में लोगों की आय में गिरावट आई है लेकिन सरकारी राहत से संकट के सबसे भयानक रूपों से बचाव हुआ है। केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री श्री गिरिराज सिंह का कहना है कि मनरेगा के माध्यम से स्थायी निर्माण को प्राथमिकता दी जा रही है। कोरोना संक्रमण के चलते शहरों में काम नहीं मिलने और पलायन कर गांव पहुंचे ग्रामीण मजदूरों को काम की जरूरत है जिसके लिए मनरेगा वरदान साबित हुई है। अगर हमारी नीतियां लोगों की सिमटती आमदनी और जाते रोजगार को वापस पूर्वस्थिति पर बहाल करने में कामयाब रहती हैं तो निःसंदेह अर्थव्यवस्था भी पटरी पर आती नजर आएगी।

भारत ने कोरोना वैक्सीन ईजाद की तो अपने देश के साथ–साथ दुनिया को भी सहारा दिया। कोरोना संक्रमण पर लगाम लगाने वाली वैक्सीन ईजाद करके भारत ने सिद्ध कर दिया है कि मानव जाति की सेवा के लिए वह सदैव प्रतिबद्ध है। 16 जनवरी 2021 को प्रधानमंत्री ने दुनिया के सबसे बड़े टीकाकरण कार्यक्रम की शुरुआत की थी। यह दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे तेज गति से चलने वाला टीकाकरण कार्यक्रम है। पहले टीका भारत आने में कई साल लग जाते थे। देश में जापानी इंसेफेलाइटिस वैक्सीन आने में वर्षों लग गए थे। इसी तरह, पोलियो और टिटनेस की वैक्सीन दुनिया में आने के कई साल बाद भारत आ पाई थी। विदेश में टीके का काम पूरा हो जाता था, तब भी हमारे देश में टीके का काम शुरू भी नहीं हो पाता था। इस बार दुनिया आश्चर्यचकित रह गई कि जो भारत वैक्सीन के लिए दुनिया के अन्य देशों पर आश्रित रहा करता था, उसने कैसे न केवल विश्वस्तरीय वैक्सीन विकसित की, बल्कि इस कार्यक्रम को देश में सफलतापूर्वक लागू भी किया तथा संकट के समय दुनिया के अन्य देशों की मदद भी की। 'वैक्सीन मैत्री' के तहत दुनिया के 95 देशों को 6 करोड़ से ज्यादा डोज दी जा चुकी है। दुनिया के देशों को कोराना काल में दवाइयों और अन्य जरूरत की चीजों की आपूर्ति की गई जिसके लिए कुछ देशों ने भारत को हनुमान की भी उपाधि दी। यदि सब कुछ ठीक रहा तो दिसंबर तक सभी देशवासियों को कोरोना वैक्सीन लग लाएगी। हमारी वैक्सीन निर्माण की क्षमता बाजी पलटने वाली साबित हो सकती है। यह भविष्य की महामारियों में दुनिया के लिए भरपूर आपूर्ति की गारंटी के तौर पर काम कर सकती है।

विश्व की जनसंख्या का छठवां हिस्सा भारत में बसता है। यहां सभी को बुनियादी स्वास्थ्य, साफ पानी और सैनिटेशन की सुविधा प्रदान करना एक बड़ी चुनौती है। स्वास्थ्य और कल्याण का संबंध सीधे तौर पर पर्याप्त जल आपूर्ति और फंक्शनल सैनिटेशन प्रणालियों से है। सरकार ने जल और स्वच्छता तक सभी की पहुंच पर ध्यान केंद्रित किया है। स्वच्छ भारत अभियान (क्लीन इंडिया मिशन) की शुरुआत से ग्रामीण क्षेत्रों में एक करोड़ 20 लाख से अधिक शौचालयों का निर्माण किया जा चुका है। केन्द्र सरकार ने स्वच्छ भारत कार्यक्रम के जरिए खुले में शौच को समाप्त करने के लिए व्यापक संसाधनों का निवेश किया है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत बने शौचालयों के कारण लगभग 55 करोड़ लोगों ने खुले में शौच करना बंद कर दिया है।

भारत सरकार कुपोषण को दूर करने के लिए 8 मार्च 2018 से चरणबद्ध पोषण अभियान चला रही है। पोषण अभियान के अंतर्गत यथाशीघ्र कुपोषण का स्तर घटाने और कुपोषण में कमी की दर तेज करने का लक्ष्य रखा गया है। तीन साल तक चलने वाली इस योजना का कुल बजट 9046 करोड़ रुपये है। इसमें सभी मंत्रालय मिलकर कुपोषण दूर करने के लिए काम करते हैं। 22 राज्यों में 50 से अधिक परियोजनाएं शुरू की गई हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मानक के अनुसार प्रति 1000 लोगों पर 1 डॉक्टर होना चाहिए। इकॉनमिक सर्वे के अनुसार देश में प्रति 1456 लोगों पर 1 डॉक्टर है। इस अनुपात को बेहतर बनाने का कार्य जारी है। भारत धीरे–धीरे यह अनुपात हासिल करने की ओर बढ़ रहा है।

बेशक केन्द्र सरकार ने अपने नागरिकों के समूचे कल्याण के लिए अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है। राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 स्पष्ट रूप से, स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार और सार्वभौमिक स्वास्थ्य को हासिल करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता को व्यक्त करती है। मिशन के लक्ष्यों में रोगों के समयबद्ध उन्मूलन, समय से पहले और रोकी जा सकने वाली मृत्यु दर को कम करना, स्वास्थ्य प्रणालियों और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार शामिल हैं। यह जानना सुखद है कि स्वतंत्रता के बाद से भारत की जीवन प्रत्याशा भी दोगुनी हो गई है। वर्ष 1947 में यह जहां 33 वर्ष थी, वहीं अब यह बढ़कर 68 वर्ष हो गई है।

अनेक उपलब्धियों के बावजूद कई चुनौतियां शेष हैं। आज विश्व, मानव जाति के ज्ञात इतिहास की सबसे व्यापक त्रासदी का सामना कोरोना महामारी के रूप में कर रहा है। भारत के लिए चुनौती और बड़ी थी, क्योंकि यहां विशाल जनसंख्या है और अपेक्षाकृत उपयुक्त स्वास्थ्य संरचना का अभाव था। स्वास्थ्य सुविधाएं व मूलभूत ढांचा तो तत्काल नहीं बन सकता, क्योंकि इसमें दशकों लगते हैं। मोदी सरकार ने आने के बाद अनेक मेडिकल कॉलेज, एम्स खोले, मेडिकल की सीटें बढ़ाईं, पर परिणाम आने वाले वर्षों में दिखेंगे। सरकारी संसाधन कोविड–19 से निपटने में लगे हैं। ऐसे में प्रत्येक नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि हम कोरोना से संबंधित सभी दिशानिर्देशों का पालन करें और अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग–सतर्क रहें तो अवश्य ही स्वस्थ भारत का संकल्प पूरा हो सकता है। कोरोना वायरस संक्रामक बीमारी जरूर है, लेकिन विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार संक्रमितों में से 85 प्रतिशत लोग होम आइसोलेशन में ही ठीक हो जाते हैं। अस्पताल में भर्ती होने वाले 15 प्रतिशत लोगों में से 10 प्रतिशत से भी कम लोगों को ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है। इसलिए जरूरत है तो सही जानकारी की। डॉक्टर के कहे अनुसार चलेंगे तो आसानी से ठीक हो जाएंगे।

कोरोना वायरस ने दुनिया के हरेक इंसान की आंखों से आंसू निकलवा दिए। महामारियों से हमारा संपर्क हर काल में होता रहा है, पर लोग दुख देने वाली स्मृतियों को भूल जाना चाहते हैं। जिंदगी खुशियां मनाने के लिए है न कि दुख की घड़ियों को याद रखने के लिए। मनुष्य की जिजीविषा के सामने कोई भी महामारी टिक नहीं सकती। इसलिए ही तो मानव तमाम अवरोधों के बावजूद आगे बढ़ता रहा है। अब कोरोना का भी नाश होगा। दुनिया फिर से पहले की तरह अपनी गति से चलेगी।

कोरोना जैसी संक्रामक बीमारी से जीतने के लिए आत्मबल जरूरी है। खुद पर भरोसा रखें। सावधानी ही बचाव है इसलिए दो गज की दूरी रखें, मास्क लगाएं और टीकाकरण करवाएं। वैक्सीन की दोनों डोज लेने वाले भले ही संक्रमण से पूरी तरह सुरक्षित न हों लेकिन यह तय है कि उनमें गंभीर लक्षणों की मात्रा काफी कम हो जाती है। इसके कारण वेंटिलेटर में भर्ती होने वाले मरीज आक्सीजन बेड और आक्सीजन बेड तक पहुंचने वाले घर पर ही स्वस्थ हो सकते हैं। अध्ययनों के अनुसार दो डोज लेने वाले मात्र 10 प्रतिशत लोग ही कोरोना संक्रमित हो सकते हैं, इनमें से मात्र तीन प्रतिशत मरीजों को ही अस्पताल में भर्ती कराना पड़ता है। इनमें भी महज 0.4 प्रतिशत की ही मृत्यु होने की आशंका होती है। ऐसे में खुद को कोरोना संक्रमण से सुरक्षित रखने के लिए समय पर दोनों डोज जरूर लें। कोरोना वायरस का कोई भी वैरिएंट हो वह प्रवेश नाक व मुंह से ही करता है। यदि वातावरण और नाक–मुंह के बीच एक परत हो तो कोई भी वैरिएंट हो उससे हम सुरक्षित रह सकते हैं। नाक तथा मुंह को ढककर रखने से कोरोना संक्रमण के साथ ही धूल, धुआं और अन्य कई संक्रमण से भी सुरक्षा मिलती है। इंसानों ने अपनी आदतें बदलकर कई महामारियों को हराया है, कोविड–19 के लिए भी यह जरूरी है। सभी मनुष्य प्रकृति और परिस्थिति के अनुसार जीवनशैली में परिवर्तन लाते हैं। कोरोना से बचाव के लिए शारीरिक दूरी अपेक्षित थी। शिष्टाचार में हाथ मिलाने से भी बचने का आग्रह किया गया। भारतीय जीवनशैली में इसका विकल्प नमस्कार है। सभी संक्रामक रोगों में दूरी बनाए रखने के फायदे हैं। सरकार ने लॉकडाउन में कुछ ढील दी है, इसका मतलब यह नहीं कि हम सबसे मिलने निकल पड़ें, उतना ही मिले–जुलें जितना जीने के लिए बहुत जरूरी हो। अमेरिका–ब्रिटेन के बाद देश के दक्षिणी हिस्से में कोरोना संक्रमण के मामले बढ़ने लगे हैं। कुछ विशेषज्ञ तीसरे लहर की आशंका जताते हुए नवंबर–दिसंबर तक इसके चरम पर पहुंचने की बात कर रहे हैं तो वहीं सरकार इलाज की तैयारियों के साथ टीकाकरण का महाअभियान चला रही है। ऐसे में हमारी भी जिम्मेदारी है कि कोरोना के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए इसे मात देने के लिए तैयार रहें। उम्मीद है कि टीकाकरण तथा बचाव के अन्य पहलों के कारण कोरोना का रूप सामान्य सर्दी–जुकाम जैसा रह जाएगा। फिलहाल ऑक्सीजन आपूर्ति को बढ़ाने और उन इलाकों पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है, जहां कोरोना का खतरा अधिक है।

प्रमुख राष्ट्रीय प्रतीकः तिरंगा

गीता अरोड़ा*

वर्तमान में दुनियाभर में 200 से अधिक देश हैं और उनकी पहचान के सबसे प्रमुख माध्यम उनके राष्ट्रीय प्रतीक होते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि राष्ट्रीय प्रतीक किसी भी देश की राष्ट्रीय पहचान का आधार होते हैं। इनमें एक प्रमुख प्रतीक है 'ध्वज', यह किसी भी देश की आजादी और संप्रभुता का प्रतीक होता है। भारत का राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' भारत राष्ट्र के साथ–साथ स्वतंत्रता के लिए भारत के लंबे संघर्ष का भी प्रतिनिधित्व करता है। आज जब देशभर में स्वतंत्रता के 75वें वर्ष को 'आजादी का अमृत महोत्सव' के तौर पर बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है, देश के असंख्य अमर स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए प्रस्तुत है देश के एक प्रमुख राष्ट्रीय प्रतीक और देश की आन–बान–शान के प्रतीक राष्ट्रीय ध्वज 'तिरंगा' के संबंध में बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने वर्ष 1931 में देश के झण्डे 'तिरंगा' (चरखा के साथ केसरिया, सफ़ेद और हरे रंग का संगम) का चयन किया था। आजादी में इस तिरंगे ने अपना महत्वपूर्ण रोल अदा किया था। तिरंगा को 22 जुलाई 1947 को संविधान सभा ने भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के रूप में अपनाया। स्वतंत्रता मिलने के बाद इसके रंग और उनका महत्व बना रहा। केवल ध्वज में चरखे के स्थान पर सम्राट अशोक के धर्म चक्र को शामिल किया गया था। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का तिरंगा अंततः स्वतंत्र भारत का तिरंगा 'राष्ट्रीय ध्वज' बन गया।

15 अगस्त और 26 जनवरी के दिन देश के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण दिन हैं। दोनों दिन धूमधाम से देश की राजधानी नई दिल्ली के साथ–साथ देश के सभी प्रांतों और विदेश में भी राष्ट्रीय ध्वज फहराते हुए अनेक सार्वजनिक समारोह आयोजित किए जाते हैं, परंतु दोनों दिन राष्ट्रीय

* *आशुलिपिक ग्रेड – I, वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, सैक्टर–24, नौएडा*

ध्वज को फहराये जाने के संबंध में अंतर है। 15 अगस्त के दिन देश को आजादी मिली थी। 1947 में इसी दिन ब्रिटिश झंडे को उतारकर भारतीय ध्वज को ऊपर चढ़ाया गया और फहराया गया था। झंडे को नीचे से ऊपर ले जाकर फहराने की इस प्रक्रिया को ध्वजारोहण (Flag Hoisting) कहते हैं। इसलिए 15 अगस्त को ध्वजारोहण किया जाता है। वहीं, 26 जनवरी (1950) को हमारा संविधान लागू हुआ था। इसलिए उस दिन पहले से ऊपर बंधे झंडे को केवल फहराया (Flag Unfurling) जाता है। 15 अगस्त के दिन माननीय प्रधानमंत्री जी ध्वजारोहण करते हैं तो 26 जनवरी को माननीय राष्ट्रपति जी झंडा फहराते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि प्रधानमंत्री देश के राजनीतिक प्रमुख होते हैं, जबकि राष्ट्रपति संवैधानिक प्रमुख होते हैं। जैसा कि विदित है कि भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ था, इसलिए गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रपति झंडा फहराते हैं।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला,
वीरों को हर्षाने वाला, मातृभूमि का तन–मन सारा।।
झंडा...।

स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर बढ़े जोश क्षण–क्षण में,
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जाए भय संकट सारा।।
झंडा...।

इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय,
बोलें भारत माता की जय, स्वतंत्रता हो ध्येय हमारा।।
झंडा...।

आओ! प्यारे वीरो, आओ, देश–धर्म पर बलि–बलि जाओ,
एक साथ सब मिलकर गाओ, प्यारा भारत देश हमारा।।
झंडा...।

इसकी शान न जाने पाए, चाहे जान भले ही जाए,
विश्व–विजय करके दिखलाएं, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।।
झंडा...।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा।

उपरोक्त सुविख्यात झंडा गीत की रचना करने वाले श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' कानपुर में नरवल के रहने वाले थे। उनका जन्म 16 सितंबर 1893 को वैश्य परिवार में हुआ था। गरीबी में भी उन्होंने उच्च शिक्षा हासिल की थी। उनमें देशभक्ति का अटूट जज्बा था, जिसे वह प्रायः अपनी ओजस्वी राष्ट्रीय कविताओं में व्यक्त करते थे। वह आजादी के प्रति आम जनता को जागृत करने के लिए 'सचिव' नाम का एक अखबार भी निकालते थे।

वर्ष 1931 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा देश के झंडे 'तिरंगा' (चरखा के साथ केसरिया, सफ़ेद और हरे रंग का संगम) का चयन कर लिए जाने के बाद एक अलग "झंडा गीत" की जरूरत महसूस की जा रही थी। गणेश शंकर 'विद्यार्थी', श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' जी के काव्य–कौशल के कायल थे। विद्यार्थी जी ने पार्षद जी से झंडा गीत लिखने का अनुरोध किया। पार्षद जी कई दिनों तक कोशिश करते रहे, पर वह संतोषजनक झंडा गीत नहीं लिख पाए। जब विद्यार्थी जी ने पार्षद जी से साफ–साफ कह दिया कि उन्हें हर हाल में कल सुबह तक 'झंडा गीत' चाहिए, तो वह रात में कागज–कलम लेकर जम गये। आधी रात तक उन्होंने झंडे पर एक नया गीत तो लिख डाला, लेकिन वह खुद उन्हें जमा नहीं। निराश हो कर रात दो बजे जब वह सोने के लिए लेटे, अचानक उनके भीतर नये भाव उमड़ने लगे। वह बिस्तर से उठ कर नया गीत लिखने बैठ गये। पार्षद जी को लगा जैसे उनकी कलम अपने आप चल रही हो और 'भारत माता' उन से वह गीत लिखा रही हो। यह गीत था–'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊँचा रहे हमारा।' गीत लिख कर उन्हें बहुत सन्तोष मिला। सुबह होते ही पार्षद जी ने यह गीत 'विद्यार्थी' जी को भेज दिया, जो उन्हें बहुत पसंद आया। इस गीत को 1938 में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की अध्यक्षता में हुए कांग्रेस के अधिवेशन में देश के 'झंडा गीत' के तौर पर स्वीकार कर लिया गया। यह ऐतिहासिक अधिवेशन हरिपुरा में हुआ था। नेताजी ने झंडारोहण किया और वहाँ मौजूद करीब पाँच हजार लोगों ने श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' द्वारा रचे झंडा गीत को एक सुर में गाया था।

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।
पुरूषोत्तम दास टंडन

गरीबी, कोरोनाकाल और सरकारी उपाय

बीरेंद्र सिंह रावत*

जनवरी 2021 में चीन के बुहान शहर से शुरु हुए कोरोना वायरस के संक्रमण ने धीरे–धीरे पूरे विश्व को अपने आगोश में ले लिया और इसने गरीब एवं अल्पविकसित देशों के साथ–साथ विकासशील एवं विकसित देशों में अपनी विनाशलीला खूब मचाई और अभी निकट भविष्य में भी इससे राहत मिलने की संभावना बहुत कम नजर आ रही है। कोई भी देश कोरोना संक्रमण के प्रकोप से नहीं बच सका। समय बीतने के साथ ही कोरोना वायरस के एक से बढ़कर एक कई घातक स्वरूप (वैरिएंट) जैसे कि अल्फा (बी.1.1.7), बीटा (बी.1.351), गामा (पी.1), डेल्टा (बी.1.617.2), डेल्टा प्लस (बी.1.617.2.1), लांब्डा (सी.37), कप्पा (बी.1.617.1) सामने आ रहे हैं और दुनियाभर के विभिन्न देशों में तबाही मचा रहे हैं। कोरोना महामारी की एक लहर से उबरने पर जैसे ही कोई देश अपनी अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने हेतु प्रयास प्रारंभ करता है कि वहां इसकी दूसरी लहर शुरु हो जाती है। पिछले डेढ़ साल में यह महामारी लगभग हरेक देश में दो–दो बार अपना रौद्र रूप दिखा चुकी है और अनेक देशों में तो इसकी तीसरी लहर भी शुरु हो चुकी है। जैसा कि विभिन्न देशों के विशेषज्ञों द्वारा अंदेशा जताया गया है, यह वायरस प्राकृतिक न होकर मानवनिर्मित है तभी तो यह जल्दी–जल्दी एक नया स्वरूप धारण कर लेता है और समस्त विश्व को संभलने का मौका नहीं दे रहा है। पिछले वर्ष विश्व के अनेक देशों ने अपनी–अपनी तरह से कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने के उपाय किए। हमारे देश में भी केंद्र सरकार ने कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने के उद्देश्य से और देश के सभी नागरिकों के जान की चिंता करते हुए 'जान है तो जहान है' के मंत्र के साथ 24 मार्च 2020 से 21 दिन की संपूर्ण तालाबंदी (लॉकडाउन) को लागू किया गया और फिर धीरे–धीरे यह लॉकडाउन 31 मई 2020 तक जारी रहा। कोरोना की वजह से पूरा देश थम–सा गया। कोरोनाकाल में लाखों लोगों की नौकरियां चली गईं और जिनकी बच गई, वहां सैलरी में कटौती हुई। कम आय वाले और रोजाना कमाने–खाने वाले लोगों के सामने रोजी–रोटी का संकट पैदा हो गया। लॉकडाउन से उपजे वित्तीय संकट (आर्थिक मंदी) ने भारतीय मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग और गरीबी की रेखा के नीचे के लोगों की कमर तोड़ दी। सबसे अधिक परेशानियों का सामना अगर किसी एक वर्ग को करना पड़ा, तो वह वर्ग है असंगठित क्षेत्र में काम करने वाला मजदूर वर्ग।

हमारे समाज का हमेशा से ही यह एक चिंताजनक पहलू रहा है कि दैवीय आपदा हो या फिर दंगा–फसाद, आर्थिक मंदी हो या फिर महंगाई की मार, संकट की हर घड़ी में सबसे ज्यादा प्रभावित, भारत के विकास में महती भूमिका निभाने वाला यह वर्ग ही होता है। मजदूर चाहे किसी भी क्षेत्र का हो, आर्थिक कार्यकलापों में उसकी अग्रणी भूमिका होती है। वह सड़कों, पुलों सहित आधारभूत अवसंरचना के निर्माण में भरपूर योगदान देता है। रिक्शॉचालक, सफाई कर्मचारी, बढ़ई, लोहार, हस्तशिल्पी, दर्जी, नाई, पशुपालक आदि भी वास्तव में मजदूर ही होते हैं। विभिन्न उद्योगों जैसे कि सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, हथकरघा उद्योग, लोहा एवं इस्पात उद्योग, सीमेंट उद्योग आदि में मजदूरों की भागीदारी अपरिहार्य होती है। वह ईंट भट्टों, खेतों में काम करता है और साथ ही तालाबों, कुओं, नहरों और झीलों की खुदाई में उसके श्रम का बहुत इस्तेमाल होता है। परंतु चिंताजनक बात यह है कि यह वर्ग अपने शारीरिक श्रम के बदले इतना भी नहीं

* *वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

कमा पाता है कि अपने परिवार की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के बाद कुछ पूंजी भविष्य की आवश्यकताओं के लिए बचा सके। स्वास्थ्य का यह खतरा समाज के सबसे गरीब तबके के लिए आर्थिक खतरा भी बन गया। इस बीच, केंद्र सरकार ने मार्च 2021 में 1.70 लाख करोड़ रुपए का प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज जारी किया। परंतु मजदूर वर्ग के लिए तो लॉकडाउन किसी गंभीर आपादा से कम न था और लॉकडाउन की सबसे भयावाह तस्वीरें शायद वो थीं, जब बाहरी मजदूर किसी न किसी तरह से अपने–अपने घर लौटने की कोशिश कर रहे थे। 14 सितंबर 2020 को संसद में प्रवासी मजदूरों से संबंधित एक प्रश्न के जवाब में श्रम और रोजगार मंत्रालय ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान लगभग एक करोड़ बाहरी मजदूरों को अपने गृह राज्यों को लौटना पड़ा था और इनमें से 63.07 लाख लोगों को सरकार ने घर तक पहुंचाया था। इस प्रकार, लगभग 37 लाख प्रवासी मजूदरों ने तमाम तरह की परेशानियों को झेलते हुए पैदल चलकर, साइकिल, साइकिल रिक्शॉ, हाथ–ठेला चलाकर अथवा प्राईवेट बसों से अपने गंतव्य स्थान तक की दूरी तय की। सैकड़ों मजदूर पांच–पांच सौ किमी से भी ज्यादा पैदल चलकर अपने घरों को लौटे। बिहार एवं देश की एक बहादुर बेटी ज्योति कुमारी अपने अस्वस्थ पिता श्री मोहन पासवान को साइकिल पर बिठाकर रोजाना 100 से 150 किलोमीटर साइकिल चलाते हुए एक हजार किमी से ज्यादा (लगभग 1200 किमी) की दूरी आठ दिन में तय करके गुरुग्राम से बिहार के दरभंगा पहुंची थी। ऐसे ही अनेकों मामले देखने को मिले जब मजदूर रिक्शॉ चलाकर, एक–दूसरे की मदद करते हुए गिरते–पड़ते हुए अपने गांव पहुंचे। परंतु सैकड़ों अभागे मजदूर अनेक दुर्घटनाओं का शिकार हुए या फिर भूख–प्यास, थकान अथवा अन्य कारणों से रास्ते में ही अपने जीवन से हाथ धो बैठे। कोरोनाकाल में अपने घरों को लौटने वाले ये सब प्रवासी बंधु असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं। ये वे मजदूर हैं जो या तो ठेके पर काम करते हैं या फिर रोज की दिहाड़ी से अपने परिवार का पेट भरते हैं अथवा ठेला–रेहड़ी लगाकर, रिक्शॉ चलाकर अपनी आजीविका कमाते हैं।

2019 में जारी हुए आर्थिक सर्वेक्षण की रिपोर्ट के अनुसार देश के कुल कार्यबल में से लगभग 93 फीसदी हिस्सा असंगठित क्षेत्र का है। देश की अर्थव्यवस्था को चलाने में इस असंगठित क्षेत्र का बड़ा हाथ है। इसके बावजूद इसकी रक्षा के लिए ठोस प्रावधान नहीं हैं। आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण 2017–18 की रिपोर्ट, जो कि पिछले साल जारी हुई थी, में कहा गया है कि अनौपचारिक सैक्टर (गैर कृषिगत) में नियमित/वेतनभोगी कर्मचारियों में भी 71 प्रतिशत ऐसे हैं, जिनके पास लिखित में जॉब कॉन्ट्रैक्ट नहीं है। 54.2 फीसदी ऐसे हैं, जिन्हें सवेतन छुट्टी नहीं मिलती है। इतना ही नहीं, इसमें से 49.6 फीसदी किसी भी सामाजिक सुरक्षा योजना की योग्यता नहीं रखते। स्पष्ट है असंगठित क्षेत्र का दायरा न केवल व्यापक है बल्कि पूरी तरह असुरक्षित भी है।

यही नहीं, अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी की एक रिपोर्ट ''स्टेट ऑफ वर्किंग इंडिया 2021 – वन इयर ऑफ कोविड–19'' के अनुसार कोरोना महामारी ने अनौपचारिकता को और बढ़ा दिया है तथा अधिकांश श्रमिकों की कमाई में भारी गिरावट आई है जिसके परिणामस्वरूप गरीबी में अचानक वृद्धि हुई है। महिलाएं और युवा श्रमिक सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। संकट से प्रभावित कई परिवारों के लिए भोजन हासिल करना भी मुश्किल हो गया। इसका मुकाबला करने के लिए उनको उधार लेना पड़ा या परिसंपत्तियों को बेचने के लिए मजबूर होना पड़ा। सरकारी राहत ने संकट के सबसे गंभीर रूपों से बचने में मदद की, लेकिन समर्थन उपाय काफी साबित नहीं हुए। कोरोना महामारी की वजह से लगाए गए लॉकडाउन और लोगों के स्वास्थ्य एवं आजीविका पर पड़े इसके असर से पिछले एक साल में करीब 23 करोड़ लोग गरीबी में धकेल दिए गए। रिपोर्ट में कहा गया है कि ग्रामीण गरीबी दर में 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और शहरी गरीबी दर में लगभग 20 अंकों की वृद्धि हुई है। यह नोट किया गया कि यद्यपि लोगों की आय हर जगह कम हुई है, फिर भी महामारी का असर गरीब घरों पर सबसे अधिक पड़ा है। इसके अलावा, पिछले साल लॉकडाउन के दौरान देश भर में अप्रैल–मई 2020 के दौरान लगभग 10 करोड़ लोगों की नौकरियां चली गईं, उनमें से अधिकांश जून 2020 तक काम पर वापस आ गए थे, लेकिन लगभग 1.5 करोड़ श्रमिक वर्ष 2020 के अंत तक काम से बाहर रहे। रिपोर्ट के अनुसार आय में भी गिरावट दर्ज की गई। अक्टूबर 2020 में प्रति व्यक्ति औसत मासिक घरेलू आय 4,979 रुपये रही जो जनवरी 2020 (5,989 रुपये) की तुलना में लगभग 20 प्रतिशत कम रही। अमेरिका के प्यू रिसर्च सेंटर (Pew Research Center) के अनुसार, वित्तीय संकट की वजह से बीते साल प्रतिदिन 700 रुपये से 1500 रुपये के बीच कमाने वाले तकरीबन 3.2 करोड़ भारतीय, मध्यम वर्ग से बाहर हो गए और देश में गरीबों की संख्या में 7.5 करोड़ लोग और जुड़ गए। महंगाई की वजह से भारत का तकरीबन हर वर्ग (उच्च और उच्च–मध्यम वर्ग को छोड़कर) बुरे हाल से गुजर रहा है। लॉकडाउन के व्यापक असर की वजह से मध्यम वर्ग के छोटे व्यापारी कर्ज में लदते जा रहे हैं और नौकरीपेशा लोगों का भी कमोबेश यही हाल है। निम्न आय वर्ग के लोगों और गरीबों की स्थिति और भी बुरी हो गई।

केंद्रीय वित्त और कॉरपोरेट कार्य मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने 29 जनवरी 2021 को संसद में आर्थिक समीक्षा 2020–21 पेश करते हुए बताया कि सरकार ने मार्च 2020 में प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना (पीएमजीकेवाई) के तहत 1.70 लाख करोड़ रुपये के पहले राहत पैकेज की घोषणा की थी और मई 2020 में आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत 20 लाख करोड़ रुपये के व्यापक प्रोत्साहन एवं राहत पैकेज की भी घोषणा की गई थी। समीक्षा में बताया गया है कि मार्च 2020 में घोषित पीएमजीकेवाई योजना के तहत दो किस्तों में 1000 रुपये का नकद हस्तांतरण किया गया और राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (एनएसएपी) के तहत मौजूदा बुजुर्गों, विधवाओं और दिव्यांग लाभार्थियों को पांच–पांच सौ रुपये का भुगतान किया गया। 2.82 करोड़ एनएसएपी लाभार्थियों के लिए 2814.50 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई थी। पीएम जन–धन योजना में महिला लाभार्थियों के बैंक खातों में तीन महीनों के लिए पांच–पांच सौ रुपये की राशि डिजिटल माध्यम से हस्तांतरित की गई, यह राशि 20.64 करोड़ रुपये की रही। लगभग 8 करोड़ परिवारों को तीन महीनों के लिए मुफ्त गैस सिलेंडर बांटे गए। 63 लाख महिला स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के लिए बिना गिरवी के ऋण की सीमा 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख कर दी गई, जिससे 6.85 करोड़ परिवारों को मदद मिलेगी। 2020–21 के दौरान 21 जनवरी 2021 तक कुल 311.92 करोड़ मानव–दिवसों का सृजन किया गया और कुल 65.09 लाख व्यक्तिगत लाभार्थियों ने काम किया तथा 3.28 लाख जल संरक्षण से संबंधित कार्य पूरे किए गए। महात्मा गांधी नरेगा के तहत 01 अप्रैल 2020 से वेतन 20 रुपये बढ़ाकर 182 रुपये से 202 रुपये कर दिया गया, जिससे कामगारों को 2000 रुपये प्रति वर्ष की अतिरिक्त राशि उपलब्ध होगी। समीक्षा में यह दर्शाया गया है कि कोविड–19 के कारण स्वास्थ्य क्षेत्र में महामारी के खिलाफ लड़ाई में विशेष जरूरतों के लिए आबंटन की बौछार हुई है। लॉकडाउन, सामाजिक दूरी, यात्रा संबंधी परामर्श, हाथ धोने की प्रक्रिया, मास्क पहनने जैसे शुरुआती उपायों से इस बीमारी को फैलने से रोका गया। देश ने आवश्यक दवाओं, हैंड सेनेटाइजर, मास्क, पीपीई किट, वेंटिलेटरों, कोविड–19 परीक्षण और उपचार सुविधाओं में आत्मनिर्भरता भी हासिल की है। दो स्वदेश निर्मित वैक्सीनों के माध्यम से 16 जनवरी 2021 से दुनिया का सबसे बड़ा कोविड–19 टीकाकरण अभियान शुरू किया गया।

कोरोना वायरस के फैलाव को रोकने के उद्देश्य से पिछले साल लगाए गए लॉकडाउन के कारण भारत का सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) जून 2020 में 24 फीसदी तक गिर गया था, राजस्व और बचत में गिरावट आई और बेरोजगारी भी बढ़ी। भारत सरकार द्वारा समय–समय पर जारी किए गए विभिन्न राहत पैकेजों और राज्य सरकारों की वित्तीय सहायता तथा लॉकडाउन की छूट से स्थिति में धीरे–धीरे सुधार दिखा। दिसंबर 2020 तक अर्थव्यवस्था के ठीक होने के संकेत थे। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने भी भविष्यवाणी की थी कि भारत 2021 में दोहरे अंकों में वृद्धि दर्ज करेगा। परंतु फरवरी 2021 में शुरु हुई कोरोना की दूसरी लहर ने देश की अर्थव्यस्था को बड़ी चोट पहुंचाई है। इसे रोकने के लिए लगाए गए लॉकडाउन और विभिन्न प्रकार के प्रतिबंधों से अर्थव्यवस्था को 5.4 लाख करोड़ रुपये के नुकसान का अनुमान है। बार्कलेज (ब्रिटेन का बैंक) की रिपोर्ट में यह बात कही गई है। भारतीय स्टेट बैंक की रिपोर्ट में भी लगभग इसी तरह की बात कही गई है। इसमें कहा गया है कि कोरोना की दूसरी लहर से देश की जीडीपी को 4.5 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हो सकता है। यह जीडीपी के 2.4 फीसदी के बराबर होगा। इसके अलावा, भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा हाल ही में किए गए 'उपभोक्ता विश्वास सर्वेक्षण' से यह पता चला कि कोरोना मामलों में वृद्धि के बाद मुद्रास्फीति की दर में भी काफी वृद्धि हुई। एक ओर रोजगार के नुकसान और दूसरी ओर स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं एवं आवश्यक वस्तुओं की बढ़ती कीमतों के कारण गरीब लोगों पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है और वे अत्यधिक गरीबी में जी रहे हैं।

'जान है तो जहान है' के उद्घोष के साथ अपने नागरिकों के हित में मार्च 2020 में भारत सरकार द्वारा पूरे देश में लॉकडाउन लगाया। फिर, अर्थव्यवस्था की चरमराती

हालत और समाज के सबसे गरीब तबके की दुश्वारियों को देखते हुए भारत सरकार ने 'जान भी, और जहान भी' के मंत्र के साथ अनलॉक की प्रक्रिया शुरु की गई। सरकार और आरबीआई, दोनों ने अर्थव्यवस्था एवं वृहत आर्थिक तत्वों को पटरी पर लाने के लिये कदम उठाए। रेलिगेयर ब्रोकिंग लि. के वाइस प्रेसिडेंट (रिसर्च) श्री अजीत मिश्रा ने कहा कि बाजार को जिस चीज से भरोसा मिला, वह था अर्थव्यवस्था को फिर से खोला जाना जिससे कंपनियों में कामकाज शुरू हो पाया। इससे निवेशकों को एक भरोसा जगा कि बाजार में रिकवरी और सुधार बना रहेगा। इसके अलावा अनुकूल वैश्विक बाजार और टीकाकरण अभियान की शुरूआत से भी बाजार को बल मिला। इसी प्रकार, जियोजीत फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार श्री वी. के. विजयकुमार ने कहा कि लॉकडाउन से जुड़ी पाबंदियों में ढील दिये जाने और अर्थव्यवस्था के तेजी से पटरी पर आने के मामले में डेवलपमेंट के साथ शेयर बाजार में तेजी आई। कोविड–19 वैक्सीन की खोज से जो एक भरोसा जगा, उससे बाजार में और तेजी आई। श्री विजयकुमार के मुताबिक, साल 2021–22 का केंद्रीय बजट काफी महत्वपूर्ण रहा और निजीकरण जैसे बड़े सुधारों से बाजार धारणा को बल मिला।

शेयर बाजार ने वित्त वर्ष 2020–21 में कई तरह की बाधाओं के बावजूद निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया। कोविड–19 संकट और अर्थव्यवस्था पर पड़े उसके प्रभाव के बाद भी बीएसई सेंसेक्स में 66 प्रतिशत से ज्यादा की तेजी आई। पीटीआई की खबर के मुताबिक, बाजार विश्लेषकों ने वित्त वर्ष 2020–21 को तेज उतार–चढ़ाव वाला साल करार दिया। गिरावट से उबरते हुए तीस शेयरों पर आधारित बीएसई सेंसेक्स में वित्त वर्ष 2020–21 में 19,540.01 अंक यानी 66.30 प्रतिशत उछाल आया। बीएसई सेंसेक्स 31 मार्च 2020 को 29472.14 अंकों तथा 31 मार्च 2021 को 49509.15 अंकों के साथ बंद हुआ था। तथा बीएसई सेंसेक्स पिछले साल 3 अप्रैल को 27,500.79 अंक के न्यूनतम स्तर तक चला गया था, लेकिन बाद में इसमें तेजी आई और यह 16 फरवरी 2021 को 52,516.76 अंक के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया। शेयर बाजार में तेजी, अनुकूल माहौल एवं बड़ी मात्रा में निवेश मिलने से कोरोना संकटकाल में भी देश के अरबपतियों को काफी फायदा हुआ। यही नहीं, देश में अरबपतियों की कुल संख्या, जो पिछले साल 102 थी, बढ़कर इस साल 140 हो गई और इनकी संयुक्त संपत्ति भी लगभग दोगुनी होकर 596 अरब डॉलर हो गई है।

भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर श्री डी. सुब्बाराव ने कहा है कि कोरोना संक्रमण के दौर में देश में अमीर और गरीब के बीच की खाई बड़ी हुई है। उन्होंने इस बात को लेकर चिंता जताई कि महामारी के दौरान बड़ी संख्या में लोगों की आय घटी और उनका रोजगार छिना है जिससे गरीबों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है, वहीं इस दौरान कुछ अमीरों की संपदा में जबर्दस्त बढ़ोतरी हुई है। उन्होंने कहा, ''यह सैद्धान्तिक रूप से गलत और राजनीतिक दृष्टि से नुकसान वाला है।''

यहां यह बताना अप्रासंगिक नहीं होगा कि भारत में गरीबी का मुख्य कारण बढ़ती जनसंख्या दर है। इससे निरक्षरता, खराब स्वास्थ्य सुविधाएं और वित्तीय संसाधानों की कमी की दर बढ़ती है। इसके अलावा उच्च जनसंख्या दर से प्रति व्यक्ति आय भी प्रभावित होती है और यह घटती है। एक अनुमान के मुताबिक भारत की आबादी सन 2026 तक 150 करोड़ हो सकती है और भारत विश्व का सबसे अधिक आबादी वाला राष्ट्र हो सकता है। भारत की आबादी जिस रफ्तार से बढ़ रही है उस रफ्तार से भारत की अर्थव्यवस्था नहीं बढ़ रही। इसका नतीजा होगा नौकरियों की कमी। यदि नौकरियों की संख्या नहीं बढ़ाई गई तो गरीबों की संख्या बढ़ती जाएगी। बुनियादी वस्तुओं की लगातार बढ़ती कीमतें भी गरीबी का एक प्रमुख कारण हैं। इसके अलावा पूरे दिन मेहनत करने वाले अकुशल कारीगरों की आय भी बहुत कम है। असंगठित क्षेत्र की एक सबसे बड़ी समस्या है कि मालिकों को उनके मजदूरों की कम आय और खराब जीवन शैली की कोई परवाह नहीं है। उनकी चिंता सिर्फ लागत में कटौती और अधिक से अधिक लाभ कमाना है। उपलब्ध नौकरियों की संख्या के मुकाबले नौकरी की तलाश करने वालों की संख्या अधिक होने के कारण कुशल–अकुशल कारीगरों को कम पैसों में काम करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता है।

गरीबी के ऊपर उल्लिखित कारणों के अतिरिक्त भारत में गरीबी के दो और प्रमुख कारण भ्रष्टाचार एवं संसाधनों का असमान वितरण भी हैं। कोरोना संकट के बीच पिछले वर्ष 14 सितंबर से चले संसद के मानसून सत्र के पहले दिन वित्त मंत्रालय ने संसद को बताया कि एक जनवरी 2015 से 31 जनवरी 2019 के बीच विजय माल्या, नीरव मोदी और मेहुल चौकसी समेत 38 लोग देश छोड़कर भाग चुके हैं। इन सभी लोगों के खिलाफ वित्तीय अनियमितता के मामले दर्ज हैं, जिनकी जाँच केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो कर रहा है। इन ज्ञात भगोड़ों के अलावा देश में विभिन्न क्षेत्रों चाहे यह शासन–प्रशासन,

राजनीति, व्यापार, समाज सेवा हो अथवा फिर कोई अन्य क्षेत्र, में कार्यरत और भी न जाने कितने ज्ञात–अज्ञात घोटालेबाज हैं जो देश की अर्थव्यवस्था को अरबों–खरबों रुपये की चपत लगा रहे होंगे। जैसे 2021 में ही सामने आए कुछ प्रमुख मामले इस प्रकार हैं: i) मार्च 2021 में बैतूल, मध्य प्रदेश के एक सरकारी शिक्षक के घर छापे में पांच करोड़ से ज्यादा चल–अचल संपत्ति का खुलासा हुआ जबकि 1998 में नियुक्ति से लेकर तब तक उसे करीब मात्र 38 लाख रुपये वेतन मिला; ii) मई 2021 में भोपाल, मध्य प्रदेश में भारतीय खाद्य निगम के एक क्लर्क के घर छापे में पुलिस को 3.01 करोड रुपये नगद, 387 ग्राम सोना और 600 ग्राम चांदी मिला था; और iii) जून 2021 में काली कमाई का एक मामला तब सामने आया जब नौएडा की सैक्टर–39 कोतवाली पुलिस ने 13 किलो सोना व 57 लाख रुपये के साथ छह चोरों को गिरफ्तार किया था। पकड़े गए चोरों ने पूछताछ में बताया कि उन्होंने करीब 40 किलो सोना और साढ़े 6 करोड़ रुपये ग्रेटर नौएडा की एक सोसायटी के फ्लैट से सितंबर 2020 में चोरी किए थे। परंतु आश्चर्य की बात है कि इतनी बड़ी चोरी होने के बाद भी इसकी रिपोर्ट मालिक ने पुलिस में दर्ज नहीं करवाई थी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह सारी दौलत भ्रष्टाचार करके कमाई गई थी। दूसरे, संसाधन जिस प्रकार मनुष्य के जीवन–यापन के लिए अति आवश्यक हैं, उसी प्रकार जीवन की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। कुछ प्रख्यात विशेषज्ञों द्वारा संसाधन को निम्न प्रकार परिभाषित किया गया है: स्मिथ एवं फिलिप्स – 'भौतिक रूप से संसाधन वातावरण की वे प्रक्रियायें हैं जो मानव के उपयोग में आती हैं।' जेम्स फिशर – 'संसाधन वह कोई भी वस्तु हैं जो मानवीय आवश्यकताओं और इच्छाओं की पूर्ति करती हैं।' जिम्मर मैन के. –'संसाधन पर्यावरण की वे विशेषतायें हैं जो मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति में सक्षम मानी जाती हैं।' संसाधन को विभिन्न आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है यथा i) उत्पत्ति के आधार पर – जैव और अजैव; ii) समाप्यता के आधार पर – नवीकरण योग्य और अनवीकरण योग्य; iii) स्वामित्व के आधार पर – व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय; और iv) विकास के स्तर के आधार पर – संभावी, विकसित भंडार और संचित कोष। यहां हमारा मुख्य फोकस संसाधन के व्यक्तिगत स्वामित्व के आधार पर वितरण पर है। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि बिना संसाधन के विकास संभव नहीं है। लेकिन संसाधनों के विवेकहीन उपभोग एवं अति उपयोग और असमान वितरण से संसाधन का क्षरण होता है और समाज में असमानता उत्पन्न होती है। समाज में इसी प्रवृत्ति को पनपते देख राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने कहा था – 'हमारे पास हर व्यक्ति की आवश्यकता पूर्ति के लिए बहुत कुछ है, लेकिन किसी के लालच की संतुष्टि के लिए नहीं। अर्थात हमारे पेट भरने के लिए बहुत है लेकिन पेटी भरने के लिए नहीं।'

भ्रष्टाचार को रोकने की दिशा में भारत सरकार पूरी ईमानदारी के साथ कार्य कर रही है और प्रवर्तन एजेंसियाँ हर संभव कोशिश कर रही हैं परंतु जब तक दो–चार बड़े घोटालेबाजों को जल्द से जल्द कोई कठोरतम सजा नहीं हो जाती तब तक लोगों के मन में यह संशय बना रहेगा कि क्या पता ये सब भी ऐसे ही न छूट जाएं। और, जैसे कि एक सभ्य समाज में माना जाता है कि हर व्यक्ति को स्वस्थ एवं सभ्य जीवन जीने का अधिकार है, इसलिए भारत सरकार देश से गरीबी को खत्म करने के लिए भी प्रतिबद्ध है। भारत सरकार त्वरित आर्थिक विकास और निम्नलिखित व्यापक सामाजिक सुरक्षा उपायों के माध्यम से गरीबी को इसके सभी रूपों में समाप्त करने के लिये एक व्यापक विकास रणनीति लागू कर रही है: i) राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम: इस कार्यक्रम के तहत कई लक्षित पेंशन योजनाओं के माध्यम से बुजुर्गों सहित विकलांग वर्गों, बच्चों, महिलाओं और विधवाओं को कवर किया जा रहा है; ii) रोजगार सुरक्षा: भारत की ग्रामीण आबादी को 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम' के तहत एक वर्ष में 100 दिन का गारंटीकृत रोजगार प्रदान किया जाता है। मनरेगा योजना के तहत अब तक 136 मिलियन जॉब कार्ड जारी किये जा चुके हैं; iii) आधारभूत सेवाओं तक पहुँच: सभी लोगों की आधारभूत न्यूनतम सेवाओं तक पहुँच सुनिश्चित हो सके इसके लिये निम्नलिखित योजनाओं को प्रारंभ किया गया है: प्रधानमंत्री जन–धन योजना, सभी के लिये आवास योजना, प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना, आयुष्मान भारत; iv) आजीविका और कौशल संबंधी कार्यक्रम: प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना, राष्ट्रीय शिक्षुता कार्यक्रम, एवं राष्ट्रीय ग्रामीण और शहरी आजीविका मिशन। इसके साथ ही हमें यह भी याद रखना होगा कि मानव जीवन की गुणवत्ता बनाये रखने और समावेशी आर्थिक विकास की दिशा में संसाधानों का समाज में न्यायसंगत वितरण बहुत ही आवश्यक है। अतः, इस संबंध में भी सरकार को कुछ प्रासंगिक एवं कल्याणकारी योजनाओं और नीतियों के माध्यम से तत्काल आवश्यक कदम उठाने की जरूरत है।

कोरोना

दिगम्बर सिंह बिष्ट*

कोरोना – कोरोना
इस समय की भयंकर महामारी है कोरोना।
जिसे चीन ने दिया पूरे विश्व को, वो है कोरोना,
पूरा देश लड़ रहा है जिससे, वो है कोरोना।
पूरे विश्व में करोड़ों लोगों को हो चुका है जो,
वो है कोरोना,
लाखों लोगों की मौत हो चुकी है जिससे,
वो है कोरोना।
पूरे विश्व में बेरोजगारी फैल चुकी है जिससे,
वो है कोरोना,
सभी के व्यापार और कारखाने बंद हो गए हैं जिससे,
वो है कोरोना।
पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को हिला के रख दिया है जिसने, वो है कोरोना।।

कोरोना – कोरोना
इस समय की भयंकर महामारी है कोरोना।
सोशल डिस्टेन्सिंग तुम सब करो ना,
हाथों को तुम्हें अपने बार–बार है धोना,
या फिर हाथों को अपने सेनेटाइज तुम करो ना।
छींकते समय रुमाल से मुँह और नाक को तुम ढको ना,
और मास्क का इस्तेमाल हमेशा तुम करो ना।
ऐसा नहीं किया तो हो जाएगा कोरोना।।

कोरोना – कोरोना
इस समय की भयंकर महामारी है कोरोना,
बुखार, खांसी और गले में खराश तुम्हें अगर होना,
या फिर साँस लेने में परेशानी तुम्हें होना,
स्वास्थ्य केंद्र मे जाकर अपना टेस्ट कराओ ना,
नाम है जिसका कोरोना,
ऐसा नहीं किया तो हो जाएगा कोरोना।।

कोरोना – कोरोना
इस समय की भयंकर महामारी है कोरोना।
अगर जरूरी हो तो ही अपने कदमों को बाहर तुम रखो ना,
नहीं तो तुम्हारे संग–संग घर आ जाएगा कोरोना।
बाहर से सामान जो भी घर में तुम लाओ ना,
पहले उसे सेनेटाइज या फिर पानी से है धोना।
ऐसा नहीं किया तो हो जाएगा कोरोना।।

कोरोना – कोरोना
इस समय की भयंकर महामारी है कोरोना,
अगर कोई मर जाए इससे, परिवार वाले हाथ ना लगाए जिसे, वो है कोरोना।
अब तुम समझ जाओ इससे, कि कितनी भयंकर महामारी है कोरोना।।
इससे अगर अपने को तुमने है बचाना।
तो अपनी रोग प्रतिरोधक शक्ति को तुमने है बढ़ाना,
हल्दी वाला दूध, काढ़ा और हरी सब्ज़ियों को तुमने है खाना।
योग और व्यायाम से भी इसको तुमने है हराना,
ऐसा नहीं किया तो हो जाएगा कोरोना।

कोरोना – कोरोना
इस समय की भयंकर महामारी है कोरोना,
अपने आप को घरों मे सुरक्षित तुम रखो ना, और सरकार द्वारा दिशानिर्देशों का पालन तुम करो ना।
ऐसा नहीं किया तो हो जाएगा कोरोना।।
अगर ये सब चीजें तुम करोगे,
तभी तो कोरोना से जंग तुम जीतोगे।

* *एडमिन एसोसिएट, वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, सैक्टर–24, नौएडा*

नवनिर्माण की ओर नया भारत

राजेश कुमार कर्ण*

कुछ वर्षों पहले तक देश की आबादी का एक बड़ा हिस्सा अंतिम पायदान पर ही खड़ा था, लेकिन मोदी सरकार के पिछले सात साल के कार्यकाल में अंतिम पायदान पर खड़ा व्यक्ति न केवल आगे बढ़ा है, बल्कि विकास की मुख्यधारा में भागीदार भी बना है। गरीबों के लिए हितकारी योजनाएं, आत्मनिर्भरता, प्रखर राष्ट्रवाद और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मोदी के नेतृत्व में भारत एक सशक्त पहचान बनाने में सफल रहा है। आज जनधन खातों में 1.30 लाख करोड़ रुपये की राशि जमा है, जिसके खाताधारकों की संख्या 40.05 करोड़ है। हाशिये की इतनी बड़ी आबादी के पास सात साल पहले तक अपना बैंक खाता तक नहीं था। अब वह देश के विकास में सहभागी बन गई है। मकान पहले किसी वंचित आदमी का सपना भर होता था, लेकिन मोदी सरकार के संकल्प के मुताबिक वर्ष 2024 तक सबके पास घर हो जाएगा। लगभग दो करोड़ मकान बन भी चुके हैं। मकान में पीने का स्वच्छ जल हो, इसके लिए जल जीवन मिशन के तहत वर्ष 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण घर में नल का कनेक्शन देने का भी लक्ष्य है। इससे जनता को जल जनित बीमारियों से निजात मिलेगी। गरीबों को मुफ्त गैस सिलेंडर देने के लिए शुरू की गई उज्ज्वला योजना के तहत 8.3 करोड़ परिवारों को लाभ मिला है। बिजली आज बुनियादी जरूरत है। सौभाग्य योजना के तहत सभी घरों में बिजली पहुंचाना सरकार का लक्ष्य है। वन नेशन, वन राशन कार्ड योजना इस वर्ष पूरे देश में लागू हो जाएगी और लाभार्थी कहीं भी राशन ले सकेंगे। आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए आयुष्मान योजना के तहत करीब दस करोड़ परिवारों को पांच लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा का लाभ मिल रहा है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत बने शौचालयों के कारण लगभग 55 करोड़ लोगों ने खुले में शौच करना बंद कर दिया है। लोगों को बिना भेदभाव के सरकारी योजनाओं का लाभ मिल रहा है। इन सफल योजनाओं ने देश की जनता को यह भरोसा दिलाया है कि मोदी सरकार जो कुछ कहती है उसे जमीन पर उतारने में भी सक्षम साबित होती है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है और किसान इसकी रीढ़ हैं। किसानों की भलाई के लिए मोदी सरकार ने वर्ष 2019 में किसान सम्मान निधि योजना आरंभ की। आज 9.5 करोड़ किसानों को तीन किस्तों में सालाना छह हजार रुपये मिलते हैं। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य के अनुसार मोदी सरकार के लिए गरीबी हटाओ नारा नहीं, बल्कि गरीबी से मुक्ति का संकल्प है। किसानों की भलाई के लिए मोदी सरकार ने तीन कृषि कानून भी बनाए हैं। इससे देश में बिचौलिया राज समाप्त होगा। अब वे अपनी फसल देश के किसी भी हिस्से में बेच सकते हैं। किसानों को मंडी से बाहर अपनी उपज बेचने का अधिकार मिला। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) अब लागत की डेढ़ गुनी की गई है। किसानों की फसल को नुकसान न हो, इसके लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत फसलों की बुआई से लेकर कटाई तक बीमा सुरक्षा मिलती है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड भी एक अनूठी पहल है। फल–सब्जियों के परिवहन के लिए किसान रेल सेवा कोरोना काल में शुरू की गई। अब 100 किसान रेल चल रही हैं। ई–नाम प्लेटफार्म से देश के सभी बाजारों तक किसानों की सीधी पहुंच हो गई है। विभिन्न राज्यों में किसानों और खरीददारों के बीच 1.13 लाख करोड़ रुपये से अधिक के लेनदेन की सुविधा इस मंच से अबतक प्रदान की गई है। इससे अभी तक 1 करोड़ 73 लाख से अधिक किसान पंजीकृत हुए हैं। आजादी के बाद सबसे बड़ी मत्स्य संपदा योजना लागू की गई।

वास्तविकता यही है कि मोदी सरकार ने खेती–किसानी की बदहाली दूर करने के लिए कई नवोन्मेषी योजनाएं लागू की हैं। उसने किसानों के खाते में सालाना 6000 रुपये भेजने की पहल की है। पीएम–किसान सम्मान निधि के तहत अब तक 1 लाख 13 हजार करोड़ रुपए से अधिक की राशि किसानों के बैंक खाते में दी जा चुकी है। इसी का परिणाम है कि किसानों की आत्महत्याओं में उल्लेखनीय कमी आई है। साथ ही, इन सब कारणों से फसल वर्ष 2020–2021 से संबंधित तीसरे अग्रिम अनुमान में खाद्यान्न की रिकॉर्ड पैदावार बताई गई है। खाद्यान्न तथा प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के निर्यात बढ़ गए हैं। देश में जहां खाद्यान्न उत्पादन तेजी से बढ़ाने में एमएसपी और विभिन्न कृषि विकास योजनाओं की अहम भूमिका है, वहीं कृषि निर्यात बढ़ने के भी कई कारण उभरकर दिखाई दे रहे हैं। केन्द्र सरकार ने नई कृषि निर्यात नीति के तहत ज्यादा मूल्य और मूल्यवर्धित कृषि निर्यात को बढ़ावा दिया है। सरकार ने निर्यात किए जाने वाले कृषि जिंसों के उत्पादन और घरेलू दाम में उतार–चढ़ाव पर लगाम लगाने के लिए रणनीतिक कदम उठाए हैं। इसके साथ ही राज्यों की कृषि निर्यात में ज्यादा भागीदारी, बुनियादी ढांचे और लॉजिस्टिक में सुधार और नए

* *आशुलिपिक ग्रेड–II, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

कृषि उत्पादों के विकास में शोध एवं विकास गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया है। कृषि निर्यात बढ़ने से देश के कुल निर्यात में वृद्धि होगी। इससे किसानों की आमदनी और ग्रामीण क्षेत्र की समृद्धि बढ़ने के साथ–साथ रोजगार अवसरों में भी वृद्धि होगी। कृषि क्षेत्र तो पिछले साल भी धीमी हुई अर्थव्यवस्था में एक उम्मीद की किरण बना हुआ था और अब भी उम्मीद बड़ी हद तक इस पर है, तो हमें सरकार से किसानों के लिए कुछ ज्यादा करने की अपेक्षा करनी चाहिए।

देश के गोदाम गेहूं–चावल से भरे हैं किंतु खाद्य तेल और दालों का दुनिया में सबसे बड़ा आयातक भी भारत है। खेती–किसानी की इन्हीं विसंगतियों को दूर करने के लिए मोदी सरकार तीन नए कृषि कानून लाई। इनका दूरगामी उद्देश्य गेहूं, धान, गन्ना और कपास की एक–फसली खेती के बजाय पारिस्थितिकीय दशा के अनुरूप विविध फसलों की खेती को बढ़ावा देना है। दलहनी–तिलहनी फसलों के समर्थन मूल्य में भरपूर बढ़ोतरी के पीछे यही दूरगामी सोच है। दलहनी फसलों की खेती के मामले में मोदी सरकार की नीति कामयाब होती दिख रही है, परिणामस्वरूप दशकों बाद भारत दालों के मामले में करीब–करीब आत्मनिर्भर बन चुका है। इससे प्रत्येक वर्ष 15000 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत हो रही है। मोदी सरकार दलहनी फसलों में मिली इस कामयाबी को तिलहनी फसलों के मामले में दोहराने में जुटी है। इसके लिए 11040 करोड़ रुपये राष्ट्रीय खाद्य तेल–पाम आयल मिशन से जहां खाद्य तेलों के आयात पर निर्भरता घटेगी तो दूसरी ओर किसानों की आमदनी भी बढ़ेगी। तिलहनी फसलों को प्रमुखता देने का ही नतीजा है कि इस साल सरसों 4650 रुपये प्रति क्विंटल के समर्थन मूल्य से भी अधिक कीमत– 9000 रुपये प्रति क्विंटल की दर पर कुछ मंडियों में बिका। आगे चलकर यही रणनीति बागवानी फसलों, औषधीय पौधों आदि के मामलों में अपनाई जाएगी ताकि किसानों की आमदनी बढ़े। इसके लिए देश भर में प्रसंस्करण इकाइयां लगाने की योजना है ताकि पौष्टिक आहार, डिब्बाबंद जूस का कारोबार ग्रामीण इलाकों में फैले। इसी प्रकार वर्ष 2016 से शुरू हुई ई–नाम से अब तक 21 राज्यों की 1000 कृषि उपज मंडिया जुड़ चुकी हैं। इसमें और 1000 कृषि उपज मंडियों को जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है।

फल–फूल और सब्जियों की खेती मुख्य रूप से लघु एवं सीमांत किसान करते हैं, मगर शीघ्र नष्ट होने के कारण वे अपनी उपज बाजार में नहीं पहुंचा पाते। इससे बिचौलियों की चांदी हो जाती है। इस समस्या को दूर करने के लिए केन्द्र सरकार उत्पादक क्षेत्रों को महानगरों से जोड़ने के लिए किसान एक्सप्रेस चला रही है ताकि उत्पादक और उपभोक्ता के बीच संतुलन बना रहे। कृषि को आधुनिक बनाने के लिए डिजिटल प्रणाली तैयार की जा रही है। इससे किसानों का डाटाबेस बनेगा। कृषि क्षेत्र में निजी निवेश व फसलों की पैदावार बढ़ाने, वैल्यू चेन को मजबूत बनाने और घरेलू व वैश्विक बाजार में उपज की बिक्री में मदद मिलेगी।

किसानों के साथ व्यापारी वर्ग भी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण घटक है। उसकी सुविधा के लिए एक देश, एक टैक्स की संकल्पना से वस्तु एवं सेवा कर यानी जीएसटी लागू किया गया। टैक्स प्रणाली में महत्वपूर्ण सुधार करते हुए एक देश–एक कर व्यवस्था जीएसटी ने अर्थव्यवस्था को एक आयाम तक पहुंचाने में मदद की है। उद्योग और व्यापारी तमाम टैक्सों के जाल से मुक्त हुए तथा राजस्व का नुकसान भी कम हुआ। पिछले कुछ महीनों से जीएसटी संग्रह 1 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा रहा। ईमानदार करदाता को सम्मान देते हुए पहली बार फेशलेस असेंसमेंट की व्यवस्था लागू की गई। विवाद से विश्वास योजना के जरिए लंबित आयकर मामलों में कमी की पहल भी की गई। आयकर रिटर्न भरने वालों की संख्या में ढ़ाई करोड़ की वृद्धि हुई है। खराब आर्थिक हालत से जूझ रहे बैंकों की स्थिति को सुधारने और बढ़ते हुए कर्ज घाटे को कम करने के लिए 27 बैंकों का विलय कर 12 बैंक बनाने का निर्णय लिया गया। मार्च 2018 में एनपीए 11.5 प्रतिशत से घटकर मार्च 2019 में 9.3 प्रतिशत और मार्च 2020 में यह 8.5 प्रतिशत रह गया।

व्यापारी और कॉरपोरेट वर्ग को केवल उलाहना देकर देश की प्रगति नहीं की जा सकती, बल्कि उसके साथ–साथ सरकार की भी झोली भरे, इसलिए सुधार जरूरी है। विनिवेश, विनियमन और मुद्रीकरण समान रूप से हो रहे हैं व प्रौद्योगिकी को अपनाकर अधिकाधिक पारदर्शिता बरती जा रही है। 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन' के तहत संरचनात्मक सुधार और सुगम कामकाज पर ध्यान दिया जा रहा है। मोदी सरकार इंस्पेक्टर राज में भरोसा नहीं करती, इसलिए सरकार ने ऐसे सैकड़ों बोझिल कानूनों को एक झटके में समाप्त कर दिया, जो विकास की राह में रोड़ा थे। दरअसल, पुराने कानून बेईमान नियामकों के मुफीद थे। लिहाजा, प्रधानमंत्री जी ने अपने पहले कार्यकाल में ऐसे 1200 कानूनों व दूसरी पारी में 58 कानूनों को खत्म किया। इसी तरह 6000 से अधिक ऐसे दिशा–निर्देश केंद्र और राज्यों के तमाम विभागों में कायम थे, जो आम आदमी के दैनिक जीवन को प्रभावित कर रहे थे। केन्द्र सरकार ने राज्यों के साथ मिलकर तय किया है कि अगस्त 2022 तक यानी आजादी की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर नागरिकों को इन नियम–कानूनों से भी आजादी मिल जाएगी।

'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' का उद्देश्य है बिना किसी भेदभाव के सभी का समग्र विकास। यह जन–कल्याण के नाम पर पूर्व में किए गए प्रयासों की चूक और पक्षपात को दूर करता है। वित्तीय समावेशन के लिए जन–धन खातों, आधार और मोबाइल नंबर (जेएएम) का एकीकरण किया गया। जेएएम के साथ प्रत्यक्ष लाभ हंस्तांतरण (डीबीटी) के एकीकरण से वंचितों को बार–बार सहायता पहुंचाने में सफलता मिल रही है। सिर्फ जेएएम नहीं, बिना किसी भेदभाव से क्रियान्वित कई अन्य उपायों ने भी देश में गरीबों

को राहत दी। जिन छोटे कारोबारियों के पास गारंटी में देने के लिए कुछ नहीं था, उनको भी मुद्रा लोन (50 हजार से 10 लाख रुपये तक) मिल रहा है। कोरोना महामारी के दौरान स्वनिधि योजना शुरू की गई जिसमें रेहड़ी–पटरी वालों को 10 हजार रुपये का लोन मुहैया कराया जा रहा है। लोगों को कैशलेस स्वास्थ्य देखभाल (आयुष्मान) और जीवन व दुर्घटना बीमा (जीवन ज्योति सुरक्षा बीमा) दिया जा रहा है। स्वास्थ्य क्षेत्र और उसके नियमों में सुधार हो रहा है। निजी क्षेत्र को दक्ष बनाकर और पर्यावरणीय लक्ष्यों को हासिल करके बिजली क्षेत्र को संवारा जा रहा है। स्वैच्छिक और महत्वाकांक्षी रिन्यूएबल पॉवर गैपेसिटी टारगेट्स के साथ रिन्यूएबल एनर्जी के लिए भारत की प्रतिबद्धता, पेरिस जलवायु समझौते की चर्चा में उसकी नेतृत्वकारी भूमिका और इंटरनेशनल सोलर एलायंस, यह सब बताता है कि भारत पर्यावरण सुरक्षा और जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए नेतृत्व देने में सक्षम है। बिजली उत्पादन की क्षमता, ऑप्टिकल फाइबर, वित्तीय समावेशन 99.4 फीसदी तक पहुंचने के साथ–साथ एफडीआई में बड़ी बढ़ोतरी और विभिन्न सूचकांकों में भारत ने बड़ी छलांग लगाई है। कोरोबारी सुगमता सूचकांक 2014 में 142 से बढ़कर अब 63 हो गई। वर्ल्ड बैंक इलेक्ट्रिसिटी एक्सेसिबिलिटी रैंकिंग में 2014 से 2018 के बीच भारत ने 99वें से 26वें स्थान तक का सुधार देखा है। ग्लोबल कॉम्पिटिटवनेस इंडेक्स ने भारत की रैंकिंग में 71 से 58 तक का सुधार देखा, जबकि वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के ट्रैवल एंड टूरिज्म कॉम्पटिटिव इंडेक्स में भारत की 65 से 34 रैंक तक सुधार हुआ है।

केन्द्रीय वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण के अनुसार कोरोना महामारी के बीच, इस अभूतपूर्व स्थिति से देश की अर्थव्यवस्था को मुश्किलों से उबारने के लिए तैयार 2021 के बजट ने बुनियादी ढांचे पर खर्च बढ़ाने पर जोर दिया। यह सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के लिए नीतियां भी निर्देशित करता है और वित्तीय क्षेत्र में सुधार के लिए रोडमैप भी तैयार करता है। बैंकों को पेशेवर बनाने की प्रक्रिया चल रही है। तकनीक का इस्तेमाल करके टैक्स एडमिनिस्ट्रेशन को फेसलेस बनाया जा रहा है, यानी ऐसी जड़ता खत्म की जा रही है, जिनसे करदाताओं का उत्पीड़न किया जाता था। सार्वजनिक संपतियों से राजस्व के नए स्रोत तलाशने की श्रृंखला तैयार है। साफ है, 1991 के सुधार 20वीं सदी की गाथा थे, आज जो सुधार किए जा रहे हैं, वे 21वीं सदी के नए भारत के लिए हैं। डिजिटल तकनीक के माध्यम से 'एक राष्ट्र– एक राशन कार्ड' का महत्व तो जग जाहिर है। महामारी के दौरान राज्यों के सहयोग से व्यवस्थागत सुधार भी किए गए। यह सब इसलिए संभव हुआ क्योंकि राज्यों को हर बड़ी उपलब्धि हासिल होने पर बतौर प्रोत्साहन उनके लिए क्रेडिट बढ़ाई गई।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 28 जून को बहुप्रतीक्षित प्रोत्साहन पैकेज की घोषणा की। कुल 6.3 लाख करोड़ रुपये का यह पैकेज 17 से ज्यादा हिस्सों में बंटा हुआ है, जिनमें से कुछ के लिए प्रावधान पांच साल तक के लिए निर्धारित किए गए हैं। पिछले कुछ महीनों से लगातार निर्यात में बढ़ोतरी न सिर्फ बेहतर अर्थव्यवस्था का संकेत दे रही है, अपितु यह निर्यात में स्थिरता का भी प्रतीक है। पेट्रोलियम उत्पादों, इंजीनियरिंग के सामान, फार्मा और रत्न व आभूषण क्षेत्र में मांग ज्यादा होने की वजह से निर्यात में तेजी आई है। गौरतलब है, मोदी सरकार द्वारा मेक इन इंडिया को बढ़ावा देने के लिए उत्पादन आधारित प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना से देश के निर्यात बढ़ने लगे हैं। केंद्रीय कृषि मंत्री के अनुसार भारत दुनिया के पहले दस बड़े कृषि निर्यातक देशों में चमकता दिखाई दे रहा है।

नोटबंदी के बाद डिजिटल ट्रांजेक्शन में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। अर्थव्यवस्था और समाज पर तकनीक का निर्धारण स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर की नीतियों से ही हो सकता है। भारत की सामूहिक प्रगति और समृद्धि की बड़ी वजह है उसकी आधी आबादी का वर्किंग ग्रुप के तौर पर होना। ऐसे में जब कोरोना जैसी आपदा आई तो देश के नेतृत्व ने नई सोच के साथ पहले जीवन को बचाने का मंत्र दिया तो उसके बाद 'जान भी, जहान भी' मंत्र के साथ आत्मनिर्भरता का मंत्र दिया और देश ने इसे साकार करने की दिशा में कदम बढ़ा दिया है। लॉकडाउन के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था को सहारा देने के लिए 'आत्मनिर्भर भारत' पैकेज की घोषणा की गई थी। 29.87 लाख करोड़ रुपये का आर्थिक पैकेज तीन चरणों में घोषित किया गया। यह पैकेज भारत की जीडीपी का 15 प्रतिशत था। इससे न सिर्फ भारतीय अथव्यवस्था संभली बल्कि आत्मनिर्भरता की राह पर आगे बढ़ने लगी है। आर्थिक पैकेज में उद्योग के साथ आम आदमी, गरीब, किसान, प्रवासी मजदूर, एमएसएमई का विशेष ध्यान रखा गया। केंद्र सरकार ने मैन्युफैक्चरिंग में अच्छा प्रदर्शन करने वाले 13 क्षेत्र के उद्योगों को प्रोत्साहन लिंक पैकेज की घोषणा की। 1.97 लाख करोड़ रुपये की पीएलआई के जरिए अगले पांच वर्षों में 500 बिलियन डॉलर मैन्युफैक्चरिंग आउटपुट मिलेगा तो एक करोड़ नए रोजगार भी सृजित होंगे।

यह भी महत्वपूर्ण है कि 5 मई, 2021 को आरबीआई ने व्यक्तिगत कर्जदारों एवं छोटे कारोबारों के लिए कर्ज पुनर्गठन की जो सुविधा बढ़ाई और कर्ज का विस्तार किया, उससे छोटे उद्योग–कारोबार को लाभ होगा। कोरोना लहर के घातक रूप को देखते हुए आर्थिक क्षेत्र में कुछ और प्रभावी कदम उठाए जाने जरूरी हैं। जैसे– लघु एवं कुटीर उद्योग (एमएसएमई) को संभालने के लिए राहत के अधिक प्रयासों की जरूरत होगी। आरबीआई की मौद्रिक नीति समिति ने अपनी द्वि–मासिक बैठक में देश की आर्थिक स्थिति और कोरोना की दूसरी लहर के मद्देनजर रेपो रेट और रिवर्स रेपो रेट में कोई बदलाव न करने का फैसला किया है। आरबीआई की कोशिश यही है कि नकदी की उपलब्धता ज्यादा से ज्यादा हो। इसके लिए वह कई तरीके अपना रहा है।

विदेशी निवेश के नियमों को आसान बनाया गया है। रक्षा, रेलवे के साथ बीमा जैसे तमाम सेक्टर विदेशी निवेश के लिए खोले गए हैं। इससे देश में मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा मिल रहा है और नए रोजगारों का भी सृजन हो रहा है। भारत के इतिहास में सबसे ज्यादा विदेशी निवेश अप्रैल 2020 से जनवरी 2021 के दौरान 7212 अरब डॉलर का हुआ है। भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार की दशा–दिशा बनती लग रही है। इसके तीन सूचक हैं। पहला सूचक है, इस वित्त वर्ष की पहली तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर 20.1 प्रतिशत रही है। दूसरा सूचक है, जीएसटी राजस्व पिछले कुछ महीनों से लगातार एक लाख करोड़ रुपये से ऊपर रहा है। तीसरा सूचक नया नहीं, लेकिन अब लगभग स्थाई रूप से महत्वपूर्ण है कि भारतीय शेयर बाजार में लगातार उछाल देखा जा रही है। कोरोना जनित गिरावट से देश ने एक सबक लिया है कि हम आर्थिक गतिविधियों को अब रोकना नहीं चाहते हैं। कारखानों का चलना, व्यापार का सुलभ होते जाना जरूरी है, लेकिन सबसे जरूरी है मांग का बढ़ना। लोगों के पास धन होगा या लोग खर्च करेंगे, तभी सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि होगी। व्यापार होगा, तभी जीएसटी संग्रह में भी उछाल जाएगा इससे प्राप्त धनराशि विकास कार्य में लग पायेगी। सरकारों को अपने सकारात्मक खर्चों को बढ़ाना चाहिए।

निर्माण, विनिर्माण, खनन, व्यापार, होटल और परिवहन में तेजी लौट रही है। कृषि क्षेत्र में 4.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मतलब, कृषि क्षेत्र में जितनी क्षमता एवं संभावना है, उसके अनुरूप यह क्षेत्र काम कर रहा है। कोरोना का असर गांवों तक भी पहुंचा था, लेकिन गांव की अर्थव्यवस्था पर वैसे असर नहीं पड़ा, जैसे शहरों पर पड़ा। गांव एवं शहर के जिन व्यवसायों या उत्पादों ने अर्थव्यवस्था को संभाले रखा है, उन्हें हमें चिन्हित करना चाहिए। अर्थव्यवस्था विकास के लिए मचल रही है, मतलब युवा, कामगार व उद्यमी विकास के लिए बहुत लालायित हैं। इस वर्ग को मजबूती देने की कोशिशें बढ़ा देनी चाहिए। सरकार जमीन दे और मजदूर पास के क्षेत्रों से आएं तो इनकी उत्पादन लागत कम रहेगी। इससे विदेशी बाजारों में कीमतों के मामले में प्रतिस्पर्धा करने में भी देश को मदद मिलेगी और बेरोजगारी भी कम होगी। चीन ने कमोबेश इसी निर्यात आधारित मॉडल के साथ दुनिया की फैक्ट्री बनने की शुरुआत की थी।

भारत विश्व में सबसे अधिक मोबाइल इंटरनेट उपभोग करने वाला देश है। दरें सबसे कम हैं। मोबाइल डेटा उपभोग पिछले चार वर्षों में 30 गुणा बढ़ा है। 1.58 लाख ग्राम पंचायतों तक ऑप्टिकल फाइबर पहुंचाया जा चुका है। वर्ष 2014 में यह केवल 59 ग्राम पंचायत तक था। भारत अब दुनिया की चौथी औद्योगिक क्रांति का नेतृत्व करने के लिए पूरी तरह तैयार है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में, ''दुनिया में पहली और दूसरी औद्योगिक क्रांति हुई, तब भारत आजाद नहीं था। जब तीसरी औद्योगिक क्रांति हुई, तब भारत तुरंत मिली आजादी के बाद की चुनौतियों से जूझ रहा था। लेकिन अब भारत पूरी तरह तैयार है। इस समय देश की 50 फीसदी आबादी 27 साल से कम आयु की है। इसलिए चौथी औद्योगिक क्रांति में अपनी अहम भूमिका को लेकर भारत तैयार है।'' आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस, मशीन लर्निंग, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, ब्लॉकचेन और बिग डेटा में देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाने की क्षमता है। टेक्नोलॉजी वर्तमान युग में संपूर्ण विकास तक पहुंचने का अहम जरिया है। इसी के रास्ते पर आगे चलकर भारत आत्मनिर्भरता के अपने सपने को पूरा कर सकता है।

कैशलेस अर्थव्यवस्था बदलते वक्त की जरूरत है। इसलिए देश की अर्थव्यवस्था को डिजिटल बनाने के लिए केन्द्र सरकार ने विशेष पहल की है। भीम एप पर 170 से ज्यादा बैंक जुड़े हैं जो 24 घंटे डिजिटल पेमेंट की व्यवस्था उपलब्ध करा रहे हैं। बजट 2021–22 में 1500 करोड़ रुपये का प्रावधान भारत में डिजिटल पेंमेंट को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। डिजिटल लेनदेन के मामले में वर्ष 2020 में भारत ने अमेरिका और चीन को पीछे छोड़ दिया है।

देश में आज 120 करोड़ से ज्यादा लोगों के पास आधार कार्ड है। आधार के जरिए प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण यानी डीबीटी आज सरकारी योजनाओं की धुरी बन गई। 54 मंत्रालयों की 318 योजनाओं में डीबीटी के माध्यम से लाभार्थी के हक का पैसा सीधे उनके खाते में भेजा जा रहा है। अब तक लगभग 16 लाख करोड़ रुपये डीबीटी के जरिए सीधे लाभार्थी के खातों में भेजा जा चुका है और डीबीटी के माध्यम से 1.78 लाख करोड़ रुपये की बचत हुई है। स्टैंड अप इंडिया योजना के तहत 25000 करोड़ रुपये से ज्यादा की सहायता दी जा चुकी है। अभी तक मुद्रा योजना के तहत 28 करोड़ से ज्यादा लोन मंजूर किए जा चुके हैं। सरकार के सहयोग से देश का युवा स्टार्टअप से रोजगार देने वाला बन रहा है। इनोवेशन के मामले में देश लगातार आगे बढ़ रहा है। ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स में 52वीं रैंक इसकी गवाह है। पिछले सात वर्षों में लगातार इसमें सुधार हुआ है।

आम आदमी के हित में मोदी सरकार कड़े एवं हितकारी फैसले लेने के लिए जानी जाती है। मोदी सरकार बेदाग है, उस पर भ्रष्टाचार का कोई आरोप नहीं है। तीन तलाक कानून आज मुस्लिम महिलाओं के लिए रक्षा कवच का काम कर रहा है। देश में तीन तलाक के मामले घटकर 5–10 प्रतिशत रह गए हैं। इसी इच्छाशक्ति से संविधान से अनुच्छेद 370 को खत्म कर जम्मू–कश्मीर और लद्दाख दो केंद्रशासित प्रदेश बना दिए गए हैं। अब वहां देश के सभी कानून लागू होते हैं। यही है एक भारत–श्रेष्ठ भारत। ऐसे ही नागरिकता संशोधन कानून से पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश से आए अल्पसंख्यक भारत के नागरिक बन सकेंगे।

सामाजिक समरसता के साथ राम मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हुआ है। राम मंदिर, करतारपुर कॉरीडोर, काशी

विश्वनाथ कॉरीडोर, जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाना, तीन तलाक, नागरिकता संशोधन कानून जैसे महत्वपूर्ण फैसलों ने पिछले सात वर्षों में आपसी सद्भाव के साथ सदियों का इंतजार खत्म किया है जो बन गया है भारतीय संस्कृति का आधुनिक, आस्था और राष्ट्रीय भावना का प्रतीक। अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण अब नारा नहीं, बल्कि एक सच्चाई है। तीन तलाक जैसी सदियों पुरानी कुप्रथा का अंत हो गया है। बोडो व ब्रू–रियांग जैसे समझौतों से पूर्वोत्तर में दशकों की समस्या का समाधान हो गया है। सिक्किम पहली बार भारत के एविएशन मैप पर उभर गया है।

कुपोषण दूर करने के लिए 22 राज्यों में 50 से अधिक परियोजनाएं शुरू की गईं। प्रधानमंत्री मातृत्व वंदना योजना के तहत गर्भवती महिलाओं को 6 हजार रूपए दिए जा रहे हैं। प्रत्येक वर्ष 51 लाख महिलाएं इस योजना का लाभ ले रही हैं। बच्चों में टीकाकरण के लिए मिशन इंद्रधनुष के तहत 12 बीमारियों की वैक्सीन लगाई जा रही है। 3.70 करोड़ बच्चों और लगभग 92 लाख महिलाओं का टीकाकरण मिशन इंद्रधनुष के तहत किया जा चुका है।

स्वदेशी न्यूमोकोकल वैक्सीन के साथ पूरे देश में अभियान शुरू करने की घोषणा वर्ष 2021–2022 के बजट में की गई। इससे प्रत्येक वर्ष पचास हजार बच्चों की जान बचाई जा सकेगी। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2030 तक दुनिया को टीबी मुक्त करने का लक्ष्य रखा है जबकि भारत इस लक्ष्य को वर्ष 2025 तक पूरा करने को प्रतिबद्ध है। प्रधानमंत्रीजी टीबी मुक्त भारत अभियान की नई रणनीति योजना को लॉन्च कर चुके हैं। पहले तीन वर्षों में इसके लिए 12 हजार करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

स्वच्छ भारत अभियान से स्वच्छता कवरेज में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। देश के अधिकतर गांव खुले में शौच से मुक्त घोषित किए जा चुके हैं। 30 अप्रैल, 2021 तक देश में 11 करोड़ से अधिक घरों में शौचालय बनाकर देश को खुले में शौच से मुक्त कराया गया है।

दशकों तक नियति के भरोसे रहा देश अब समग्र विकास की सोच और तकनीक से प्रगति पथ पर अग्रसर है। 21वीं सदी का मुख्य नेतृत्व टेक्नोलॉजी सुपरपावर्स के हाथों में होगा। टेक्नालॉजी के बल पर केन्द्र सरकार ने सुशासन की ऐसी पटकथा लिखी कि देश की विकास यात्रा ने अपनी तेज गति से विश्व को न केवल चौंकाया, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर भी भारत का मान बढ़ा दिया। विज्ञान और तकनीक भारत के विकास का ऐसा उपकरण बन गया है कि प्रशासनिक सुधार, बिजली, रेल सुधार, भ्रष्टाचार पर अंकुश, टैक्स पारदर्शिता, जीएसटी से एक देश–एक टैक्स, स्किल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, डिजिटल इंडिया, किसानों–महिलाओं के हित में कदम, शिक्षा के क्षेत्र में बदलाव से लेकर रक्षा आधुनिकीकरण और दशकों से लंबित ऐसी परियोजनाएं साकार हो रही हैं जो पहले असंभव लगता था। देश में पहली बार हुआ कि समाज की कतार में आखिरी में खड़ा व्यक्ति सरकारी योजनाओं का सीधा लाभार्थी बना। 40 करोड़ गरीबों को जन–धन से बैंक खाते खोलकर उन्हें बैंकिंग सिस्टम से जोड़ा गया है।

गरीबों के लिए अब इलाज सस्ता नहीं बल्कि मुफ्त है। 10.74 करोड़ परिवारों के 50 करोड़ से ज्यादा लोगों को 5 लाख रु. तक निःशुल्क इलाज के लिए पीएम जन आरोग्य आयुष्मान भारत योजना शुरू की गई थी। इस योजना के तहत लगभग 16 करोड़ ई–कार्ड जारी हो चुके हैं। अब तक इस योजना के तहत 1.79 करोड़ लोग अस्पताल में भर्ती होकर इलाज करा चुके हैं। 7676 से ज्यादा जनऔषधि केंद्रों पर लोगों को 90 प्रतिशत तक सस्ती दवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। स्टेंट की कीमतों में 85 प्रतिशत तक की कमी आ गई है। 'सेहत' नाम से आयुष्मान भारत योजना का लाभ जम्मू–कश्मीर में सभी के लिए उपलब्ध है।

स्कूल के बच्चे खेल–खेल में अनोखे इनोवेशन कर विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। खेलो इंडिया कार्यक्रम अब देश के कोने–कोने तक पहुंच गया है और अधिकतर खिलाड़ी भारतीय खेल प्राधिकरण की योजनाओं से लाभान्वित हो रहे हैं। बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ अभियान के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने समाज में महिलाओं को सम्मान देने का एक अभिनव प्रयास किया। इसे दुर्भाग्य कहिए या दूरदर्शिता का अभाव कि वर्षों से बेटियों को समाज में उनका उचित स्थान नहीं दिया गया था। कई बेटियों के लिए तो शिक्षा जैसी बुनियादी सुविधाएं भी पहुंच से बाहर थीं। धीरे–धीरे बदलाव आया। माता–पिता ने बेटियों को पढ़ने और खेलने के लिए प्रोत्साहित किया। आज वे हर क्षेत्र में सफलता की गाथा लिख रही हैं। आज लड़कियां समाज के हर क्षेत्र और पहलू को प्रभावित कर अपनी छाप छोड़ रही हैं।

तकनीक के बेहतर इस्तेमाल के परिणामस्वरूप कोरोना जैसी वैश्विक आपदा के वक्त भी देश ठहरा नहीं, लॉकडाउन के बावजूद गरीबों के घरों में अनाज पहुंचा। इस आपदा से निपटने में भारत जैसी सघन आबादी वाले देश ने स्वास्थ्य का ऐसा ढांचा खड़ा किया कि कोरोना की पहली लहर का असर कम हुआ। अब दूसरी लहर ने भयावह रूप लिया तो केन्द्र सरकार ने एक बार फिर 'जान है तो जहान है' के मंत्र पर लोगों का जीवन बचाने को पहली प्राथमिकता दी। कोरोना जैसी वैश्विक आपदा के वक्त मोदी जी के सशक्त नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत की अलख जगाकर देश के अपार जनसमूह को उससे जोड़ा जा रहा है।

यह अनुकूल अवसर है कि भारत की 65 प्रतिशत आबादी 35 वर्ष से कम उम्र की है, जो नए भारत के निर्माण में सबसे अहम किरदार निभा सकती है। उनमें स्वाभाविक आकांक्षाएं

भी हैं तो राष्ट्र को प्रगति की ऊंचाईयों पर ले जाने का जज्बा भी। भारत के युवाओं को इसी भावना को साकार कर एक सुरक्षित, समृद्ध और प्रगतिशील भारत के निर्माण का प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का 'न्यू इंडिया, ग्रेट इंडिया' का विजन है। कोरोना जैसी आपदा में भी नया अवसर ढूंढ़ इन्हीं सामर्थ्यवान युवा शक्ति, एक निर्णायक नेतृत्व और प्रभावी ग्लोबल प्रोफाइल के साथ अवसर को अपने हाथों में लेकर देश 'न्यू इंडिया' के निर्माण की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के अनुसार ''हमारी विचारधारा देशहित के लिए होती है। हम उसी विचारधारा में पले हैं जो राष्ट्र प्रथम (नेशन फर्स्ट) की बात करती है। ये हमारी विचारधारा है कि हमें राजनीति का पाठ राष्ट्रनीति की भाषा में पढ़ाया जाता है। हमारी राजनीति में भी राष्ट्रनीति सर्वोपरि है। हमें राजनीति और राष्ट्रनीति में से एक को स्वीकार करना होगा। हमें संस्कार मिले हैं, राष्ट्रनीति को स्वीकार करना और राजनीति को नंबर दो पर रखना। हमें गर्व है कि हमारी विचारधारा 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' की बात करती है, उसी मंत्र को जीती है।''

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी समस्याओं से टकराने में विश्वास रखते हैं। उन्होंने भविष्य को ध्यान में रखते हुए डिजिटल टेक्नोलॉजी को राजनीति और नीति में जिस तरह से उपयोग किया है, उसी का नतीजा है कि भारत आज उन चंद देशों में शुमार है जो प्रौद्योगिकी नीतियों को बनाने में सबसे आगे है। कई क्षेत्रों में टेक्नोलॉजी का व्यापक प्रभाव पड़ा है, उनमें से एक कृषि है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस को गरीबी कम करने, किसानों के जीवन में सुधार लाने और दिव्यांगों के जीवन को आसान बनाने के लिए इस्तेमाल किया जा रहा है।

प्रधानमंत्रीजी का जोर इस बात पर है कि अधिक से अधिक उद्यमी तैयार किए जाएं जो नौकरी मांगने की बजाय नौकरी देने वाले बनें। इस दिशा में जीएसटी गेमचेंजर साबित हो रहा है क्योंकि स्वतंत्र कामगारों और सेवा मुहैया कराने वालों का नया पुल जो पहले नौकरी की गिनती में शामिल नहीं थे, उन्हें अब जीएसटी नेटवर्क का उपयोग कर पहचान सकते हैं। अटल इनोवेशन मिशन और अटल टिकरिंग लैब से इनोवेटर्स के तार पर 10 लाख बच्चों को आगे बढ़ाने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य नई सोच का उम्दा उदाहरण है। तकनीक और डिजिटल के बढ़ते महत्व और प्रभाव के परिणामस्वरूप नकद में वेतन देने की बजाए बैंक खाते, इलेक्ट्रॉनिक और मोबाइल से वेतन देना रोजगार सृजन की औपचारिक संस्कृति को जन्म दे रही है। सरकार के डिजिटल प्रयासों से देश में नियोक्ताओं को रोजगार की सेवा शर्तों पर दोबारा विचार करने के लिए मजबूर किया है। पांच करोड़ से ज्यादा युवाओं को पांच साल में स्किल इंडिया मिशन के तहत कौशल विकास का प्रशिक्षण दिया जा रहा है, इससे उन्हें स्वरोजगार अथवा नौकरी के नए अवसर मिल रहे है। 35 लाख से ज्यादा युवाओं को ऋण उपलब्ध कराया गया है। जनकेंद्रित नौकरशाही की दिशा में मिशन कर्मयोगी के माध्यम से नई पहल की गई है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में ''न्यू इंडिया यानी 65 प्रतिशत आबादी 35 साल के उम्र के नौजवानों के सपनों का न्यू इंडिया, अभूतपूर्व रूप से जागरूक महिला समूहों के सपनों का न्यू इंडिया। ऐसा न्यू इंडिया जो देश के गरीबों में कुछ पाने की इच्छा की बजाए कुछ करने की इच्छा के लिए अवसर की खोज। देश का गरीब भी अब कुछ दे दो, आप मुझे अच्छे लगोगे, इस मानसिकता को छोड़ चुका है। गरीब कहता है मैं अपने बल बूते पर आगे जाना चाहता हूँ। आप मेरे लिए अवसर उपलब्ध करा दीजिए। मेहनत मैं करूंगा। ये न्यू इंडिया की नींव है।''

भारत ने अपनी विकास की महत्वाकांक्षा और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए आधारभूत संरचना में अभूतपूर्व सुधार किए हैं जिसके परिणामस्वरूप देश में सालाना प्रति व्यक्ति आय में 78 हजार से लेकर सवा लाख रूपये की वृद्धि देखी गई। कृषि विकास दर माईनस से बाहर आ गई, आयकर दाताओं की संख्या दोगुनी से ज्यादा हो गयी, राष्ट्रीय राजमार्गों के निर्माण की गति में वर्ष 2014 के 12 से वर्ष 2021 में 37 कि.मी. प्रतिदिन का सुधार हुआ, ग्रामीण सड़क निर्माण में 70 से 130 कि.मी. प्रतिदिन का सुधार हुआ, रेलवे लाइन का विद्युतीकरण 3 हजार कि.मी से बढ़कर 13 हजार के पार जा चुका है। वर्ष 2014 में राजमार्गों की लंबाई 91287 कि.मी. थी जो अब बढ़कर 1,37,625 कि.मी. हो गई है। भारत में रोड इंफ्रास्ट्रक्चर के क्षेत्र में विकास की नई इबारत लिखते हुए प्रधानमंत्री जी कहते हैं ''जब हम पुल और सड़क बनाते हैं तो केवल नगर और गांवों को ही नहीं जोड़ते हम आकांक्षाओं के साथ उपलब्धि, आशा के साथ अवसर और उम्मीद के साथ खुशहाली को जोड़ते हैं।'' पहले सड़कों पर जहां गाड़ियां ठीक से नहीं चल पाती थीं आज वहां सुखोई और जगुआर जैसे लड़ाकू विमान उतर रहे हैं।

पांच दशक के इंतजार के बाद केरल को कोल्लम बाईपास मिला। लंबे समय से अटकी कई परियोजनाओं के काम ने अब रफ्तार पकड़ी है। चाहे फिर से बाड़मेर की रिफाइनरी का काम हो, 56 वर्षों से अटका सरदार सरोवर बांध हो, 65 साल पुराना बाणसागर प्रोजेक्ट हो, 16 साल पुराना असम का बोगीबील प्रोजेक्ट, सिक्किम का पाक्योंग एयरपोर्ट या दिल्ली को जाम और प्रदूषण से बचाने वाला ईस्टर्न पेरीफेरल एक्सप्रेस का काम तय समय से पहले पूरा करना हो, ऐसे कामों की फेहरिस्त बहुत लंबी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में ''अटकाने, लटकाने और भटकाने की संस्कृति अब समाप्त हो चुकी है।''

आजादी से पहले भारत की नदियों में बड़े–बड़े जहाज चला करते थे, लेकिन आजादी के बाद इस पर ध्यान देने के बजाय उनकी उपेक्षा की गयी। किंतु हल्दिया–वाराणसी जलमार्ग

पानी पर विकास की नई तस्वीर साबित हो रही है। 1390 कि.मी. लंबी वाराणसी–हल्दिया जलमार्ग से उत्तर प्रदेश ही नहीं बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल यानि एक प्रकार से पूर्वी भारत के एक बड़े हिस्से को बहुत फायदा हुआ है। कंटेनर कार्गो द्वारा ढुलाई से क्षेत्र के विकास के साथ रोजगार के अवसर में भी वृद्धि हुई है। साथ ही, परिवहन खर्च में बहुत कमी आई है। जलमार्ग की दृष्टि से हल्दिया को मल्टीमॉडल के रूप में विकसित करने की भी योजना है। भविष्य में इसे बांग्लादेश तक जोड़ने की योजना है। वर्ष 2014 में मात्र 5 जलमार्ग हुआ करते थे, आज देश में 111 जलमार्ग हैं। 24 राज्यों में फैले हुए इन राष्ट्रीय जलमार्गों की लंबाई 20,275 कि.मी. है। यह 'न्यू इंडिया' के 'न्यू विजन' का जीता जागता सबूत है।

सर्दियों में बर्फबारी की वजह से रोहतांग दर्रे के निकट मनाली–लेह हाईवे पांच–छह महीनों के लिए ठप पड़ जाता था और यह क्षेत्र देश के अन्य हिस्सों से पूरी तरह कटा रहता था। लेकिन रोहतांग में मनाली–लेह राजमार्ग पर अटल सुरंग के निर्माण का 26 साल बाद पूरा होने वाला सपना केन्द्र सरकार की शीर्ष प्राथमिकताओं की वजह से मात्र छह साल में साकार हो गया है। अब यह सड़क पूरे साल के लिए खुल गई है। यह दुनिया की सबसे ऊंची और सबसे लंबी रोड टनल है। अटल सुरंग बनने से लद्दाख में तैनात भारतीय सेना को काफी मदद मिलेगी। अब सर्दियों में भी हथियार और रसद की आपूर्ति आसानी से हो सकेगी। अटल सुरंग भारत के आत्मनिर्भर बनने के संकल्प का चमकता उदाहरण है। एशिया की सबसे बड़ी टनल रोड यानी जोजिला सुरंग के लिए विस्फोट के साथ ही वर्ष 2020 से काम शुरू कर दिया गया है। इस सुरंग के बनने के बाद श्रीनगर, द्रास, कारगिल और लेह क्षेत्र सभी मौसम में आपस में जुड़ जाएंगे। इससे स्थानीय लोगों की जिंदगी की राह आसान होगी और देश की रक्षा रणनीति और मजबूत होगी।

तकनीक के रास्ते विकास अब नए भारत की पहचान बन रहा है। फिर चाहे पूर्व या पूर्वोत्तर भारत हो या फिर दक्षिण भारत। असम का बोगीबील पुल अब भारत का सबसे लंबा डबल डेकर ब्रिज बना है तो रामेश्वरम को मंडपम से जोड़ने वाला समुद्री रेल पुल पम्बन तकनीक का अद्भुत उदाहरण बना है। 4.94 कि.मी लंबे बोगीबील पुल से अब धेमाजी से डिब्रूगढ़ की दूरी मात्र 100 कि.मी. रह गई है, पहले यह 500 कि.मी. थी, जिसे पूरा करने में 24 घंटे लगते थे। बोगीबील पुल में ऊपर का हिस्सा सड़क मार्ग और उसके नीचे रेल मार्ग है। भारतीय रेलवे में इस प्रकार की संरचना का निर्माण पहली बार किया गया है। तमिलनाडु में भारत का पहला चलता–फिरता पम्बन पुल वर्टिकल लिफ्ट स्पैन तकनीक का उपयोग कर बनाया गया है, अर्थात किसी जहाज के आने पर इसके बीच का हिस्सा ऊपर उठ जाएगा। प्रत्येक वर्ष लाखों पर्यटक रामेश्वरम और धनुषकोडी आते हैं। पम्बन पुल से पर्यटकों की संख्या में और वृद्धि होगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में "जो सामान्य व्यक्ति हवाई चप्पल पहनकर घूमता है, वह हवाई जहाज में भी दिखना चाहिए, यह मेरा सपना है।" आम आदमी के सपनों को पूरा करने की उनकी प्रतिबद्धता के चलते आज देश का आम आदमी मात्र 2500 रुपये के किराये में हवाई जहाज की यात्रा कर पा रहा है। उड़ान योजना में लगभग 500 कि.मी. के लिए एक 'फिक्स्ड विंग एयरक्राफ्ट' विमान से एक घंटे की यात्रा या किसी हेलीकॉप्टर से आधे घंटे की यात्रा का हवाई किराया 2500 तय किया गया। केन्द्र सरकार ने उड़ान योजना के जरिए आम आदमी का यह सपना सच किया है। उड़ान योजना में हेलीकॉप्टर और सी–प्लेन सेवा को भी शामिल किया गया है। देश में पहली बार सी–प्लेन की शुरूआत अहमदाबाद और केवड़िया के बीच हुई। उड़ान के तहत भविष्य में 1000 नए मार्गों के साथ 100 अतिरिक्त हवाई अड्डों का संचालन किया जाएगा। 30 हेलिपोर्ट और सी–प्लेन के लिए 10 वाटर एयरोड्रम शुरू किए जाएंगे।

अंतरिक्ष में किसी उपग्रह को मार गिराने वाला भारत दुनिया का चौथ देश बना। मार्च 2019 में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस सफलता की घोषणा की थी। भारत ऑटो रिक्शे से कम किराये के खर्च में मंगल ग्रह तक पहुंच गया है। भारत ने गगनयान मिशन भी शुरू किया है जो देश का पहला मानव अंतरिक्ष कार्यक्रम है। इसे आजादी की 75वीं वर्षगांठ के मौके पर लॉन्च किया जाएगा। सैटेलाइट प्रक्षेपण और अन्य अंतरिक्ष आधारित सेवाओं में निजी संस्थानों को अनुमति दी गई है। इससे इस क्षेत्र का और भी अधिक विकास होगा। "सूचना तकनीक के क्षेत्र में अगर भारत की युवा पीढ़ी का योगदान ना होता तो अभी भी हमारा देश सांप सपेरों का देश होता। हमारे पूर्वज तो सांप के साथ खेलते थे अब हमारी युवा पीढ़ी माउस के साथ खेलती है" अमेरिका के मेडिसिन स्कवायर में आयोजित कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कहे यह शब्द नए भारत के उस आगाज की घोषणा थी, जिसका इंतजार हमारी पीढ़ियां वर्षों से कर रही थीं।

बेशक देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी लगातार प्रयासरत और कृत संकल्पित रहे हैं। केन्द्र सरकार ने 34 वर्ष बाद नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू की है जो स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा दोनों में बड़े बदलाव करने में सक्षम है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा के सभी स्तरों पर सबकी एक समान पहुंच सुनिश्चित करना, छात्रों को जरूरी कौशल और ज्ञान से लैस करना, छात्रों में रचनात्मक सोच, तार्किक निर्णय और इनोवेशन की भावना को प्रोत्साहित करना, भाषाई बाध्यताओं को दूर करना, दिव्यांग छात्रों के लिए तकनीक के प्रयोग को बढ़ा देना है। नई शिक्षा नीति में प्रस्तावित त्रिभाषा नीति नए भारत के निर्माण

में प्रभावकारी हो सकती है। शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा/स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा के लिए तीन भाषा नीति की भाषाई दक्षता ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था तैयार करती है। नई शिक्षा नीति–2020 विद्यार्थियों की उच्चतम क्षमता और कौशल को बढ़ाएगी। यह नीति विश्व स्तर की शिक्षा प्रणालियों के इतिहास में सबसे अधिक परामर्श प्रक्रियाओं के बाद लाई गई है और भारत को ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के शीर्ष पर पहुंचाने में सक्षम है।

सभी को शिक्षा देने के लिए प्रतिबद्ध केन्द्र सरकार ने शिक्षा के अधिकार का दायरा बढ़ाकर 3 से 18 वर्ष कर दिया है जो पहले 6 से 14 वर्ष था। साथ ही नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का लक्ष्य वर्ष 2030 तक युवा और प्रौढ़ साक्षरता 100 प्रतिशत हासिल करना है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत केन्द्र–राज्य के सहयोग से शिक्षा के क्षेत्र पर देश की जीडीपी के 6 प्रतिशत निवेश का लक्ष्य रखा गया है। ग्लोबल नॉलेज सुपर पॉवर की ओर भारत के कदम बढ़ रहे हैं।

वर्ष 2015 से नए डिजिटल युग का सूत्रपात हुआ। वर्ष 2015 से केन्द्र सरकार ने इस दिशा में ऐसा मजबूत ढांचा बनाने की पहल की, जो अब सशक्त समाज के जीवन का सहारा बन रही है। अब श्रम क्षेत्र हो या महिलाओं की सुविधा या गांव–गरीब तक प्रशासन की पहुंच या फिर उपभोक्ता संरक्षण से लेकर राजनीति, शासन और कूटनीति– डिजिटल प्लेटफार्म इसका अहम आधार बनी। डिजिटल से सभी क्षेत्रों का सशक्तीकरण हो रहा है। 3.74 लाख कॉमन सर्विस सेंटर पर प्रमाण पत्र, लाइसेंस, आधार कार्ड, पासपोर्ट, बैंकिंग, पेंशन जैसी कई सरकारी सेवाओं की डिजिटल सुविधा माजूद है। देश के सभी 6 लाख गांवों में ऑप्टिकल फाइबर बिछाने का लक्ष्य रखा गया है। गांव की तरक्की का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आज नए भारत में शहरों से अधिक इंटरनेट का इस्तेमाल गांवों में हो रहा है।

सुशासन का रास्ता अब डिजिटल इंडिया से होकर जाता है। कारण केंद्र सरकार ने ईज ऑफ लिविंग को ध्यान में रखते हुए डिजिटल इंडिया के तहत तीन क्षेत्रों पर फोकस किया। पहला– डिजिटल बुनियादी सुविधाएं, दूसरा– डिजिटल साक्षरता और तीसरा– सेवाओं का डिजिटल वितरण। सेवाओं को पारदर्शी, जवाबदेह और सुगम बनाया जा रहा है। भीम एप, उमंग, भारतनेट, डिजिटल साक्षरता मिशन, डिजिलॉकर, डिजि सेवक ऑर मायगॉव जैसी डिजिटल सेवाएं इसी की देन हैं। अब लोगों को पेंशन के लिए जीवन प्रमाणन देने दफ्तर नहीं जाना होता। यह काम डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट के जरिए घर बैठे हो सकता है। साढ़े तीन लाख से ज्यादा कॉमन सर्विस सेंटर प्रमाण पत्र, आधार, लाइसेंस, बैंकिंग जैसी सुविधाओं को डिजिटली लोगों तक पहुंचा रहे हैं। प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल साक्षरता अभियान के जरिए छह करोड़ लोगों को डिजिटल रूप से साक्षर बनाया जा रहा है। डिजिटल फोरम के जरिए जनता से सीधा संवाद शुरू हुआ है। उमंग एप, डिजिलॉकर जैसी सुविधाओं ने लोगों को सरल और पारदर्शी डिजिटल व्यवस्था दी है। कंज्यूमर कम्युनिटी, गामा पोर्टल, कैनफोनेट एप के जरिए उपभोक्ता चंद मिनटों में शिकायत दर्ज करा सकते हैं। मिनिमम गवर्नमेंट मैक्सिमम गवर्नेंस की नीति के तहत आम नागरिकों के जीवन को सुगम बनाने पर केन्द्र सरकार का जोर है। 1842 बेकार कानूनों को रद्द किया गया है। विभागों, योजनाओं और मंत्रालयों का पुनर्गठन कर काम को रफ्तार दिया जा रहा है।

शहरों की तर्ज पर गांव का विकास, गरीबों को सुविधाएं उपलब्ध कराना, मध्यम वर्ग के जीवन स्तर को सुगम बनाना और किसानों के लिए कृषि को लाभकारी बनाकर उनकी आय को बढ़ाना केन्द्र सरकार की समग्र दृष्टिकोण का हिस्सा रहा है जिससे ईज ऑफ लिविंग की दिशा में क्रांतिकारी सुधार हो रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का ये उद्धरण कि ''मैं अपने लिए नहीं, न ही अपनों के लिए हूं। मैं यहां गरीबों के लिए हूं। मैं गरीबी में जन्मा हूं और गरीबी को जिया भी हूं। मैं गरीबों का दर्द समझता हूं'' – उनकी सोच और कार्यशैली का अहम हिस्सा हैं। गांव में इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास के साथ–साथ गरीबों को पक्के मकान, शौचालय की सुविधा, रसोई गैस कनेक्शन, जनधन के तहत बैंक खाते, मुद्रा योजना के तहत रोजगार के लिए वित्तीय सहायता और जीवन सुरक्षा के लिए बीमा योजना जैसी शुरुआत करके मौजूदा केन्द्र सरकार ने पिछले सात वर्षों में ही गांव–गरीब की तस्वीर बदल दी है। प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत 2.14 करोड़ पात्र परिवारों में से 1.92 करोड़ घरों को मंजूरी दी जा चुकी है जिसमें से 1.36 करोड़ आवास निर्माण पूर्ण हो चुके हैं। आजादी के अमृत महोत्सव के समापन के साथ ही गांवों में सबको पक्के मकान का सपना साकार होगा। उज्ज्वला योजना के तहत 8 करोड़ गरीबों को मुफ्त गैस कनेक्शन दिया गया है। अब एलपीजी की कवरेज 99.6 प्रतिशत पर पहुंच गयी है। इतिहास में पहली बार गांव में, शहरों से ज्यादा इंटरनेट इस्तेमाल हो रहा है। प्रत्येक पंचायत में ऑप्टिकल फाइबर बिछाने की योजना पर तेजी से काम हो रहा है। गांवों के सामाजिक जीवन में क्रांतिकारी बदलाव की शुरूआत हो गई है, उन्हें अपनी जमीन का मालिकाना हक का दस्तावेज मिलने लगा है। भूमि रिकार्ड का डिजिटलीकरण ग्रामीण क्षेत्रों को सशक्त और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। रिहाइशी भूमि का डिजिटल नक्शा बन रहा है। अप्रैल 2024 तक सभी 6.62 लाख गांवों को स्वामित्व योजना के तहत कवर किया जाएगा। नीतिगत मोर्चे पर पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम का एक बड़ा योगदान पुरा (पीयूआरए) था, यानी ग्रामीण इलाकों में शहरी सुविधाएं मुहैया कराना। इस अवधारणा के माध्यम से वे देश के शहरी व ग्रामीण इलाकों के बीच की बुनियादी असमानताओं को दूर करना चाहते थे। कोरोना की संभावित तीसरी लहर को बेअसर करने के लिए बड़े पैमाने पर ग्रामीण अभियान की शुरुआत

करके इस असमानता को दूर करने की दिशा में भी नीतिगत कदम उठाया जाना जरूरी है।

इस समय कई औद्योगिक राज्यों से बड़ी संख्या में प्रवासी श्रमिक अपने गांवों की ओर लौटे हैं, ऐसे में मनरेगा को एक बार फिर प्रवासी श्रमिकों के लिए जीवन रक्षक और प्रभावी बनाना होगा। हाल में प्रकाशित एसबीआई की रिसर्च रिपोर्ट के मुताबिक अप्रैल 2021 में मनरेगा के तहत गांवों में काम की मांग अप्रैल 2020 के मुकाबले लगभग दोगुनी हो गई है। गरीब कल्याण रोजगार अभियान के तहत प्रवासी मजदूरों को गांव में ही राजगार उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जी ने ठीक ही कहा है कि ''हमारे देश में गरीबों की बात बहुत हुई है लेकिन गरीबों के लिए जितना काम इस शासनकाल में हुआ है, उतना पहले कभी नहीं हुआ।'' प्रवासी मजदूरों के लिए नेशनल डाटा बेस बन रहा है। रेहड़ी–पटरी वालों के लिए स्वरोजगार में सहयोग के लिए केंद्र सरकार की ओर से शुरू की गई पीएम स्वनिधि योजना से रेहड़ी–पटरी वालों को बड़ी राहत मिल रही है। पीएम स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) के तहत देश के 50 लाख रेहड़ी–पटरी वालों के लिए 10 हजार रूपए के ऋण की व्यवस्था की गई है। आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्णों को 10 प्रतिशत आरक्षण का लाभ दिया गया है। दिव्यांगों का आरक्षण कोटा 3 से बढ़ाकर 5 फीसदी तक किया गया है। ट्रांसजेंडर्स को नई पहचान मिल रही है। केन्द्र सरकार की ओर से मात्र 12 रुपए सालाना प्रीमियम के भुगतान पर प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना और 330 रुपये सालाना प्रीमियम के भुगतान पर प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना उपलब्ध कराई गई। इन दोनों बीमा योजनाओं के तहत 33 करोड़ से ज्यादा लोग बीमित हैं।

केंद्र सरकार विश्व स्तरीय शहरी केंद्रों के निर्माण के साथ–साथ गांवों को भी सुविधा प्रदान कर रही है जो 'ईज ऑफ लिविंग' को बढ़ाने वाला और देश परिवर्तन में योगदान वाला साबित हो रहा है। नए कृषि सुधारों और ई–एनएएम से वन नेशन, वन एग्रीकल्चर मार्केट की दिशा में देश आगे बढ़ रहा है। 'वन नेशन, वन राशन कार्ड' के जरिए एक स्थान से दूसरे स्थान जाने वाले नागरिकों को नया राशन कार्ड बनाने के चक्करों से मुक्ति मिल गई है। 'वन नेशन वन हेल्थ एंश्यारेंश' के तहत देश के करोड़ों लोग देश में कहीं भी 5 लाख रुपये तक का लाभ ले सकते है। 'वन नेशन, वन मोबिलिटी कार्ड के तहत पूरे देश में मेट्रो, बस, कैब, मोनो रेल और सभी अर्बन रेलवे में राष्ट्रीय कॉमन मोबिलिटी कार्ड अर्थात एक ही कार्ड से सभी तरह के परिवहन साधनों में यात्रा की सुविधा उपलब्ध है। 'वन नेशन, वन फास्ट टैग' के तहत देश के राजमार्गों पर यात्रा की गति बिना बाधा के तीव्र हुई है। 'एक देश, एक पावर ग्रिड' ऊर्जा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। इससे देश के हर हिस्से में पर्याप्त बिजली की उपलब्धता सुनिश्चित हो रही है। 'एक देश, एक गैस ग्रिड' से उन हिस्सों की निर्बाध गैस कनेक्टिविटी सुनिश्चित हो रही है जहां गैस आधारित जीवन पहले सपना हुआ करता था। इस योजना के तहत देश के सभी घरों में एलपीजी गैस और वाहनों के ईंधन के लिए सीएनजी गैस उपलब्ध करायी जाएगी। 'एक देश, एक गैस ग्रिड' के कारण कम खर्च में फर्टिलाइजर बन सकेंगे। साथ ही बिजली और केमिकल जैसे उद्योगों को भी लाभ मिलेगा और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। विदेशी मुद्रा का खर्च भी कम हो जाएगा। 'एक देश, नौकरी की एक परीक्षा' के तहत राष्ट्रीय भर्ती एजेंसी के माध्यम से परीक्षा आयोजित करके अब अलग–अलग सरकारी नौकरी के लिए अलग–अलग परीक्षा के जाल से मुक्ति मिल गई है। एक देश, एक टैक्स यानी जीएसटी के माध्यम से 'वन नेशन वन टैक्स' का सपना साकार हुआ और टैक्स के जाल से मुक्ति मिल गई है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों में ''आज हर हिंदुस्तानी कह सकता है कि वन नेशन, वन विधान। हम सरदार साहब के एक भारत, श्रेष्ठ भारत के सपने को चरितार्थ करने में लगे हुए हैं। हम ऐसी व्यवस्थाओं को विकसित करें जो देश की एकता को बल दें और यह प्रक्रिया निरंतर चलनी चाहिए।''

श्रमिकों के लिए आजाद भारत का सबसे बड़ा श्रम सुधार किया गया है। श्रम सुधार एक बड़ी क्रांति है जो देश को आगे ले जाने में सक्षम है। सभी श्रम कानूनों को अब चार कोड में जोड़ दिया है– मजदूरी कोड; सामाजिक सुरक्षा और कल्याण कोड; व्यवसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य परिस्थिति कोड; एवं औद्योगिक संबंध कोड। इससे पहली बार देश के सभी 50 करोड़ श्रमिकों को न्यूनतम मजदूरी का अधिकार मिल गया है, सबको सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाकर बीमा, पेंशन, ग्रेच्युटी, मातृत्व लाभ, कार्यस्थल पर महिलाओं की सुरक्षा आदि सुनिश्चित हुई है। पहली बार संगठित व असंगठित श्रमिकों की सुध लेते हुए नियोक्ता और कर्मचारियों के संबंधों को परिवार भाव में पिरोने की कोशिश की है। इसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय के सिद्धांत के तहत आगे बढ़ाया गया है। प्रधानमंत्री जी के ''श्रम योगी, राष्ट्र योगी'' के सिद्धांत पर श्रम सुविधा के पोर्टल के जरिए उद्योगों के लिए सहज रिटर्न की व्यवस्था की गई है। पहले के श्रम कानूनों में कई प्रावधान अंग्रेजों के शासनकाल के थे और कागजी पचड़े में उलझे रहने से श्रमिक और नियोक्ता दोनों के हितों की रक्षा की बजाय परेशानियों का सामना करना पड़ता था। कानून का जाल ऐसा था कि एक ही काम के लिए श्रमिकों को चार–चार फॉर्म भरने पड़ते थे। नियोक्ताओं को भी 1458 धाराओं और 937 अन्य बिंदुओं में बंटे तीन दर्जन के करीब कानूनों की वजह से श्रम विभाग के विभिन्न दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते थे। लेकिन नए भारत का नया लेबर कोड मांग आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देगा और विकास को अपेक्षित रफ्तार मिलेगी।

मार्च 2019 में शुरू की गई प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना के तहत रेहड़ी–पटरी लगाने वालों, रिक्शा चालक,

निर्माण कार्य करने वाले मजदूर और इसी तरह के अनेक अन्य कार्यों में लगे असंगठित क्षेत्र से जुड़े लोगों को अपना बुढ़ापा सुरक्षित करने में मदद मिलेगी। इसमें प्रतिमाह 15 हजार रुपये से कम कमाने वाले लोग न्यूनतम 55 रुपये का प्रीमियम प्रतिमाह देकर 60 वर्ष की उम्र के बाद 3 हजार रुपये प्रतिमाह पेंशन के हकदार होते हैं। गरीबों को बुढ़ापे में सुरक्षित आधार देने के बाद प्रधानमंत्रीजी ने इसी तर्ज पर छोटे किसानों, छोटे व्यापारियों और स्व–रोजगार करने वालों के लिए पेंशन योजना की शुरुआत की है। डेढ़ करोड़ से कम के सालाना कारोबार वाले छोटे कारोबारी इस योजना का लाभ उठा सकते हैं।

सरकार की सोच ने देश और दुनिया में भारत का मान बढ़ाया है जिसमें जनभागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है जो नवनिर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रही है। केन्द्र सरकार का मजबूत निर्णायक नेतृत्व भी जवाबदेही के साथ समय पर निर्णय ले रहा है। कोरोना जैसी अनिश्चित एवं विपरीत परिस्थिति में सरकार हरसंभव कदम उठा रही है। जब हम भारतीय एक मन करके संकल्प और सामर्थ्य के साथ निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जुट जाते हैं तो यह भारत की ताकत है कि हम देश को संकटों से बाहर निकाल देते हैं।

हर भारतवासी प्रगति के लिए अधीर है। केन्द्र सरकार नए भारत और भारत के युवाओं की इस भावना को समझती है, 137 करोड़ से अधिक भारतीयों की आकांक्षाएं देश को तेजी से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। ऐसे में दशकों से लंबित परियोजनाओं और समुचित विकास का इंतजार करते क्षेत्रों में मोदी सरकार ने तकनीक को आधार बनाकर पहले 5 साल के कार्यकाल में नींव डाली तो अब 2 साल में नए कीर्तिमान स्थापित किए ताकि काम रूके ना, देश झुके ना।

15 अगस्त 2019 को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश को हर घर को नल के जरिए स्वच्छ जल देने के संकल्प का ऐलान किया था। इसी संकल्प के तहत जल जीवन मिशन के अधिकारियों ने इंफिल्ट्रेशन गैलरी तकनीक को अपनाकर लद्दाख के –30 डिग्री सेल्सियस तापमान के बीच नलों से बिना जमे पानी की सप्लाई का वो करिश्मा कर दिखाया, जो दुनिया में कोई नहीं कर पाया। जल जीवन मिशन के तहत देश के लगभग 19.20 करोड़ परिवारों को वर्ष 2024 तक नल कनेक्शन देने का लक्ष्य है। आजादी के बाद से वर्ष 2019 तक 3.23 करोड़ परिवारों को ही नल कनेक्शन मिल पाया था। किंतु पिछले दो वर्षों में ही चार करोड़ से ज्यादा नए परिवारों को जल जीवन मिशन के तहत नल कनेक्शन मिल चुके हैं जो उल्लेखनीय है।

अक्सर पर्यावरण की मंजूरी विकास की परियोजनाओं की गति थाम लेती थी जिससे हाई–वे, एक्सप्रेस–वे, ग्रीन एक्सप्रेस–वे का निर्माण लंबे समय तक के लिए अटक जाता था। अगर मंजूरी मिलती थी तो जितने पेड़ काटे जाते हैं उतनी ही संख्या में पेड़ लगाने पड़ते थे। लेकिन केंद्र सरकार की दूरगामी सोच ने इस पूरी पद्धति को ही बदल दिया है। अब पेड़ों का प्रत्यारोपण प्रत्येक परियोजना का हिस्सा बन रहा है। पेड़ों के प्रत्योरोपण की इस नई तकनीक से विकास भी होगा और पारिस्थिकी व पर्यावरण की भी रक्षा होगी। निश्चित तौर से पर्यावरण के प्रति मानवता का इससे बड़ा योगदान नहीं हो सकता कि पेड़ काटने की जरूरत नहीं पड़े और प्रगति के पथ पर देश अग्रसर भी हो।

महान संत तिरूवल्लूवर ने सैकड़ों वर्ष पूर्व कहा था, ''मरमानम मांड वडिच्चेलव् तेट्रम येना नान्गे येमम पडईक्कु'' अर्थात शौर्य, सम्मान, मर्यादापूर्ण व्यवहार की परम्परा और विश्वसनीयता – ये चार गुण किसी भी देश की सेना का प्रतिबिंब होते हैं। भारतीय सेना उनके कहे इसी मार्ग पर चल रही है। पिछली सरकार ने तीनों सेनाओं की बुनियादी जरूरतों तक को अनदेखा किया था। पूर्व नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक की संसद में पेश रिपोर्ट में साफ कहा गया था कि, ''खतरे का न्यूनतम स्वीकार्य स्तर आ जाने के बावजूद हथियारों का भंडार सुनिश्चित नहीं किया गया। मार्च 2013 में सेना में इस्तेमाल होने वाले कुल 179 किस्म के हथियारों में से 125 का भंडारण और उपलब्धता खतरे के इस स्तर से भी नीचे जा चुकी थी।'' इसके अलावा जो 50 किस्म के दूसरे हथियार इस स्तर तक नहीं पहुंचे थे, उनका भंडारण और उपलब्धता भी बेहद नाजुक स्थिति में थी। हालत ये थी कि किसी भी के साथ युद्ध की स्थिति में हमारे पास 10 दिन के हथियार भी नहीं थे। इस नाजुक और खतरनाक स्थिति को पूरी तरह सुधार दिया गया है। केन्द्र सरकार ने रक्षा उत्पादन में मेक इन इंडिया की पहल की और सेना के लिए जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण में इतनी तेजी लाई कि दुश्मन देश की भी भृकुटि तन गई। देश के रक्षा क्षेत्र का कायापलट हो गया है। सेना के आधुनिकीकरण के अलावा बीते 43 वर्षों से लंबित वन रैंक वन पेंशन लागू करना भी मोदी सरकार के ऐतिहासिक फैसलों में से एक है।

मोदी सरकार रक्षात्मक नहीं बल्कि आक्रमक रक्षा नीति में भरोसा करती है। पाकिस्तान और चीन, दोनों इसे बेहतर समझते हैं। आतंक की चरागाह बने पाकिस्तान में घुसकर भारत ने उसे दो बार ऐसा सबक सिखाया जिसकी उसने कल्पना तक नहीं की थी। इस प्रखर राष्ट्रवाद ने चीन की नींद भी उड़ा दी है। अपनी कूटनीति के बल पर चीन और पाकिस्तान को अलग–थलग कर भारत दुनिया का भरोसा जीतने में सफल रहा है। उरी सर्जिकल स्ट्राइक, बालाकोट एयर स्ट्राइक ने बता दिया है कि भारत अब बदल रहा है। देश के ऐसे दर्जनों उदाहरण है जो न सिर्फ संभव हुए हैं बल्कि बेड़ियों को तोड़ नए भारत की दशा–दिशा निर्धारित कर रहे हैं।

पड़ोसियों के साथ बेहतर रिश्तों के लिए 'पड़ोसी प्रथम' और सुदूर देशों के साथ संबंधों को आयाम देने की दिशा में 'विस्तारित पड़ोसवाद' की नीति प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की

विदेश नीति का आधार बनी। उन्होंने दुनिया भर में नए मित्र बनाने के साथ–साथ पुराने मित्रों के साथ संबंधों को मजबूत करते हुए नए सिरे से भारत की विदेश नीति में जोश भरा। उनकी नई सोच से भारत के प्रति दुनिया की सकुचाहट भी दूर होने लगी और कोरोना काल में 'वसुधैव कुटुंबकम की भावना के साथ दुनिया में एक बेहतरीन नेतृत्व के तौर पर भारत उभरा है। वैश्विक महामारी कोराना से निपटने के लिए मोदी जी की पहल पर ही वैश्विक वर्चुअल सम्मेलनों की शुरूआत हुई और उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय नेताओं के साथ विचार–विमर्श कर विश्व का नेतृत्व किया। उन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, खाड़ी देशों, पश्चिमी एशिया के देशों के साथ आपसी सहयोग को मजबूत किया तो जी–20, गुट निरपेक्ष (एनएएम) देशों के सम्मेलन में हिस्सा लिया। अमेरिका, जापान और आस्ट्रेलिया के साथ भारत क्वॉड समूह का महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदार है। एशिया और प्रशांत क्षेत्र के रणनीतिक लिहाज से यह साझेदारी बेहद महत्वपूर्ण है। क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (आरसीईपी), आसियान के 10 सदस्य देशों और आस्ट्रेलिया, चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, न्यूजीलैंड जैसे पांच देशों द्वारा अपनाया गया एक मुक्त व्यापार समझौता है। लेकिन विश्व के दवाब में आए बिना मोदी जी ने अपनी बात रखी। उन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि हम पारस्परिक सहयोग की भावना से कार्य करते हैं, लेकिन अपने हितों का त्याग नहीं कर सकते।

दुनिया के अलग–अलग देशों में रह रहे भारतीयों को आज यह विश्वास है कि जब भी उन पर कोई विपदा आएगी तो मोदी सरकार तुरंत उन तक पहुंचेगी और उनकी हरसंभव सहायता करेगी। यह विश्वास पिछले सात वर्षों से बना है। पहले संकटग्रस्त क्षेत्रों में राहत और बचाव की कूटनीतिक और रणनीतिक क्षमता दुनिया के दो–तीन गिने–चुने देशों के पास ही थी, लेकिन आज भारत एक प्रमुख शक्ति बन कर उभरा है। हमारे राहत एवं बचाव कार्यों की पूरी दुनिया में सराहना होती है। वर्ष 2014 के बाद से भारत ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सफलतापूर्वक कई बड़े अंतर्राष्ट्रीय बचाव अभियान चलाए हैं। पिछले वर्ष जब दुनिया भर में कोविड महामारी फैली तब भारत ने मई 2020 से 'वंदे भारत मिशन' आरंभ किया। इसके तहत 24 जुलाई, 2020 तक 88000 से अधिक उड़ानें स्वास्थ्य संबंधी प्रोटोकॉल की प्रक्रियाओं के सख्त अनुपालन के तहत संचालित की गईं और सौ से अधिक देशों से 70 लाख से अधिक नागरिकों को स्वदेश वापस लाया गया। यहां तक कि वुहान से भी भारतीयों की सुरक्षित वापसी सुनिश्चित की गई। इससे पहले वर्ष 2014 में जब इराक गृह युद्ध में फंसा था और वहां 46 भारतीय नर्सों को आईएसआईएस के आतंकवादियों द्वारा तिकरित के एक अस्पताल में 23 दिनों से बंधक बनाए रखा गया था, तब यह भारत सरकार का कूटनीतिक प्रयास ही था जिसके जरिए 'ऑपरेशन संकट मोचन' के तहत इन सभी नर्सों को वहां से सुरक्षित स्वदेश वापस लाया गया।

वर्ष 2015 में जब यमन में संघर्ष चरम पर था तो वहां कई देशों के लोग फंस गए थे। भारत ने 'आपरेशन राहत' चलाकर न केवल भारतीय बल्कि अन्य देशों के नागरिकों को भी वहां से सुरक्षित निकाला। वर्ष 2015 में ही रॉयल सऊदी वायु सेना ने अरब राज्यों के गठबंधन का नेतृत्व करते हुए जब यमन के हूती विद्रोहियों पर हमला कर दिया तब भी भारत सरकार ने अपने कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से समुद्री और हवाई मार्गों से 'ऑपरेशन राहत' के जरिए 4500 से अधिक भारतीयों के साथ 41 देशों के कम से कम 900 नागरिकों को सफलतापूर्वक बाहर निकाला था। वर्ष 2016 में ब्रसेल्स में हुए बम ब्लास्ट में फंसे लगभग 250 भारतीयों को जेट एयरवेज के कर्मचारियों सहित सुरक्षित वापस लाया गया। वर्ष 2016–17 में मोदी सरकार ने यूक्रेन में फंसे 1000 छात्रों और इराक में फंसे 7000 भारतीयों को सुरक्षित निकाला जिनमें सैकड़ों नर्सें भी शामिल थीं।

21वीं सदी में कूटनीति में सफलता पाने के लिए चार तत्वों का मिश्रण आवश्यक है– सैन्य शक्ति, सामरिक साझेदारियां, निरंतर आर्थिक वृद्धि और सॉफ्ट पॉवर को बढ़ावा देती नीति। इस लिहाज से भारत ने कुछ उपलब्धियां हासिल की हैं, पर इसमें उल्लेखनीय बदलाव तब आया जब मोदी सरकार ने अमेरिका के साथ सामरिक संबंधों में बेझिझक छलांग लगाई। इससे भारत गुटनिरपेक्षता के चंगुल से निकला और सामरिक तौर पर विश्व पटल पर धाक जमाई। भारत आज बाहरी शत्रुओं के साथ दृढ़ता से पेश आ रहा है। आज चीनी तानाशाही के मंसूबे भयावह हो गए हैं। इसे देखते हुए पश्चिम और पूर्व के कई देश चाहते हैं कि भारत लोकतांत्रिक महाशक्ति बने।

भारत ने विगत 74 वर्षों में गजब की आर्थिक तरक्की की है। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की एक बैठक को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्रीजी ने कहा कि आज भारत सॉफ्टवेयर से लेकर सेटेलाइट तक के जरिये दूसरे देशों के विकास को गति दे रहा है और दुनिया के विकास में प्रमुख इंजन की भूमिका निभा रहा है। कोरोना के हमले के बावजूद दुनिया मानती है कि हम आज नहीं तो कल, शीर्ष तीन आर्थिक महाशक्तियों के क्लब में शामिल हो जाएंगे। इस वर्ष जीडीपी का अनुमान 9.5 प्रतिशत लगाया जा रहा है और साक्षरता दर भी 78 प्रतिशत तक पहुंच गई है। शिशु मृत्यु दर भी प्रति हजार 28 पर आ पहुंची है और आम आदमी की जीवन प्रत्याशा दर अब लगभग 70 वर्ष है।

जून 2020 में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की अस्थायी सदस्यता के चुनाव में भारत ने 192 देशों में से सर्वाधिक 184 मत प्राप्त करके सिद्ध किया कि आज हमारी जो साख है वह विकासशील देशों में अव्वल है। सामरिक लचीलापन, छोटे बहुपक्षीय गठबंधन, मुक्त व्यापार संधियां, भारतीय संस्कृति और आधुनिकीकरण का दुनिया के कोने–कोने तक प्रचार की रणनीति से ही आने वाले दशकों में भारत महाशक्ति बन सकता है। अगले 25 वर्ष देश के उत्थान में सबसे महत्वपूर्ण होंगे।

देश के गुमनाम स्वतंत्रता सेनानीः शहीद करतार सिंह सराभा

सुधा वोहरा*

कई सदियों की दासता से मुक्ति पाने के लिए हमारे देश के असंख्य लोगों ने उन्नीसवीं सदी के मध्य से शुरु हुए स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लिया था। हर जाति–धर्म के धनी–निर्धन, शिक्षित–अशिक्षित युवक–युवतियों, बच्चों, बुजुर्गों ने अपनी सुविधाओं एवं उम्र की परवाह किए बिना खुद को देश के नाम समर्पित करते हुए विभिन्न प्रकार से औपनिवेशिक साम्राज्य के खिलाफ विद्रोह का झंडा बुलंद किया था। जगह–जगह हो रहे विद्रोहों को कुचलने हेतु अंग्रेजी हुकूमत ने स्वतंत्रता सेनानियों को अनेकों तरह से प्रताड़ित किया। हजारों लोगों को फाँसी के फंदे पर लटका दिया गया तो लाखों लोगों को अंडमान में कालापानी की सजा या फिर लंबी अवधि की कैद की सजा दी गयी। परंतु स्वतंत्रता सेनानी आजादी के एक ही ध्येय के साथ आगे बढ़ते रहे और अंततः हमारे देश ने 15 अगस्त 1947 को ब्रिटिश हुकूमत से आजादी हासिल कर ली। इसीलिए, हर साल 15 अगस्त के दिन आजादी का जश्न मनाने के साथ–साथ हम स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को भी याद करते हैं। आजादी के 75वें वर्ष को पूरे देश में 15 अगस्त 2022 तक 'आजादी का अमृत महोत्सव' के रूप में मनाया जा रहा है। इसकी घोषणा करते हुए प्रधानमंत्री जी ने कहा, 'यह ऐसा पर्व होना चाहिए जिसमें देश के शहीदों को श्रद्धांजलि भी हो और उनके सपनों का भारत बनाने का संकल्प भी। जिसमें सनातन भारत के गौरव की भी झलक हो, आधुनिक भारत की चमक भी हो।'' आजादी का अमृत महोत्सव में किसी भी रूप में प्रतिभागिता करना हम सब के लिए गौरव की बात है। साथ ही उन असंख्य आत्म–बलिदानी नेताओं और लाखों लोगों, जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति दी थी, के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने का एक सुअवसर भी है। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले अनेकों महान नेताओं/क्रांतिकारियों/सेनानियों से हम सब परिचित हैं परंतु कई क्रांतिकारी ऐसे भी थे जिनके बारे में ज्यादा जानकारी आम जनता को नहीं है जबकि भारत की आजादी की खातिर उन्होंने अल्पावस्था में ही अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। ऐसे ही एक गुमनाम महान किशोर क्रांतिकारी थे – शहीद करतार सिंह सराभा।

शहीद करतार सिंह सराभा का जन्म 24 मई 1896 को लुधियाना (पंजाब) जिले के सराभा गांव में हुआ। उनके पिता का नाम सरदार मंगल सिंह और माता का नाम साहिब कौर था। दुर्भाग्यवश बचपन में ही उनके सिर से पिता का साया उठ गया था। उनका पालन–पोषण उनके दादाजी सरदार बदन सिंह ने किया। सराभा ने अपनी शुरुआती शिक्षा लुधियाना में ही प्राप्त की थी। नौवीं कक्षा पास करने के बाद वह अपने चाचा के पास उड़ीसा चले गए और वहीं से हाई स्कूल की परीक्षा पास की। उड़ीसा उन दिनों बंगाल प्रांत का हिस्सा था, जो राजनीतिक रूप से अधिक सचेत था। वहां के माहौल में सराभा ने स्कूली शिक्षा के साथ अन्य ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ना भी शुरू कर दिया था। दसवीं कक्षा पास करने के उपरांत उनके परिवार ने उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए उन्हें अमेरिका भेजने का निर्णय लिया और 01 जनवरी 1912 को सराभा ने अमेरिका की धरती पर पांव रखा। सराभा गांव का रुलिया सिंह 1908 में ही अमेरिका पहुंच गया था और अमेरिका–प्रवास के प्रारंभिक दिनों में सराभा उन के पास ही रहे। यह कहा जाता है कि उनके दिलो–दिमाग में राष्ट्रीय अस्मिता, आत्मसम्मान व आजादी की चेतना तब ही शुरु हो गयी थी जब आव्रजन अधिकारी ने उनसे अमेरिका आने का कारण पूछा था और सराभा ने बर्कले विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त करना अपना उद्देश्य बताया था। अधिकारी द्वारा उतरने की अनुमति न दिए जाने के प्रश्न के उत्तर में सराभा ने तर्कपूर्ण उत्तर देकर अधिकारी की संतुष्टि करवा दी थी। वहां उन्होंने पढ़ाई के लिए मजदूरी करनी शुरू कर दी। वहां उन्होंने जब मजदूरों के साथ नस्लीय भेदभाव होते देखा तो अंग्रेजों के खिलाफ उनके दिल में नफरत भर गई। उसी समय उनका संपर्क लाला हरदयाल

* *आशुलिपिक ग्रेड – I, वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, सैक्टर–24, नौएडा*

से हुआ, जो अमेरिका में रहते हुए भी भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रयत्नशील थे। 25 मार्च 1913 को ऑरेगन प्रांत में भारतीयों की एक बहुत बड़ी सभा हुई, जिसके मुख्य वक्ता लाला हरदयाल थे। उन्होंने सभा में भाषण देते हुए कहा था, 'मुझे ऐसे युवकों की आवश्यकता है, जो भारत की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राण दे सकें।' इस पर सबसे पहले करतार सिंह सराभा ने उठकर अपने आपको पेश किया। तालियों की गड़गड़ाहट के बीच लाला हरदयाल ने सराभा को अपने गले से लगा लिया। लाला हरदयाल और भाई परमानंद के संपर्क में आने पर धीरे–धीरे सराभा के मन में देशभक्ति की तीव्र भावनाएं जागृत हुईं और वह देश के लिए मर–मिटने का संकल्प लेने की ओर अग्रसर होने लगे। 21 अप्रैल 1913 को अमेरिका में भारतीयों ने गदर पार्टी की स्थापना की और 'गदर' नाम का साप्ताहिक अखबार निकालने का फैसला किया जिसकी जिम्मेदारी करतार सिंह सराभा को सौंपी गई। इस अखाबर में देशभक्ति से परिपूर्ण जोशीली कविताएं छपती थीं जिसका लोगों पर काफी असर हुआ। सराभा ने गुप्त रूप से क्रांतिकारियों से मिलने का निश्चय किया, ताकि भारत में विद्रोह की आग जलाई जा सके। इस मकसद से उन्होंने सुरेंद्रनाथ बनर्जी, रासबिहारी बोस, शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि क्रांतिकारियों से भेंट की। उनके प्रयत्नों से जालंधर की एक बगीची में एक मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें पंजाब के सभी क्रांतिकारियों ने भाग लिया। इस समय सराभा की उम्र महज 19 साल थी। इस मीटिंग में पंजाब के क्रांतिकारियों ने यह सुझाव दिया कि रासबिहारी बोस को पंजाब में आकर क्रांतिकारियों का संगठन बनाना चाहिए। तदनुसार रासबिहारी बोस ने पंजाब आकर सैनिकों का संगठन बनाया। इसी समय उन्होंने विद्रोह के लिए 'गदर' यानी स्वतंत्रता संग्राम की एक योजना भी बनाई। इस योजना के अनुसार समस्त भारत में फौजी छावनियां एक ही दिन और एक ही समय में अंग्रेज सरकार के विरुद्ध विद्रोह करेंगी। इसके लिए लगभग आठ हजार भारतीय अमेरिका और कनाडा जैसे देशों में सुख–सुविधाओं से भरी ज़िंदगी छोड़ कर भारत को अंग्रेजों से आजाद करवाने के लिए समुद्री जहाजों से भारत पहुंचे थे। 'गदर' आंदोलन शांतिपूर्ण आंदोलन नहीं था, यह सशस्त्र विद्रोह था, लेकिन 'गदर पार्टी' ने इसे गुप्त रूप न देकर खुलेआम इसकी घोषणा की थी और गदर पार्टी के पत्र 'गदर', जो पंजाबी, हिंदी, उर्दू व गुजराती चार भाषाओं में निकलता था, के माध्यम से इसका समूची भारतीय जनता से आह्वान किया था। अमेरिका की स्वतंत्र धरती से प्रेरित हो अपनी धरती को स्वतंत्र करवाने का यह शानदार आह्वान 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से प्रेरित था और ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने जिसे अवमानना से 'गदर' नाम दिया, उसी 'गदर' शब्द को सम्मानजनक रूप देने के लिए अमेरिका में बसे भारतीय देशभक्तों ने अपनी पार्टी और उसके मुखपत्र को ही 'गदर' नाम से विभूषित किया। जैसे 1857 के 'गदर' यानी प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कहानी बड़ी रोमांचक है, वैसे ही स्वतंत्रता के लिए दूसरा सशस्त्र संग्राम यानी 'गदर' भी चाहे असफल रहा लेकिन इसकी कहानी भी कम रोचक नहीं है। अंग्रेजों के खिलाफ 'गदर' यानी स्वतंत्रता संग्राम के लिए 21 फरवरी 1915 का दिन तय किया था। लेकिन गद्दार मुखबिर किरपाल सिंह ने ब्रिटिश सरकार को इसकी सूचना दे दी। इस बात की भनक जब क्रांतिकारियों को लगी तो उन लोगों ने विद्रोह की तारीख 19 फरवरी कर दी परंतु इसके बारे में भी अंग्रेजों को पता लग गया। इसके बाद अंग्रेज शासन ने अन्य क्रांतिकारियों के साथ–साथ करतार सिंह सराभा के खिलाफ भी कार्रवाई शुरू कर दी। उन्होंने अपने साथियों के साथ अपने एक हमदर्द के यहां शरण ली हुई थी लेकिन वह भी गद्दार निकला और सभी को गिरफ्तार करवा दिया। करतार सिंह सराभा और उनके साथियों के खिलाफ राजद्रोह, डकैती और कत्ल का मुकदमा चलाया गया। अदालत ने सराभा समेत सभी 24 क्रांतिकारियों को फांसी की सजा सुनाई।

16 नवंबर 1915 को साढ़े उन्नीस साल के युवक करतार सिंह सराभा को उनके छह अन्य साथियों बख्शीश सिंह (ज़िला अमृतसर); हरनाम सिंह (ज़िला स्यालकोट); जगत सिंह (ज़िला लाहौर); सुरैण सिंह व सुरैण, दोनों (ज़िला अमृतसर) व विष्णु गणेश पिंगले (ज़िला पूना, महाराष्ट्र) के साथ लाहौर जेल में फांसी पर चढ़ा कर शहीद कर दिया गया। सराभा और उनके साथी हंसते–हंसते फांसी के फंदे पर झूल गए। विश्व स्तर पर चले 'गदर' आंदोलन में दो सौ से ज्यादा लोग शहीद हुए, 315 से ज्यादा ने अंडमान जैसी जगहों पर काले पानी की उम्रकैद भुगती और 122 ने कुछ कम लंबी कैद भुगती। सैकड़ों पंजाबियों को गांवों में वर्षों तक नज़रबंदी झेलनी पड़ी। उस आंदोलन में पंजाब के उपरोक्त क्रांतिकारियों के साथ बंगाल से रास बिहारी बोस व शचीन्द्रनाथ सान्याल, महाराष्ट्र से विष्णु गणेश पिंगले व डॉ. खानखोजे, दक्षिण भारत से डॉ. चेन्चय्या व चंपक रमण पिल्लै तथा भोपाल से बरकतुल्ला आदि ने हिस्सा लेकर उसे एक ओर राष्ट्रीय रूप दिया तो शंघाई, मनीला, सिंगापुर आदि अनेक विदेशी नगरों में हुए विद्रोह ने इसे अंतर्राष्ट्रीय रूप भी दिया। 1857 की भांति ही 'गदर' आंदोलन भी सही मायनों में धर्म निरपेक्ष संग्राम था जिसमें सभी धर्मों व समुदायों के लोग शामिल थे।

गदर पार्टी आंदोलन की यह विशेषता भी रेखांकित करने लायक है कि विद्रोह की असफलता से गदर पार्टी समाप्त नहीं हुई, बल्कि इसने अपना अंतर्राष्ट्रीय अस्तित्व बचाए रखा व भारत में एवं विदेशों में अलग अस्तित्व बनाए रखकर गदर पार्टी ने भारत के स्वाधीनता संग्राम में महत्त्वपूर्ण योगदान किया। आगे चल कर 1925–26 से पंजाब का युवक विद्रोह, जिसके लोकप्रिय नायक सरदार भगत सिंह बने, भी गदर पार्टी व करतार सिंह सराभा से अत्यंत रूप

में प्रभावित रहा। एक तरह से भगत सिंह का व्यक्तित्व व चिंतन गदर पार्टी की परंपरा को अपनाते हुए उसके अग्रगामी विकास के रूप में निखरा। यह अस्वाभाविक नहीं है कि करतार सिंह सराभा ही भगत सिंह के सबसे लोकप्रिय नायक थे, जिनका चित्र वे हमेशा अपनी जेब में रखते थे और पंजाब के नवयुवकों में आज़ादी की प्रेरणा जगाने के लिए 'नौजवान भारत सभा' की हर जनसभा में करतार सिंह सराभा के चित्र को मंच पर रख कर उन्हें पुष्पांजलि दी जाती थी।

करतार सिंह सराभा, गदर पार्टी आंदोलन के लोक नायक के रूप में अपने बहुत छोटे–से राजनीतिक जीवन के कार्यकलापों के कारण उभरे। कुल दो–तीन साल में ही सराभा ने अपने प्रखर व्यक्तित्व की ऐसी प्रकाशमान किरणें छोड़ीं कि देश के युवकों की आत्मा को उसने देशभक्ति के रंग में रंग कर जगमग कर दिया। करतार सिंह सराभा की यह गज़ल भगत सिंह को बेहद प्रिय थी, वे इसे अपने पास हमेशा रखते थे और अकेले में अक्सर गुनगुनाया करते थे:

'यहीं पाओगे महशर में जबां मेरी बयाँ मेरा,
मैं बन्दा हिन्द वालों का हूँ, है हिन्दोस्तां मेरा;
मैं हिन्दी ठेठ हिन्दी जात हिन्दी नाम हिन्दी है,
यही मजहब यही फिरका यही है खानदां मेरा;
मैं इस उजड़े हुए भारत का एक मामूली जर्रा हूँ,
यही बस इक पता मेरा यही नामो–निशाँ मेरा;
मैं उठते–बैठते तेरे कदम लूँ चूम ऐ भारत!
कहाँ किस्मत मेरी ऐसी नसीबा ये कहाँ मेरा;
तेरी खिदमत में ऐ भारत! ये सर जाये ये जाँ जाये,
तो समझूँगा कि मरना है हयाते–जादवां मेरा।'

महान किशोर क्रांतिकारी करतार सिंह सराभा सहित भारत माँ के उन असंख्य वीर सपूतों, जिन्होंने आजादी के आंदोलन में खुशी–खुशी अपने प्राण न्योछावर कर दिए थे, को आजादी के अमृत महोत्सव पर शत–शत नमन एवं विनम्र श्रृद्धांजलि। जय हिंद।

'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'

बीरेंद्र सिंह रावत*

कोरोना की मार से त्रस्त है दुनिया,
सर्वत्र दिख रहा इसका विकराल रूप।
धनी, निर्धन, बूढ़े, जवाँ, या हों बच्चे,
सभी शिकार हैं इसके प्रचंड वेग के,
अरु मिट रहे हैं ऐसे जैसे धागे कच्चे,
चाहे हों वह नौकर या हों कोई भूप।

भूप भी नहीं बचे जब इसके कहर से,
चहुं ओर दिख रहा यह असह्य संताप।
किसी ने खोए, किसी की सांसें थम गईं,
बेबसी के आज के इस भयंकर दौर में,
अनेक पीड़ितों को कंधे तक नसीब नहीं,
तो सब सोचें, किए क्या थे हमने पाप।

पाप पुण्य से कुछ न लेना–देना इसका,
मानव–निर्मित खतरनाक है यह वायरस।
चलता है वैज्ञानिकों से आगे कदम दो,
पल–पल में बदलता रहा है रूप अनेक,
विशेषज्ञ बोलें कि ये भी करके देख लो,
पर चल नहीं पा रहा है किसी का बस।

बस बहुत हो चुका, आइये सब मिलकर
कुंद करने की सोचते हैं इसकी दहाड़।
क्योंकि अभी तक तो यह होता था खुश,
देख भीड़भाड़ या लापरवाह कोई मानव,
अरु न मिलने पर बन जाया करता बुत,
पर अब पहुंचने लगा है गाँव एवं पहाड़।

पहाड़ की सड़क किनारे दिख जाता है
लिखा 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी'।
सर्वत्र प्रासंगिक दिख रही है यह बात,
हैं कुछ बहुत ही आवश्यक सावधानियाँ,
मास्क, दो गज दूरी, बार–बार धोएं हाथ,
नहीं तो, पता नहीं कब किसकी डोर कटी।

कटी–सी पतंग नहीं बनने दें जिंदगी को,
गुजर जाएगा जल्द ही यह भी बुरा दौर।
ज्ञान पर अपने करते हुए हम सब गरूर,
प्रकृति व संवेदनाओं से न करें खिलवाड़,
अरु सकारात्मकता के साथ सोचें ये जरूर,
काली निशा के बाद आता है सुनहला भोर।

* *वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

कहानी

एक शब्दहीन नदी

शैलेश मटियानी*

'माई डियर हंसा!'

'ले प्यारी, इस दफा तेरे आर्डर की मुताबिक, खुले पोस्टकार्ड की जगह पर बंद इंगलैंड लेटर भेज रहा हूँ। हकीकत तो यही हुई कि लवलेटर जरा सेक्रिट किस्म की वस्तु ही हुआ। इसमें दिल की गहराइयों को उतारना ठहरा। खैर, अब इस मुहरबंद चिट्ठी के आखरों को तेरे सिवा कोई दूसरा नहीं पढ़ सकेगा, प्यारी! वैसे भी तेरे दिल में छिपे मजमून के हरफों को एक सिर्फ मैं ही पढ़ सकने वाला ठहरा! सामने वाली खैरातीराम अस्पताल की बड़ी घड़ी में छोटी सुई एक–दो–ओ–करेक्ट तीन पर पहुँची हुई और बड़ी सुई चार, पाँच–छै से सात पर। ऐसे नाजुक टैम में मैं यहाँ अपने बोस की कोठी के बरामदे के फर्श पर बैठा हुआ...'

लिखते–लिखते, शंकरसिंह के हाथ का 'होल्डर' अपने–आप रुक गया। अगर हंसा को यह पता चल गया कि उसका शंकर सिंह रात–भर बरामदे के फर्श पर बैठा रहता है, तो? 'फर्श पर बैठा हुआ' को कई बार काटकर शंकर सिंह ने फिर शुरू किया –

मैं ऐसी नाजुक रात में पलंग पर लेटा हुआ बेचैनी से करवटें बदल रहा। ...सिर के ऊपर हरे नियोन बल्ब की रोशनी फैली हुई और दिल के अंदर तेरी याद का बल्व जल रहा।

'ओहो, इस समय तुम्हारे गाँव में मइया अष्टभुजा के मंदिर की पहाड़ी के आस–पास चंद्रमा जल रहा होगा... मगर तू तो खुद इस समय अंदर सोई हुई होगी, क्यों डियर? ज्यादा–से–ज्यादा तूने सोते समय मिट्टी का दिया जलाया मगर तेल ज्यादा जलने के डर से महतारी ने उसे भी साँझ–साँझ ही बुझा दिया होगा? यहाँ सबेरे–सबेरे तक हाई पावर बिजली के बल्ब जलते रहते मेरे बॉस की कोठी में। अलबत्ता बारा–एक बजे के बाद सिर्फ इस बरामदे में हरा बल्ब जलता रहता जिसके फर्श पर बैठा हुआ मैं इस समय तुझको यह इन्लैंड लेटर लिख रहा! कल सबेरे ही इसको लेटरबाक्स में ड्रोपिंग कर आऊँगा प्यारी! और कल सोला, परसों सत्तरा या नरसों अठारह तारीख जुलाई मंथ तक तो यह लव–लेटर तेरे पास तक जरूर पहुँच जाएगा! ...और फिर फस्ट अगस्त की रात को मेल बस से जिसको कि पहाड़ी में डाक की गाड़ी कहते लोग... तो उसी डाक गाड़ी से मैं खुद भी थुरू तेरे पास को रवाना हो जाऊँगा और सेकिंड को सुबेरे मुरादाबाद, फिर वहाँ से हलद्वानी में चेंजिंग कर, रात को अल्मोड़ा में किसी रॉयल होटल में काट करके, थर्ड की मॉरनिंग में वहाँ से भी थुरू रवाना होकर आफटरनून तक बानणी मइया की कृपा से तेरे पास पहुँच जाऊँगा जरूर!'

भावाकुलता के तीव्र प्रवाह में इस बार शंकर सिंह भूल ही गया कि पहले एक बार 'फर्श पर बैठा हुआ' काट चुका था। उसकी लेखनी आगे चलती रही –

'डियर, मेरे लिए खास अपने हाथों से भात और दाल–टपकिया पकाकर तैयार रखना। ...मन तो यही करता कि इसी वक्त सीधे, यहाँ से थुरू सफदरगंज के ऐरोड्रम पर पहुँच करके हवाई जहाज में बाई एयरफौरन तेरे पास पहुँच जाऊँ, मगर मन की बेचेनी और तन की मजबूरी में किसी कवि ने भी यही कहा कि – माटी तो यहाँ रही, मगर प्राण रहे पिया के पास! ...इसी सिलसिले में एक दोहा किसी और कवि ने यह भी ठीक ही जैसा कह रखा ठहरा कि – बिधना गति ऐसी करो, आप बसे परदेश – हंसा उड़ि–उड़ि परबत जावे, धरि कागा का भेष। धरि कागा का भेष रुलावे इन अंखियन को...'

चिट्ठी पर गिरे आँसू शंकर सिंह ने बड़े जतन से पोंछ लिए।

जब–जब हंसा की याद आती है, लगता है, किसी ऊँची पहाड़ी पर से नीचे को झुकती गई घाटी में से परदेश को जाते शंकरसिंह को लगातार आवाज देता जा रहा है कोई। घर छूटे अब चार वर्ष हो रहे हैं, मगर घाटी में शोर मचाती नदी–जैसी हंसा की आवाज निरंतर उतने ही वेग से आत्मा की गहराइयों में गूँजती रहती है। इस गूँज में भाषा पानी में पड़े नमक की तरह घुली मालूम पड़ती है। जब जैसा चाहे शंकरसिंह, तब वैसे शब्द छाँटकर अलग कर सकता है, लेकिन इसमें वक्त लगता है।

वेतन की रसीद पर सिर्फ 'दस्तखत शंकरसिंह चौकीदार' लिखने में ही अटक–अटक–कर आपस में टकरा जाने वाली उँगलियाँ हंसा को लंबी–लंबी चिट्ठियाँ लिखते समय इतनी हलकी हो जाती हैं कि लगता है, भीतर की गूँज पोरों से फूटती चली जा रही है। शब्दहीन गूँज, जो पर्वतों के बीच से नदियों–जैसी बहती चली आती है। जब–जब हंसा याद आती है, आँखों की काली पुतलियाँ शिलाजीत की चट्टानों की तरह पसीजती मालूम होती हैं। जीवन पहाड़ हो जाता है।

जागते–ए–ए रहो–ओ–ओ...

उधर से डबलस्टोरी कॉलोनी के चौकीदार की बुलंद आवाज रात के सन्नाटे को चीरती आई, तो मिस्टर अहलूवालिया का

* *वरिष्ठ साहित्यकार*

ऊपर के बरामदे में सोया बुलडॉग भी जोर–जोर से भौंक उठा।

होल्डर–दवात एक ओर जल्दी–जल्दी सरकाकर, शंकरसिंह उठा और टार्च लाठी लिए बरामदे से बाहर निकल आया। चौकीदार की आवाज और बुलडॉग का भौंकना सुनकर मिस्टर अहलूवालिया अक्सर ऊपर के बरामदे में निकल आते हैं। नीचे झाँककर शंकरसिंह को चौकीदारी के वक्त में चिट्ठी लिखता हुआ देख लें, तो शायद नौकरी से ही निकाल दें।

संभव तो यह भी हो सकता है कि वो नीचे उतरकर, शंकरसिंह के हाथों से चिट्ठी लेकर अपनी आदत के अनुसार, पूरे साहबी लहजे में जोर–जोर से पढ़ना ही शुरू कर दें? पहली ही पंक्ति पढ़ें – माई डियर हंसा! ...और तुरंत बिगड़ उठें कि – ऐ पहाड़ी, क्या तुमको हमने यहाँ लवलेटर लिखने को रखा है बंगले पर?

इधर मिस्टर अहलूवालिया का अस्तित्व शंकरसिंह के लिए ईश्वर से भी ज्यादा महत्वपूर्ण बन चुका है। अगले महीने, दो महीनों का अग्रिम वेतन और पंद्रह दिनों की छुट्टी देने का आश्वासन उन्होंने शंकरसिंह को दे रखा है। जब से यह आश्वासन मिला है, शंकरसिंह को हर समय अपनी आँखों में तुलसी के बिरवे पर फैले कद्दू की बेल के जाल–जैसा भारी लगने लगा है और इसे एकदम जल्दी–जल्दी हटाने के प्रयत्नों में उसकी अंतरात्मा तेज धूप में खूँटे से बँधे–बँधे उछल–कूद मचाने वाले लैरुआ बछड़े की तरह हाँफ–हाँफ उठती है। समय व्यर्थ ही तोड़े गए कद्दू के पत्तों की तरह हथेलियाँ और आँखों पर फैलता इन्हें ढँकता चला जाता है। एक–एक क्षण ऐसे टूट–टूट के बीतता है कि पतझड़ के असंख्य पत्तों से ढँके छोटे–से सरोवर जैसी लगने लगती है जिंदगी... और गोता मारकर सतह पर फैले पत्तों को हटाती मछली की तरह, शंकरसिंह भी कहीं अपने ही भीतर डुबकी लगाने को विवश हो जाता है।

दूर–दूर तक देखने पर भी हंसा की सूरत, काँपते होठों पर रखी हथेली–जैसी, आँखों की पुतलियों पर से परे हटाए नहीं हटती। इतने बड़े दिल्ली शहर में शंकरसिंह को अपना अकेलापन काटना कठिन हो जाता है। कुछ ऐसी वीरानी–सी अनुभव होती है कभी–कभी कि आदमियों की बस्ती में एक घुघ्घु होकर रह जाता है शंकरसिंह।

मिस्टर अहलूवालिया की कोठी में आने से पहले शंकरसिंह, डबल–स्टोरी कॉलोनी में चौकीदारी करता था और रात–भर जागता तमाम घरों में कहीं ऐसी जगह टटोलता फिरता था, जिसमें वह भी अपनी हंसा को रख सके। ...और अगर कहीं ऐसा सचमुच संभव हो, तो सारी कॉलोनी का एक चक्कर काटने के बाद 'जागते रहो–जागते रहो' की पुकार लगा कर, खुद भी हंसा के पास आकर आँख मूँदे सो जाने का आनंद कितना बड़ा होता? मगर शंकरसिंह के लिए सुख तो किसी मानस से भटके हंस की तरह ऐंचोली के ऊँचे पर्वत पर छूट गया है।

हंसा से ब्याह हुआ था कि तीसरे ही महीने गाँव से निकल आया। घर में दो छोटे भाई और विधवा माँ। अन्न तो ज्यों–त्यों जुट जाता खेती से, मगर और कुछ नहीं। पहाड़ की उपराऊँ खेती बकरी की धिनाली हुई। ...और शंकरसिंह चाहता कि उसकी हंसा शहर की लड़कियों की तरह नए–नए फैशन के कपड़े पहने। ठहरी भी कितनी सुंदर और कैसी मायावती! शंकरसिंह कोई दानासयाना और बुजुर्ग तो नहीं ठहरा, लेकिन इतना जरूर अनुभव किया कि एक कुछ अद्‌भुत–जैसी उम्र हुई। मन पंछी हो जाने वाला हुआ। कुछ ऐसी मनोदशा हो जाने वाली हुई कि जितना पंछी आकाश में, उतना तो हम धरती पर ही उड़ रहे!

शादी से पहले शहर के एक होटल में नौकरी कर चुका था वह और वहाँ चाट खाने को आने वाली कॉलेज की लड़कियों की रंग–बिरंगी पोशाकें उसकी आँखों पर से अभी भी उतरी नहीं। तब तो सचमुच ही उम्र कुछ वैसी हुई, जिसमें कि सपने और हकीकत के बीच फर्क कठिन होने वाला हुआ। शंकरसिंह छब्बीस–सत्ताईस का रहा होगा। हंसा उन्नीस वर्षों की ठहरी!

...और शंकरसिंह चला आया, कभी हंसा और माँ तथा भाइयों के लिए ढेर सारे कपड़ों से भरे संदूक लेकर घर लौटने का एक ऐसा सपना आँखों में बसाकर जो लगभग उस हर पहाड़ी युवक की आँखों का सपना होता है, जिसे दिल्ली, बंबई, कलकत्ता और लखनऊ–कानपुर किसी मायानगरी से कम नहीं लगती। जगह–जगह मोटे तागे से सी–सीकर, टल्ले लगा–लगाकर पहने जाने वाले कपड़ों से उसे वितृष्णा–सी होती और वह काले गाढ़े रंग का घाघरा और मामूली किनारी–दार धोती पहने चलने वाली हंसा को कल्पना के रंग बिरंगे लेडीज सूट या बढ़िया साड़ी–ब्लाउज पहनाकर अंदाजा लगाने वाला हुआ कि – देखें, अब कैसी लग रही। पिता के सिर पर न होने से परिवार की चिंता भी उस पर ही हुई। पिता की मृत्यु के ही कारण तो शादी भी कुछ देर से हुई। इसीलिए, सिर्फ इसीलए, वह अपने गाँव की उन सौंदर्यमयी घाटियों को हंसा की तरह ही पीछे छोड़ आया, जो हंसा के आने के बाद से स्वयं वधूवेश में सजी–सी मालूम पड़ने लगी थीं।

दो वर्ष तो कभी बेकार भटकने और कभी थोड़े रुपयों की नौकरी करने में ही बीत गए। लगातार दो वर्ष शंकरसिंह उन संकटों पर सिर धुनता ही रह गया, जिनके बीच मकड़जाले में मक्खी की तरह भिनभिनाते रह गया वह। दिल्ली के बड़े रेलवे स्टेशन पर होटल की नौकरी करने के दिनों वह बार–बार, संदूक और अटेचियाँ लेकर रेलों की ओर बढ़ते यात्रियों को देखता और शिलाजीत की चट्टानों में दरारें पड़ जातीं। सपनों की व्यर्थता को उन दरारों से लगातार छीजते देखते ही रह जाने के संताप में शंकरसिंह निराश होता गया। धीरे–धीरे उसे यही अनुभव होने लगा कि ऐसे ही वर्ष दर वर्ष बीतते जाएँगे और हंसा हमेशा के लिए छूट जाएगी।

जैसे दिल्ली पहुँचते ही हिमालय–जैसा विशाल पर्वत ओझल हो गया, 'हँहो, हँहो' कहने वाली पहाड़िन भी सपनों की सामग्री बनकर ही तो नहीं रह जाएगी? फटा–पुराना जैसा भी पहनती थी, आँखों के सामने तो रहती थी। अपनी औकात से बाहर सपनों के व्यामेह में खुद शंकरसिंह ही उसे छोड़ आया और आज उसे हाथ बढ़ाकर छूना सपना हो गया।

जब परदेश से लौटकर, रेशमी साड़ियाँ वगैरह लाने की बात हंसा से कही थी, तब उसने उलटे यह उलाहना दिया था कि रेशम की तो तब जरूरत होती हे, जब एक–दूसरे के प्राणों को लपेटते चले जाने वाली भावनाओं के तार नष्ट हो जाएँ। ...मगर उतावला शंकरसिंह उलाहने को झेल नहीं सका, उलटे चुनौती के रूप में लिया कि शायद हंसा समझती है कि उसके लिए रेशमी कपड़े जुटा सकने की क्षमता शंकरसिंह में नहीं। इस चुनौती को झेलते–झेलते दो वर्ष बीत गए। एक चिट्ठी भी घर को नहीं भेज सका शंकरसिंह। कई जवाबी पोसटकार्ड जेब में पड़े–पड़े फटते चले गए।

पहली चिट्ठी शंकरसिंह ने डबलस्टोरी कॉलोनी में चौकीदारी मिलने पर भेजी थी। जवाबी पोस्टकार्ड के दोनों कार्ड लिख–लिखकर भर दिए। फिर दूसरे ही दिन एक लिफाफा खरीदा और पिछले दो वर्षों में झेले को, उसमें ड्रम में भरे जाने वाले कूड़े की तरह डालता गया। एक पत्र में दिल्ली शहर में आकर तरह–तरह के धंधों में व्यस्त और फिर साझेदारी में बिस्कुट–नमकीन की दुकान खोलने पर, उसमें बहुत ज्यादा घाटा हो जाने की बात लिखी, इसलिए कि हंसा वास्तविकता से परिचित न हो सके। फिर एक बड़े कारखाने में हेड वाचमैन बन जाने की सूचना भी उसने दी। दिल्ली शहर की भव्यता का ऐसे चित्रण किया, जैसे किसी काल्पनिक इंद्रलोक का वर्णन कर रहा हो। मूल में तृष्णा इतनी कि हंसा यों न समझे कि शंकरसिंह निकम्मा और अभावग्रस्त है। पिछले दो वर्ष से ज्यों–त्यों पचीस–पचास रुपए महीने घर भेजने लगा था। दो–तीन बार कुछ कपड़े भी भेजे। पहली बार सिल्क की साड़ी भेजते समय आवेग में उसकी आँखें भर आई थीं और वह केवड़े के पत्ते में अटके पानी–जैसे आँसुओं के दर्पण में सिल्क की साड़ी पहनती हंसा को देखता और आँखों में उसकी छवि लिए नई दिल्ली की सड़कों पर घूमता रहा था। तरसता रहा था कि काश, हंसा को सचमुच नई दिल्ली की शानदार सड़कों पर साथ घुमा सकता। ओठों में लिपिस्टिक लगाए, हाथ में 'पर्स' लिए अपने चपरासी पतियों के साथ जाती पहाड़नों को अथाह कौतूहल के साथ नई दिल्ली की शानदार दुकानों की सैर करते देखकर शंकरसिंह बेचैन हो उठता। 'लिपिस्टिक' खरीदकर, हंसा की फोटो को अपने–सामने रखकर, उसके होठों को रँगता। कार, टैक्सी या स्कूटर का 'हार्न' सुनते ही एकदम चौंककर अपने पति की पीठ से सट जानेवाली पहाड़नों को देखकर, शंकरसिंह को लगता, कोई उसकी पीठ से भी लग गया है और वह बिना कुछ सुने, अपने–आप ही चौंक उठता।

एकांत के सन्नाटों में से उसे हंसा के साथ गाँव में बीते वो क्षण अक्सर याद आते, जबकि वह खेत जोतता होता और पीछे–पीछे ढेले फोड़ती या बीज बोती हंसा चल रही होती। वह लकड़ियाँ फाड़ता, हंसा बड़े जतन से गट्ठर बाँधती। वह मछलियाँ मारता और हंसा बड़े उल्लास से उन्हें इकट्ठा करती। हंसा चिलम भर देती और वह सयानों की तरह गुड़गुड़ाता... स्मृति के ऐसे सघन क्षणों में हंसा को चिट्ठी लिखते समय, उसे लगता कि रोम–रोम से असंख्य शब्द फूटने को हो आए हैं।

आज और भी अधिक भावुक हो आया है उसका मन, क्योंकि अगले ही महीने घर जाने की संभावना को सँभाले नहीं पा रहा। गाँव के आस–पास की पहाड़ियों, घाटियों और नदियों का एक–एक दृश्य आँखों में उभर–उभर आ रहा है। अचानक ही भ्रम होता है कभी कि वह गाँव के मोड़ तक पहुँच गया है और तालाब के किनारे खड़ी भैंसों को पानी पिलाती हंसा उसे देखते ही हिरनी–सी व्याकुल भैंसों को जहाँ–का–तहाँ छोड़, उसकी तरफ दौड़ी चली आ रही है, दौड़ी चली आ रही है...

कोठी के कई चक्कर काट लेने के बाद, शंकरसिंह फिर चिट्ठी पूरी करने बैठ गया – 'बहुत जरूरी काम से जरा वाकिंग के लिए गया था, डियर, माफ करना! लौटा हूँ तो अपना कंठ प्यास से सूखा लग रहा और तू शीतल जल से भरा सरोवर! मगर मजबूरी दोनों तरफ ऐसी ठहरी कि तुम खुद भी प्यासी खड़ी दिखाई दे रही! किसी कवि ने भी क्या कहा है कि – मन उड़ता पंछी भया, उड़ता चला आकाश – हम सरवर को क्या कहें, सरवर खुद ही प्यासा! ...एक सपना क्या देखा, डियर, कि एक सीनरी में तुम भैंसों को नहलाती छीनाताल के गहरे पानी में खड़ी। भैंस को नहलाते में रेशमी साड़ी का पल्लू नीचे को गिर गया और मुझे सामने मुस्कराता खड़ा देखकर, तुमको कहाँ को छिपूँ, कहाँ को भाग जाऊँ हो रही। माफ करना। मेरी गति भी वैसी ही हो गई – हरे रामा, बिरहा अगन लगाई ऐसी, तन–मन दियो जलाय! सरवर के रहते भी पंछी प्यासा उड़ि–उड़ि जाय...।'

इतना लिखते ही शंकरसिंह को याद आया कि पिछले पोस्टकार्ड में उसने लिखा था – 'तेरे बिन सारा जग सूना, दिल कैसे बहलावें। सूखा सरवर, प्यासे पंछी, प्यारी, उड़–उड़ जावें।' और उसके ही उत्तर में हंसा का उलाहना आया था कि – 'छि छि! क्या हो, तुम्हारे दिल्ली शहर में बंद लिफाफे नहीं मिलते क्या, जो तुम ऐसी–ऐसी बेशर्म बातें खुले पोस्टकार्ड में लिखते हो? छोटे देवर कहते सबसे कि – हमारे दाज्यू ने भौजी को प्यारी–प्यारी का दोहा लिख मारा!'

इसीलिए तो आज शंकरसिंह अंतर्देशीय पत्र ले आया। पेन भी ले रखा है, मगर प्राइमरी से मिडिल कक्षा छै की पढ़ाई तक स्याही में कलम डुबोकर लिखने का ही अभ्यास रहा है। पेन से लिखावट अच्छी नहीं बन पाती। जी निब वाले होल्डर से छोटे–छोटे अक्षर बनाने के प्रयत्नों के बावजूद, अब सिर्फ

'तुम्हारा लवली हसबेंड शंकरसिंह' लिखने–भर को ही जगह शेष रह गई है। खैरातीराम अस्पताल की बड़ी घड़ी की छोटी सुई पर पहुँच गई। गैरेज में सोए हुए दो दूसरे नौकर जागने लगे। चिट्ठी लेटर–बॉक्स में छोड़ने के बाद, शंकरसिंह गैरेज में सो जाएगा।

'उठो, हो!'

शंकरसिंह चौंककर उठ बैठा। घर पहुँचे कई दिन हो गए, मगर रात को अब ठीक से वहाँ भी नींद नहीं आती। सबेरे जब हंसा दूध–चाय पीने को उठाती है, तो शंकरसिंह चौंक उठता है। उसे लगता है गैरेज से कार बाहर निकालते हुए सरदार हरबंससिंह चिल्ला रहा है – ओए, ओ गोविंदबल्लभ दे पुत्तर, जरा परे–परे तो सोया कर बादशाओ!

यों इन दिनों शंकरसिंह प्रायः हंसा के निकट ही मँडराता रहा है। उसे बताता रहा है कि दिल्ली शहर कैसा और वहाँ औरत–मर्द कैसे एक–दूसरे के हाथों को हिलाते, सीटी बजाते, फिल्मी गाने गाते हुए सैर करते हैं। अपने हाथों हंसा के ओठों में लिपिस्टिक लगाता है शंकरसिंह और साड़ी का पल्लू सिर पर से उतारकर पीठ पर डाल देता है। कलाकारों की सी अदा में बालों का जूड़ा बाँधकर, उसमें प्लास्टिक के फूल खोंस देता है। ऊँची एड़ी के सैंडिल पहनाकर, कमरे के अंदर ही चलवाता है। हंसा टोकती है, झिझकती है, तो डाँट देता है कि घर से ही सब कुछ सीख कर नहीं जाएगी, तो वहाँ उसके दोस्त लोग हँसी उड़ाएँगे कि कैसी गँवार औरत से शादी कर लाया।

इतना ही नहीं, शंकरसिंह यह भी समझाता रहता है कि दिल्ली शहर में घूमते–फिरते समय सड़क कैसे पार करनी चाहिए। पीछे से कार का हॉर्न सुनाई दे, तो पीठ से चिपक जाने की जगह, कैसे शंकरसिंह का हाथ पकड़ते हुए थोड़ा–सा पीछे मुड़कर देख लेना और धीरे से मुस्कराते हुए हाथ में थमे पर्स को हिला देना चाहिए। किसी बड़े शानदार होटल में लंच और डिनर लेते समय कैसे काँटे–चम्मचों का इस्तेमाल करें। पहले 'टोमेटो सूप' लेने के बाद, फिर खाना शुरू किया जाए। खा लेने के बाद, जोर–जोर से पिच्च–पिच्च की जगह, हलके से कुल्ला करके, रेशमी रूमाल से ओठों को थोड़ी देर तक थपथपाते रहें। मिलने–जुलने पर दूसरों से हैलो–हैलो और 'थैंक्यू–थैंक्यू' कहे। कोई जरूरी काम पड़ जाए, जैसे कभी बच्चा ही होने वाला हो, तो 'लेबर पेन' उठने पर, घबड़ाने की जगह, अहलूवालिया साहब के ड्राइंगरूम वाले टेलीफोन नंबर सिक्स फोर थ्री फाइव नाइन से कैसे टेलीफोन करके शंकरसिंह को घर बुला लिया जा सकता है।

...मगर पिछले चार वर्षों में जितना–कुछ खुद देखा–सुना और सीखा है शंकरसिंह ने, पिंजरे में टँगे तोते की तरह हंसा को सिखाते–सिखाते कभी–कभी खुद ही एकदम चौंक उठता है। हंसा को दिल्ली अपने साथ ले जाने की तृष्णा तो मन में जरूर अपार है। मगर संभावना? कुछ डेढ़–दो सौ मिलते हैं। कोठी में सिर्फ गैरेज या बरामदों में सोने की इजाजत है नौकरों को, वह नौकरों के बीच हंसा को कहाँ रखेगा? कोठी के बहुत से कमरे बंद पड़े रहते हैं, मगर शंकरसिंह के लिए तो उनके दरवाजे खुले रहने पर भी बंद रहते हैं। कहीं अलग कमरा ले ले तो किराया इतना कि फिर गुजर कैसे होगी। बड़े–बड़े होटलों में लंच और डिनर की जगह, घर में आटा–चावल–दाल भी दुर्लभ होते जाएँ, तब क्या होगा? शहर घूमने के लिए कार टैक्सी छोड़ बस का किराया भी नहीं होगा, तो क्या स्थिति होगी?

छुट्टी के शेष दिन तेजी से बीतते चले जा रहे हैं और शंकरसिंह यहाँ भी जैसे खुद अपने ही सपनों की चौकीदारी करता रह गया है।

हंसा सो जाती है, शंकरसिंह जागता रहता है। लगता है, रात के सन्नाटे को बार–बार कोई बुलंद आवाज चीर आती है – 'जागते रहो...ओ–ओ'.. और शंकरसिंह के मन में एक साथ न–जाने कितनी तृष्णाएँ जाग उठती हैं... तब एकाएक ही आँखें आर्द्र हो जाती हैं और उसके सारे संकल्प–विकल्प राख हो जाते। वह सारे समुंदर में प्यासे हंसों की पाँत की भाँति उड़ता–उड़ता थक जाता है।

रात–भर का जागा शंकरसिंह सवेरे एकदम चौंकते हुए बैठता है – 'सतसिरी अकाल, सरदार साहब!' और एक तरफ हटकर सोने लगता है। ...लेकिन तभी आँख खुली, तो पता चलता है कि दायाँ हाथ हंसा की पीठ पर सपने नहीं, हकीकत में है। हंसा की उपस्थिति का बोध होते ही, मन ग्लानि से भर जाता है। रात–भर शंकरसिंह यह कहने के इरादे को टूटे शीशे की तरह जोड़ता रहता है कि – 'हंसा, अब मैं दिल्ली शहर नहीं आऊँगा, इसी गाँव में रहूँगा तेरे साथ!' ...मगर सवेरे फिर सिगरेट होल्डर निकालता है, उसमें से अधजली सिगरेट निकालकर फेंकता हुआ, नई सिगरेट सुलगाता है और बड़ी नफासत से धुआँ छोड़ते और हंसा को हिलाते हुए कहता है – 'गुड मॉरनिंग, डियर!'

आज भी सिगरेट–होल्डर निकालने लगा शंकरसिंह, तो याद आया कि सिगरेटें ही नहीं खत्म हुई हैं, बल्कि छुट्टियाँ भी खत्म होने को आ गईं। सिर्फ चार दिन और रह गए। ...और ...और लगता है, सिगरेट–होल्डर में अटके अधजले ठूँठ की ही स्थिति अब उसकी भी हो गई। सारा उल्लास राख होकर, रीतता चला गया। अब हंसा खुद लिपिस्टिक लगाए, सैंडिल पहने सामने आती है, तो भी डर–सा लगता है। आँखें अपनी भ्रांति को झेल नहीं पाती है। उसे एकाएक उदास देखकर, हंसा हँसती हुई 'हैलो–हैलो' कहती है, तो लगता है, जैसे कोई सुलगते अंगारों को हथेलियों पर चिपटा रहा है। उम्र आज भी कुल जमा कितनी है? इकतीसवाँ ही तो लगा है, ग्यारह गते उन्नीस सौ अठारह से। ...मगर सपने ऊँचे हैं और साधन छोटे, तो जवानी में भी जर्जरता है।

सिर्फ सौ के आस–पास बाकी बचे हैं। अपने ही जाने को भी कसर पड़ सकती है। आते समय बहुत–से कपड़े और फालतू चीजें खरीद लाया था, अब अफसोस होता है कि कुछ कटौती

की जा सकती थी। छोटे भाई रंगीन फिल्मी गानों की किताबें और किस्सा लैला मजनूँ को जोर–जोर से पढ़ने लगते हैं। भोली हंसा जूड़ा कसकर, प्लास्टिक का गुलाब खोंसती है। सिर पर पल्लू उतार, पीठ पर डाल लेती है और सैंडिल पहनकर, कमरे में चलने–फिरने लगती है। शर्म में डूबी पूछती है – तुम्हारी कुतुबमीनार की सीढ़ियों पर तो सैंडिल उतार कर ही चढ़ना पड़ता होगा?

और... और शंकरसिंह गाँव छोड़कर तुरंत भाग जाने को छटपटा उठता है। चौमास की हरियाली की तरह स्थान घेरती तृष्णाओं की व्यर्थता बहुत बुरी तरह कचोटती है। अपार तृष्णा की कुतुबमीनार की असंख्य सीढ़ियों पर शंकर सिंह नाम का एक लाचार बौना चढ़ना भी चाहे तो आखिर कितनी मंजिलों तक जा सकता है।?

वह कब का जाग चुका था, हंसा आई, चाय रखकर चली गई, तो शंकरसिंह ने छोटे भाई किशन को आवाज देकर, बीड़ी का बंडल मँगवा लिया। अपने में ही खोये–खोये, उसने बीड़ी को सिगरेट–होल्डर में लगाया, तो नीचे गिर पड़ी। शंकरसिंह को लगा कि अब वह भी शायद हंसा के लिए ऐसे ही अनुपयुक्त हो गया। चारों तरफ इतने सपने फैलाकर, अकेले लौटता देखेगी हंसा, तो यह पहाड़ी नदी फिर पीठ–पीछे ही छूट जाएगी, और इसका शब्दों से परे का शोर इधर से उधर पछाड़ता रहेगा।

इतना वह बिल्कुल जानता है कि स्थिति समझा देने पर हंसा साथ ले जाने की जिद कदापि नहीं करेगी। उसने तो अपनी ओर से आग्रह भी नहीं किया था। वह साफ कह रही थी कि किशन की घरवाली अभी अयानी है और इजा अब कमजोर हो चली। शंकरसिंह ने ही उसे दिल्ली के अजीब–अजीब रंग–ढंग सिखाने शुरू किए। ...और अब अपने ही गढ़े सपने को हंसा की आँखों में टूटते देखना दुश्कर होगा? कितना दुखद होगा नितांत स्वाभाविक उत्साह और आकांक्षाओं में उफनती इस नदी को पीछे दारुण शोर मचाते छोड़ जाना, जिसमें से शब्द अलग करना कठिन होता है?

हंसा कपड़े धोने तालाब की ओर चली, तो शंकरसिंह घर पर ही रह गया। उसे लगता रहा कि हंसा शायद दिल्ली जाने के लिए ही सारे कपड़े धो रही है। वह साथ रहा तो लौटते में रास्ते में मिलने वाली औरतों–से अदम्य उमंग के साथ दिल्ली जा रहे होने की बातें करेगी और फिर जाने के दिन शंकरसिंह अकेला–अकेला विदा होने लगेगा तो क्या कुछ बीतेगी इस पर?

शंकरसिंह बीड़ी पीता हुआ तालाब की ओर निकल गया। हंसा घुटने तक डूबी कपड़े धो रही थी। शंकरसिंह को याद आया कि कल ही तो उसने हंसा को समझाया था कि स्कर्ट कहाँ तक की पहननी होगी। उस समय हंसा लजा गई थी और इस समय शंकरसिंह शर्म का मारा गहरे ताल में डूबने को हो आया।

जैसे किसी चोर को स्थान दिए बैठा हो भीतर, एक नजर उसने चारों तरफ घुमाई। हालाँकि, मौसम था बीतते शरद का, लेकिन धूप चारों तरफ गहरी थी। नदी के आर–पार के खेत हरियाली में डूबे पड़े थे। नदी–किनारे गाय, भैंस और बकरियों के झुंड अपने नित्यकर्म में जुटे थे। इस सारे परिदृश्य को शंकरसिंह ने जैसे क्षण मात्र में ही काफी दूर–दूर तक देख लिया। जैसे कोई इलहाम हुआ हो, वह एकाएक बोल उठा – 'हंसा... मेरी छुट्टी के तो अब सिर्फ चार ही दिन रह गए। फिर तो बरसों में कभी लौटना हो पाएगा। एक–दो दिन अपने मायके वालों को भेंट आना चाहती तो भेंट आ? परदेश यों भी बुजुर्गों के चरण छूकर और उनका आशीष लेकर ही जाना ठीक हुआ। हुआ कि नहीं?'

वाक्य समाप्त करते ही शंकरसिंह को लगा, कहते–कहते उसके ओंठ सूख गए। वह चाहकर भी 'डियर' या 'प्यारी' कहकर हंसा को संबोधित कर नहीं सका और जैसे अचानक ही कोई काम याद हो आया हो, बिना हंसा के उत्तर की प्रतीक्षा किए ही घर की तरफ वापस चल दिया।

हंसा का मायका समीप के ही गाँव में है। दोपहर को ही हंसा चल पड़ी, तो शंकरसिंह उसे बार–बार कहता रहा कि – 'आज सोमवार है, हंसा? बुधवार तक जरूर लौट आना...' मगर न तो यह बता सका कि वह तो कल सवेरे ही दिल्ली को चला जाएगा और न यह कि – 'बुध को लौट आना, बृहस्पतिवार को दिल्ली रवाना होंगे।'

बुझे–बुझे मन से शंकर सिंह उसे गाँव के तालाब के पास तक छोड़ने चला आया। पानी से भरे तालाब में पेड़ों से गिरे पत्ते तैर रहे थे। आस पास पक्षियों का चहचहाना था और इसकी गूँज तालाब की धूप में झिलमिलाती सतह पर प्रतिबिंबित होती जान पड़ती थी...।

मगर शंकरसिंह को लगा, उसके अंदर का सरोवर तो आज एकदम सूख गया... हंसा को साथ ले जाने, उसे दिल्ली दिखाकर चकित करने तथा स्वयं की आकांक्षा का जीवन जीने की जो कामनाएँ वह अब तक करता रहा, वो सब हंसों की सी कतार बाँधे, उसे अकेला छोड़ती जाने कहाँ को उड़ चली हैं। उसे लगा कि ज्यों–ज्यों हंसा आगे बढ़ रही है, त्यों–त्यों उसके भीतर की वीरानी बढ़ती जा रही है।

कुछ कदमों तक हंसा थोड़ा आगे बढ़ती और फिर मुड़कर शंकरसिंह को देखती। उसका अनुराग आँखों में झिलमिलाता भासित होता था। सास घर के आँगन में ही खड़ी उसे विदा होते देख रही थी। देवर किशन उसके साथ–साथ चल रहा था, मगर जिस तरह का वातावरण था, उसमें जैसे बाकी सारी वस्तुओं की उपस्थिति नगण्य ही जान पड़ती थी। यों ही धीरे–धीरे आगे बढ़ती, आखिर वह मोड़ के पार निकल गई।

हंसा का दिखाई पड़ना बंद होते ही, उसे लगा कि देखते–देखते एक पहाड़ी नदी उसकी आँखों से जाने कब ओझल हो गई है और पीछे छूट गई है, सिर्फ उसके ओझल हो चुके होने की आवाज...।

हिंदी गीतों के राजकुमार डॉ. कुँवर बेचैन

राजेश कुमार कर्ण*

वरिष्ठ गीतकार डॉ. कुँवर बेचैन के स्वर्गलोक गमन से साहित्य जगत में शोक की लहर दौड़ गई है। वे काव्यमंच की शोभा थे। उनका काव्य सृजन अनूठा था। 1 जुलाई 1942 को मुरादाबाद जिले के उमरी गांव में उनका जन्म हुआ था। उनका बचपन चंदौसी में बीता। एम.कॉम, एम.ए. हिंदी एवं पीएचडी की उपाधि हासिल करने के बाद आप एमएमएच कॉलेज गाजियाबाद में वर्ष 1965 में हिंदी के प्राध्यापक नियुक्त हुए तथा वहां वर्ष 2001 में विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हुए। अपने कॉलेज में वह अपने सहज स्वभाव और विषय को मनोरम ढंग से प्रस्तुत करने की कला के कारण अत्यंत लोकप्रिय शिक्षक थे। जितनी संख्या में उन्होंने अपने मार्गदर्शन में पीएचडी कराई, उससे कम उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर शोध प्रबंध नहीं लिखे गए। 79 वर्ष की आयु में कोरोना संक्रमित होने के बाद नौएडा में 29 अप्रैल 2021 को उन्होंने अंतिम सांस ली। गीतों के अलावा गज़ल, रुबाइयां, हाइकु और उपन्यास लेखन से वे साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ गए। उन्होंने देश–विदेश में अनेकों कवि सम्मेलनों में भाग लिया तथा हिंदी के प्रचार–प्रसार के सहभागी बने। उनकी रचनाएं अनेक विश्वविद्यालयों, महाराष्ट्र तथा गुजरात बोर्ड के पाठ्यक्रमों में शामिल हैं।

डॉ. कुँवर बेचैन जी अपनी कविता, गज़लों एवं गीतों के जरिए वर्षों से लोगों के बीच खास रिश्ता बनाते आये हैं। उन्होंने अनेक विधाओं में साहित्य सृजन किया है। जीवन जगत का ऐसा कौन सा भाव होगा जो बेचैन जी की रचनाओं में द्रष्टव्य न हो। मान का गीत हो, मुनहार का गीत हो, विरह का गीत हो कि श्रृंगार का हो, ओज का हो या उदात्त का हो, आशा और उल्लास का हो, उनके यहां लगभग तमाम रस, तमाम शैलियों के गीत मिल जाएंगे। बोलचाल के आम मुहावरों से गीत के स्थायी बुनने वाले तथा ऐसे ही आम बोलचाल के वाक्यों से गज़ल के अशआर तैयार कर देने वाले डॉ. कुंवर बेचैन जी की गज़लें न केवल हिंदी बल्कि उर्दू की गज़ल परंपरा को भी रास्ता दिखाती है। उन्होंने 35 से अधिक कृतियां रचीं, जिनमें गीत, गज़ल, कविता, महाकाव्य, हाइकू, उपन्यास व समालोचना विधा शामिल हैं। 9 गीत संग्रह, 15 गज़ल संग्रह, एक महाकाव्य, एक हाइकू, एक दोहा संग्रह, दो उपन्यास, एक यात्रा वृतांत व कुछ अन्य कृतियां शामिल हैं, जिनकी सूची निम्नांकित है– पिन बहुत सारे (1972), भीतर साँकल – बाहर साँकल (1978), शामियाने काँच के (1983), महावर इंतजारों का (1983), रस्सियां पानी की (1987), उर्वशी हो तुम (1987), झुलसो मत मोरपंख (1990), पत्थर की बाँसुरी (1990), दीवारों पर दस्तक (1991), नाव बनता हुआ कागज (1991), आग पर कंदील (1993), एक दीप चौमुखी (1997), आँधियों में पेड़ (1997), आठ सुरों की बांसुरी (1997), आँगन की अलगनी (1997), नदी तुम रुक क्यों गई (1997), शब्दः एक लालटेन (1997), तो सुबह हो (2000), कोई आवाज़ देता है (2005), नदी पसीने की (2005), दिन दिवंगत हुए (2005), डॉ. कुवर बेचैन के नवगीत, पांचाली (महाकाव्य)। आपके द्वारा गायी गई गजलों की कैसेट और सी.डी भी बनी हैं, जो आज भी लोगों का मनोरंजन करती हैं. इसके साथ ही आकाशवाणी और टी.वी. चैनलों के माध्यम से आपके हिंदी फीचर फिल्म, सीरियलों में गीत लेखन भी उपलब्ध हैं.

डॉ. सीता सागर के अनुसार 'डॉ. कुंवर बेचैन जी के काव्य में कारुणिक और अनूठी कल्पनाएं हैं। इन्हें पढ़कर हृदय से बरबस ही आह और वाह निकल पड़ती है। गीतों में उनकी प्रयोगधर्मिता हतप्रभ करने वाली है। उनकी विनम्रता और शालीनता उन्हें और भी महान बनाती है।' डॉ. कुंवर बेचैन जी को छंद की हर काव्य शैली में महारत थी। उन्होंने गीत लिखे, नवगीत रचे, ग्रामगीत भी लिखे, गज़लें और रुबाइयां कहीं, हाइकु पर भी हाथ आजमाया, उपन्यास भी लिखा और 'प्रतीक पांचाली' जैसा महाकाव्य भी। उनकी गज़लें और रुबाइयां उद्धरणीयता के कारण कवि सम्मेलनों के संचालकों की जबान पर हैं जैसे–

पूरी धरा भी साथ दे तो और बात है
पर तू जरा भी साथ दे तो और बात है

चलने को एक पांव से भी चल रहे हैं लोग
पर दूसरा भी साथ दे तो और बात है

डॉ. कुंवर बेचैन जी के अनुसार हम लोग आपसी सहयोग एवं तालमेल के बल पर जीवन में सही तरीके से आगे बढ़ सकते हैं।

* *आशुलिपिक ग्रेड –II, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

नीरज जी की भांति डॉ. कुंवर बेचैन जी भी मूलतः गीतकार थे, मगर बाद में श्रोताओं के रुझान को देखते हुए गज़ल गाने लगे। यहां तक कि उन्होंने गज़ल की पाठशाला भी खोली और हिंदी की नई पीढ़ी को 'मफाइलुन मफाइलुन' समझाने के लिए फारसी छंदों का हिंदी नामकरण भी किया, जो बड़े स्तर पर स्वीकारा गया। जहां तक गीत की बारीकियों का सवाल है, बेचैन जी के गीतों की बुनावट, बिंब और प्रतीक का विधान, काव्यभाषा परिपक्व और श्रेष्ठ है।

वे लोकशैली की रचनाएं भी लिखा करते थे। कवि सम्मेलनों की दुनिया में जिस डॉ. कुंवर बेचैन जी का अवतरण हुआ, वह मंच पर गीत के प्रभुत्व का काल था। उन्होंने भी विशिष्ट गीत से अपनी काव्य यात्रा का आगाज किया। गीत है–

जितनी दूर नयन से सपना, जितनी दूर अधर से हंसना
बिछुए जितनी दूर कुंवारे पांव से, उतनी दूर पिया
तुम मेरे गांव से...

यह गीत उन्होंने वर्ष 1961 में लिखा और इस गीत ने उन्हें अपने शुरुआती दिनों में ही प्रसिद्धि दिलाई। यह उनका पहला फिल्मी गीत है जो वर्ष 1994 में कोख नामक फिल्म में शामिल किया गया जिसे हेमलता जी ने स्वर दिया था।

गज़ल लेखन पर उनकी पुस्तक गज़ल को समझने की एक मानक कृति मानी जाती है। गज़ल के व्याकरण पर बेचैन जी का अधिकार था। दुश्यंत कुमार ने गजल को हिंदी साहित्य और मंचों पर स्थापित किया। डॉ. कुंवर बेचैन जी का अकादमिक व्यक्तित्व था, इसलिए उन्होंने गज़ल के व्याकरण को भी हिंदी का लिबास पहनाने का सफल प्रयास किया। इसके चलते उन्होंने गज़ल में अभिनव प्रयोग किए। उर्दू की तमाम शायरी में सौंदर्य की उपमा चौदहवीं के चांद से ही दी जाती है, परंतु बेचैन जी शुद्ध भारतीय परिवेश में पूर्णिमा के चांद का महत्व बताते हैं कि–

जिस रात पूर्णिमा में नहा लेगी चांदनी,
पानी को सागरों से उछालेगी चांदनी।
किसको पता था मैकदे से खींचकर मुझे,
मंदिर की सीढ़ियों पे बिठा लेगी चांदनी।।

नदी एवं समुद्र के दो प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने उपरोक्त श्रृंगार गीत लिखा जो काफी प्रसिद्ध हुआ। नदी को आजतक एक प्रेमिका के रूप में माना जाता रहा है और समुद्र एक प्रेमी है। नदी बहती जा रही है उस पर आसमान, चंद्रमा एवं तारे का प्रतिबिम्ब पड़ रहा है तो नदी को दुल्हन के रूप में सजाने की कोशिश इस गीत में की गई है।

नदी बोली समंदर से मैं तेरे पास आई हूँ
मुझे भी गा मेरे शायर, मैं तेरी ही रुबाई हूँ...

डॉ. कुंवर बेचैन के गीतों में अनूठापन है, उन्हें कभी भी गुनगुनाइये, किसी को सुनाइये उसकी माधुरी खत्म होने वाली नहीं है। जैसे कभी एक गीत में शतदल ने लिखा थाः गंध ने छू लिया प्यार से क्या इन्हें/ये अधर इस जनम तो हुए बांसुरी। कुछ–कुछ ऐसा ही चित्ताकर्षी स्वभाव है डॉ. कुंवर बेचैन के गीतों का।

जिसे बनाया वृद्ध पिता के श्रमजल ने
दादी की हँसुली ने, माँ की पायल ने
उस सच्चे घर की कच्ची दीवारों पर
मेरी टाई टंगने से कतराती है

उनका यह गीत आधुनिकता भरे परिदृश्य में परंपरा को कैसे नेपथ्य में ढकेला जा रहा है, इसकी बहुत ही नुकीली अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है।

इसी तरह उनके कुछ अन्य गीतों का आकर्षण ऐसा था कि उसका स्थायी ही मन मोह लेता था। गीत जिस प्रसाद गुण के लिए जाने जाते हैं उनके गीतों में प्रचुरता से विद्यमान थे। हर गीत अपने आप में खास होता है। गीत का सृजन एक यात्रा है जो कभी धूप तो कभी छाँव, कभी बादल तो कभी रिमझिम बारिश के अहसासों के बीच गिरते उठते पूरी होती है पहले कदम से लेकर लक्ष्य तक गीतकार, लगातार गीत की उंगली थामे रहता है हर पाठक उस गीत को अपने नजरिए से देखता है दृष्टिकोण अलग हो सकते हैं पर हर गीत खास होता है इसमें कोई दो राय नहीं। उनके कुछ पुराने गीत, गजल, कविता जो सालों बाद भी ताजे हैं और साथ ही कुछ ऐसे नए गीत जो सालों तक ताजे रहने वाले हैं, वे निम्नलिखित हैंः–

बहुत दिनों के बाद खिड़कियां खोली हैं
ओ वासंती पवन हमारे घर आना

मन के उलझनों को, मन के भीतर जो गम हैं, दुख हैं उनको बाहर निकालने का और एक नये मौसम के आमंत्रण का यह गीत है जो काफी कर्णप्रिय है।

डॉ. कुँवर बेचैन गजल लिखने वालों में ताजे और सजग रचनाकारों में से हैं। उन्होंने आधुनिक गजल को समकालीन जामा पहनाते हुए आम आदमी के दैनिक जीवन से जोड़ा है। यही कारण है कि वे नीरज के बाद मंच पर सराहे जाने वाले कवियों में अग्रगण्य हैं। उन्होंने गीतों में भी इसी परंपरा को कायम रखा है। वे न केवल पढ़े और सुने जाते हैं वरन कैसेटों की दुनिया में भी खूब लोकप्रिय हैं।

डॉ. कुंवर बेचैन ने पानी की बौछारों पर कहा, संसार सूखी मिट्टी सा नीरस हो गया है। अब इंसानी संवेदनाएं भी शून्य होने लगी हैं। इसीलिए सघन बादल बनकर बौछार के छींटे बनकर उड़ता चल, ये दुनिया सूखी मिट्टी है प्यार के छींटे देता चल। नकारात्मक सोच के लोग खुद भी परेशान रहते हैं और अपने आसपास, सगे–संबंधी को भी परेशान रखते हैं। वहीं जो सकारात्मक सोच के व्यक्ति होते हैं वे खुद भी खुश रहते हैं और अन्य को भी सही रास्ते पर चलने की प्रेरणा देते हैं। आदमी के जीवन में तीन चीजें बहुत जरूरी हैं– प्यार, परिश्रम और परोपकार – इन तीनों को यदि कोई

व्यक्ति जीवन में संजो लेता है तो उसका जीवन अच्छा बन जाता है। सूरज डूबता है तो आकाश को सितारा देकर जाता है, हम क्या देकर जाएं खुद सोचें।

सूखी मिट्टी से कोई भी मूरत न बन पाएगी
जब हवा चलेगी ये मिट्टी खुद अपनी धूल उड़ायेगी
इसलिए सजल बादल बनकर बौछार के छींटे देता चल
ये दुनिया सूखी मिट्टी है तू प्यार के छींटे देता चल

हमारा देश वह देश है जिसने सारे संसार को ''वसुधैव कुटुंबकम'' का महामंत्र दिया। इस गीत में उसी भाव को दोहराया गया है। आज इस महामंत्र की सार्थकता बढ़ गई है। चीन से उपजा कोरोना वायरस भारत सहित पूरे विश्व में कहर बरपा रहा है। दुनिया में बहुरूपिया कोरोना से यदि एक भी संक्रमित रह जाएगा तो यह वायरस म्यूटेट कर फिर अपना विस्तार कर लेगा एवं गंभीर रूप धारण कर लेगा, इसलिए कोरोना के खात्मे का प्रण दुनिया के सभी लोगों को लेना होगा। हम सभी मिलकर कोरोना या किसी भी चुनौती का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं। वास्तव में सारा समाज एक गीत की तरह से है और हममें से प्रत्येक व्यक्ति गीत के एक शब्द की तरह से हैं। जैसे शब्द के पास शक्तियां होती है उसी तरह समाज के प्रत्येक व्यक्ति के पास भी शक्तियां होती हैं, उसी की उपासना इस गीत में की गयी है। हम सभी लोग ख्वाब हैं इस देश–दुनिया के, स्वप्न हैं, ये स्वप्न टूटने नहीं चाहिए। हम सब लोग इस सपने को पूरा करें।

भले ही हममें, तुममें कुछ, ये रूप रंग का भेद हो
है खुशबुओं में फर्क क्या गुलाब हम, गुलाब तुम

माँ का आंचल तो उन्हें मात्र 6 वर्ष तक ही मिला लेकिन माँ की स्मृतियां जीवन भर रहीं। उन्होंने दुनिया की सभी माँओं को समर्पित अनेक मार्गदर्शक गीत लिखे।

अम्मा ने दिया था मेरे माथे पे दिठोना
कहते हुए कि बेटा कभी नहीं रोना

बेचैन जी के तरल स्वर में कोमलतम संवेदनाओं को परिभाषित करने वाले माता–पिता इन्हें अल्पायु में ही छोड़ गए थे। इनका पालन बड़ी बहन ने किया। साहित्य भोगा हुआ यथार्थ ही होता है इसलिए उनके गीतों में मानवीय एवं सांसारिक संबंधों की झलक मिलती है। उदाहरण के लिए, परंपरागत शैली के इस गीत में एक स्त्री बदरी, बिजुड़ी, कागा एवं पूरबा के माध्यम से अपने मन की व्यथा अपने माता–पिता, भाभी एवं भाई तक पहुंचाती है।

बदरी बाबुल के अंगना जहियो, जहियो बरसियो कहियो
कहियो कि हम हैं तोरी बिटिया की अंखिया.....

इस गीत में प्रवासियों के दर्द को रेखांकित किया गया है।

नीर के तिनके अगर चुभने लगे
पंछियों को फिर कहां ठौर है

वर्तमान समय के सर्वश्रेष्ठ कवि डॉ. कुँवर बेचैन जी विचारों से गांधीवादी थे, वे गांधी जी के जीवन दर्शन– सत्य, अहिंसा, स्वदेशी, सुशासन से बहुत प्रेरित थे।

आजादी से पहले वो जो थे दीवाने खादी के
आजादी के बाद कहाँ हैं, अब परवाने खादी के

डॉ. कुँवर बेचैन जी ने इस गीत में आपसी भाईचारा, महिलाओं को यथोचित सम्मान, देश की एकता–अखंडता, देशप्रेम एवं विश्व प्रेम का संदेश दिया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने ठीक ही लिखा था कि ''केवल मनोरंजन न कवि का मर्म होना चाहिये बल्कि उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।''

नया दौर है नई बात कीजे
जो बिछड़े हैं उनसे मुलाकात कीजे

हिंदी की महत्ता को दर्शाते इस गीत में उन्होंने लिखा है हिंदी प्यार की भाषा है और इसने अन्य भाषाओं के शब्दों को भी अपनाया है।

घर बार की भाषा हिंदी, व्यवहार की भाषा हिंदी
सारी दुनिया कहती है, है प्यार की भाषा हिंदी

हिंदी कविताओं का पाठ उन्होंने भारत के साथ–साथ 24 अन्य देशों में भी किया। वे जहां–जहां गए अपने साथ हिंदी को भी ले गए। हिन्दी का देश–विदेश में उन्होंने जीवन भर प्रचार–प्रसार किया। राष्ट्रभाषा हिंदी साइबर स्पेस के साथ–साथ इन कवि सम्मेलनों में भी निरंतर बढ़ रही है और सही मायने में हिंदी का वैश्वीकरण हो रहा है।

अपने गौरवशाली देश भारत पर आधारित उन्होंने एक गीत लिखा जो काफी चर्चित हुआ। हमारा यह सौभाग्य है कि हम भारत भूमि में पैदा हुए हैं, इसके आँगन में पले हुए हैं और बड़े हुए हैं। यहाँ की प्राकृतिक सम्पदा एवं सांस्कृतिक संपदा बहुत सम्पन्न रही है।

मेरा गंगा का देश मेरा जमुना का देश
मेरी धरती का आँचल हरा है
तन में महके सुमन, मन में चन्दन के वन
जहाँ रूप का झरना झरा है

डॉ. कुँवर बेचैन जी हिन्दी की वाचिक परम्परा के प्रसिद्ध कवि हैं, जो अपनी गज़लों, गीतों व कविताओं के जरिए सालों से हिन्दी श्रोताओं के बीच एक खास स्थान रखते आए हैं। शब्दों की गेयता के साथ भावनाओं की संगत डॉ. कुँवर बेचैन जी की कविताओं में देखते ही बनती है। एक घर और उस घर में रहने वाले विभिन्न रिश्तों को कविताओं में उन्होंने उकेर दिया है।

घर

कि जैसे बाँसुरी का स्वर, दूर रहकर भी सुनाई दे,
बंद आँखों से दिखाई दे...

याद

जैसे नववधू, प्रिय के, हाथ में कोमल कलाई दे...

माँ

तुम्हारे सज़ल आँचल ने धूप से हमको बचाया है
चाँदनी का घर बनाया है...

पिता

ओ पिता, तुम गीत हो घर के
और अनगिनत काम दफ्तर के....

पत्नी

तू मेरे घर में बहनेवाली एक नदी, मैं नाव
जिसे रहना हर दिन, बाहर के रेगिस्तानों में.....

पुत्र

तुम उज्ज्वल, भविष्यत् फल, हम तुम्हारे आज हैं, लेकिन
तुम हमारे आज के शुभ कल....

बंधु

हम–तुम प्रिय महकते फूल, गेह–तरु की नेह–डाली के...

गीतों के अलावा गजल, रुबाइयां, हाइकु और उपन्यास लेखन से डॉ. कुंवर बेचैन साहित्य जगत में अपनी अमिट छाप छोड़ गए। वे मंच पर जैसे गीत की सदानीरा बहा देते थे और गज़लों में उतरते थे तो अपने अंदाजेबयां से मोह लेते थे। जैसा कि गीतकार आनंदवर्धन द्विवेदी ने लिखा है, ''हम भटक फिर गए गीत को कर शुरू/फिर से लिखने को लिख हम गज़ल ही गये।'' डॉ. कुँवर बेचैन ने भी पहले तो गीत की देहरी पर शानदार कदम रखा तथा अनेक कालजयी गीत लिखे पर धीरे–धीरे वे गज़लों की ओर खिंचते चले गए। कवि सम्मेलनों में गज़लों की दुनिया तब परवान चढ़ रही थी और वे मुशायरों में गीतकार व गज़लकार दोनों की हैसियत से महत्व रखते थे। गज़लों का व्याकरण उनका इतना सटीक था कि लोग तुकांतों की खोज के लिए उनकी गज़लों को पढ़ा करते थे।

आम आदमी अक्सर मृत्यु से घबराता है किंतु मृत्यु को भी उन्होंने दिलेरी से स्वीकार किया। अपनी निम्नलिखित गज़ल में माँ–बाप की जिस सेवा का संकल्प दुहराते हैं उनकी सेवा का अवसर उन्हें नहीं मिला। बचपन में ही उनके माँ–बाप गुजर गये थे। उन्हें उनकी बहन और बहनोई ने पाला पोसा, लेकिन जब वे मात्र 9 वर्ष के ही थे तभी उनकी बहन भी स्वर्गवासी हो गयी और उनका बचपन कष्टों में बीता।

मौत तो आनी है तो फिर मौत का क्यों डर रखूं
जिंदगी आ, तेरे कदमों पर मैं अपना सर रखूं

जिसमें माँ और बाप की सेवा का शुभ संकल्प हो
चाहता हूँ मैं भी काँधे पर वही काँवर रखूं

जीवन के शुरुआती दौर में मुश्किलों का सामना करने के बावजूद भी उन्होंने हमेशा आशा जीवन और उम्मीदों की गज़लें लिखीं, वे जीवन में किसी भी तरह की मायूसी के खिलाफ थे।

हो के मायूस न यूं शाम से ढलते रहिये
ज़िन्दगी भोर है सूरज–से निकलते रहिये
एक ही ठांव पे ठहरेंगे तो थक जायेंगे
धीरे–धीरे ही सही राह पे चलते रहिये

डॉ. कुँवर बेचैन एक ऐसी दुनिया चाहते थे जो हथियारों से न भरी हो, आम आदमी के बीच दीवारें न हों, यह फूलों से महकती हो, कांटे इसके दामन में न हों।

फूल को खार बनाने पे तुली है दुनिया
सबको अंगार बनाने पे तुली है दुनिया

तीज त्योहार से अलग रहने पर कैसी अनुभूति होती है, इसे जानता तो हर कोई है पर इसे खूबसूरती से केवल कवि कह सकता है। डॉ. कुँवर बेचैन ने इस भाव को बहुत शिद्दत से इस निम्नांकित गज़ल में महसूस किया।

हम बहुत रोए किसी त्योहार से रहकर अलग
जी सका है कौन अपने प्यार से रहकर अलग

उनके गीत–गज़लों को कई नामचीन गायकों ने भी गाया हैं। डॉ. कुँवर बेचैन जी 250 से ज्यादा संस्थाओं द्वारा सम्मानित हुए हैं। किंतु उनमें उल्लेखनीय है– उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान, हिंदी गौरव सम्मान, परिवार संस्था मुंबई का सम्मान, गीत गौरव, गीत पुरुष, भारत श्री, राष्ट्रीय आत्मा पुरस्कार व कबीर पुरस्कार आदि। राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह एवं महामहिम डॉ. शंकरदयाल शर्मा द्वारा भी आपको सम्मानित किया गया था।

साहित्य का एक और सूरज कोरोना के चलते 29 अप्रैल 2021 को अस्त हो गया। उनके निधन से हिंदी साहित्य जगत को एक बड़ी क्षति पहुंची है। व्यवहार से सहज, वाणी से मृदु इस रचनाकार को सुनना–पढ़ना अपने आप में अनोखा अनुभव है। उनकी रचनाएं सकारात्मकता से ओत–प्रोत हैं। उनके गीतों, उनकी गज़लों की अनुगूंज कभी भी मंद नहीं पड़ने वाली है। डॉ. नवाज देवबंदी ने ठीक ही लिखा है कि 'कोई शायर या कवि दो विधाओं में एक साथ लिखता है तो गीत कमजोर हो जाता है या गज़ल, लेकिन कुंवर बेचैन का कमाल यह है कि उन्होंने गीत की खनक और गज़ल की चमक का झूमर अदब के माथे पर एक साथ टांका है।' सोशल मीडिया व कवि सम्मेलनों के इतने वीडियो उनके मौजूद हैं कि कोई भी उन्हें सुन कर शुद्ध गीतों, कविताओं, गज़लों का आनंद ले सकता है। कवि इसी तरह सदियों तक समय के कैनवस पर सदैव उपस्थित रहता है। वे भी हिंदी जगत की स्मृतियों में हमेशा जीवित रहेंगे।

भारत की पहली महिला सर्जनः डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी

अवनीन्द्र कुमार श्रीवास्तव*

2020 के प्रारंभ से शुरु हुई वैश्विक महामारी 'कोरोना' ने अभी भी पूरी दुनिया में तांडव मचाया हुआ है। इससे दुनियाभर में लाखों लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। इनमें अनेकों वे सबसे बड़े कोरोना कर्मवीर भी हैं जिन्हें भारतवर्ष में भगवान के रूप में माना जाता है। विकट से विकट परिस्थिति में भी अपनी जान की परवाह किए बिना अग्रिम पंक्ति ये कर्मवीर कोरोना से संक्रमित व्यक्तियों की सेवा करने में लगे रहते हैं। उनके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट करते हुए प्रस्तुत है देश की पहली महिला सर्जन की कहानीः–

डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी का जन्म 30 जुलाई 1886 को तमिलनाडु के पुडुकोट्टई में हुआ था। उनके पिता एस नारायण स्वामी चेन्नई के महाराजा कॉलेज के प्रधानाचार्य थे। जिस दौर में मुथुलक्ष्मी रेड्डी बड़ी हो रही थीं, उस समय बाल विवाह का चलन बहुत आम था। उनके माता–पिता उनकी शादी छोटी उम्र में ही कर देना चाहते थे, लेकिन उन्होंने इसका विरोध करते हुए पढ़ाई पूरी करने की बात कही और अपने माता–पिता को उन्हें शिक्षित करने के लिए राजी किया। उनकी माँ चंद्रामाई ने समाज के तानों के बावजूद उन्हें पढ़ने के लिए भेजा। मुथुलक्ष्मी ने तमिलनाडु के महाराजा कॉलेज में पढ़ाई की, उस समय तक वह कॉलेज सिर्फ लड़कों के लिए ही था। शुरुआती शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने डॉक्टरी की पढ़ाई के लिए मद्रास मेडिकल कॉलेज में दाखिला लिया। इस कॉलेज में भी डॉक्टरी की पढ़ाई करने वाली पहली महिला छात्रा वह ही थीं। उन्होंने माता–पिता की अपेक्षाओं पर खरा उतरते हुए वर्ष 1912 में डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी की और इस प्रकार वह भारत की **पहली महिला सर्जन** बनी थीं।

मेडिकल ट्रेनिंग के दौरान डॉ. रेड्डी को कांग्रेस नेता और स्वतन्त्रता सेनानी सरोजिनी नायडू से मिलने का मौका मिला। बस यहीं से उन्होंने महिलाओं के अधिकारों और देश की आजादी के लिए लड़ने की कसम खा ली। यहां तक कि उन्हें इंग्लैंड जाकर आगे पढ़ने का मौका भी मिला लेकिन उन्होंने इसे छोड़कर वीमेंस इंडियन असोसिएशन के लिए काम करना ज्यादा जरूरी समझा। डॉ. रेड्डी ने अपना जीवन लोगों के अच्छे स्वास्थ के प्रति समर्पित किया। इसके साथ ही उन्होंने लैंगिक भेदभाव और महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने के लिए भी हमेशा अपनी लड़ाई जारी रखी। डॉ. रेड्डी को लोग एक शिक्षक, समाज सुधारक, सर्जन और सफल व्यवस्थापक के तौर पर याद करते हैं। डॉ. रेड्डी जीवन भर महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़तीं रहीं और देश की आज़ादी की लड़ाई में भी उन्होंने बढ़–चढ़कर सहयोग दिया था। 1927 में डॉ. रेड्डी ब्रिटिश भारत में मद्रास विधानसभा की **पहली महिला विधायक** चुनी गईं। पहली महिला विधायक बनने के बाद उन्होंने कम आयु में लड़कियों की शादी रोकने के लिए नियम बनाने और शादी के लिए तय उम्र सीमा को बढ़ाने की मांग की, साथ ही उन्होंने बच्चियों के साथ होने वाले उत्पीड़न के खिलाफ भी आवाज बुलंद की। दांडी यात्रा के समय महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में उन्होंने इस्तीफा दे दिया था। उन्होंने महिला उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाई और महिलाओं की शिक्षा के लिए 1931 में अव्वाई होम स्थापित किया।

बताया जाता है कि डॉ. रेड्डी की बहन की मृत्यु कैंसर की वजह से हो गई थी, इससे उन्हें गहरा सदमा लगा था। इसके बाद उन्होंने साल 1954 में चेन्नै में अद्यार कैंसर इंस्टिट्यूट की शुरुआत की। यह कैंसर अस्पताल अभी भी दुनिया के सबसे सम्मानित कैंसर अस्पतालों में से एक है। यहां हर साल हजारों कैंसर पीड़ितों का इलाज किया जाता है। वर्ष 1956 में डॉ. रेड्डी को उनकी सेवा और काम के लिए भारत सरकार की ओर से 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।

डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी ने स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने के साथ–साथ लिंगानुपात को बराबर करने और लड़कियों के जीवन को सुधारने के लिए काफी काम किया। समाज की बेहतरी के लिए अपने जीवन को समर्पित करने वाली डॉ. मुथुलक्ष्मी रेड्डी का 81 वर्ष की आयु में 22 जुलाई 1968 को चेन्नै में निधन हो गया था। डॉ. रेड्डी की याद में वर्ष 2019 से तमिलनाडु में हर साल 30 जुलाई को **'हॉस्पिटल डे'** के तौर पर मनाया जाता है।

* पर्यवेक्षक (प्रशासन), वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, सैक्टर–24, नौएडा

अंकों का अद्भुत संसार

बीरेंद्र सिंह रावत*

सोनी टीवी पर प्रसारित बहुत ही ज्ञानवर्धक तथा ज्ञान के धनी एवं विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान देने वाले भारतवासियों को सम्मानित करने वाले और सदी के महानायक श्री अमिताभ बच्चन जी द्वारा संचालित धारावाहिक 'कौन बनेगा करोड़पति" के एक ही हफ्ते के दो संस्करणों में दो प्रश्न अंकों से संबंधित थे। ये इस प्रकार हैं: i) मध्य प्रदेश के किस नगर में स्थित किले के चतुर्भुज मंदिर में दीवार पर 'शून्य' उकेरा गया है, तथा ii) हार्डी–रामानुजन संख्या क्या है? इन प्रश्नों के उत्तर जानकर मेरे मन में भी अंकों के बारे में और विस्तार से जानने की तीव्र इच्छा पैदा हुई। विस्तृत जानकारी खोजने के दौरान मुझे गूगल एवं सोशल मीडिया से शून्य संबंधी जानकारी एवं हार्डी–रामानुजन संख्या के साथ ही काप्रेकर स्थिरांक के बारे में भी पता चला, जिनके बारे में मैं विस्तार से आगे बताऊंगा। पहले मैं अंकों से संबंधित सामान्य जानकारी को एक कविता के माध्यम से आप सब के सामने रखना चाहूँगा।

जोड़, घटा, गुणा हो या फिर कहीं पर भाग,
सम संख्या का उत्तर मिलेगा हमेशा ही सम।
पर विषम संख्या के नियम हैं कुछ ऐसे कि,
जोड़ घटा में आए सम, तो अन्य दो में विषम।।
अपनी–अपनी विशेषताएँ सभी दस अंकों की,
सबसे बड़े अंक नौ को हम ज्यादा विशेष पाएँ।
अगर नौ के गुणन के सभी अंक जोड़े जाते हैं,
हर बार हम परिणामी अंक मूलांक नौ ही पाएँ।।
शून्य का अपना कहीं कोई मान नहीं होता है,
जिससे जुड़े मान बढाता है उसका दस गुना।
अंक प्रणाली में सबसे छोटा अंक होता एक,
जिससे भी गुणा करें, मान बढ़ता है उतने गुना।।

अब आते हैं उपरोक्त प्रस्तावना के मूल बिंदुओं पर:

i) मध्य प्रदेश के किस नगर में स्थित किले के चतुर्भुज मंदिर में दीवार पर 'शून्य' उकेरा गया है? इसका सही जवाब है ग्वालियर। चतुर्भुज मंदिर एक हिंदू मंदिर है जिसे ग्वालियर के किले में पत्थरों पर नक्काशी करके निर्मित किया गया है। एक समय यह मन्दिर पूरे जगत में शून्य के सबसे पहले ज्ञात शिलालेख के लिए प्रसिद्ध था, लेकिन अब बख्शाली पाण्डुलिपि को शून्य के प्रतीक का उपयोग करने के लिए सबसे पहले माना जाता है। शिलालेख में कहा गया है कि अन्य चीजों के साथ, समुदाय ने 270 हस्त (1 हस्त = 1.5 फीट) बँटा 187 हस्त का एक बगीचा लगाया। इस बगीचे से हर रोज मन्दिर के लिए 50 मालाएँ मिलती थीं। वहाँ उपस्थित शिलालेख में 270 और 50 के अंतिम अंक '०' आकार के हैं, जो कि शून्य को दर्शाते हैं। ,

ii) हार्डी–रामानुजन संख्या क्या है? इसका सही जवाब है 1729। भारत के एक महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन एक प्रकार से संख्याओं के जादूगर थे। संख्याओं के साथ उनका गहरा संबंध था। यह कहा जा सकता है कि वे संख्याओं के साथ खेलते थे। श्रीनिवास रामानुजन जब इंग्लैंड में थे तो अक्सर बीमार रहते थे। उनके परामर्शदाता जी.एच. हार्डी ने न केवल उनकी प्रतिभा को दुनिया के सामने लाने में निर्णायक भूमिका निभाई बल्कि उनके विदेश प्रवास के दौरान उनके स्वास्थ्य का ध्यान भी रखा। लगभग प्रतिदिन ही वह रामनुजन को ठीक से खाना खाने और नियमित रूप से दवाइयां न लेने के लिए डाँटते थे। ऐसे ही एक दिन जब रामानुजन अस्पताल में थे तो हार्डी उनसे मिलने आए। हार्डी उस दिन बहुत उदास लग रहे थे। रामनुजन ने उनसे पूछा, "आप इतने परेशान क्यों लग रहे हैं, आज तो मैं अपेक्षाकृत पहले से बेहतर हूँ।"

हार्डी ने उत्तर दिया, तुम तो संख्याओं के जादूगर हो, परंतु आज मैं जिस टैक्सी में आया हूँ मुझे उसका नम्बर बहुत ही नीरस लगा। "क्या नंबर था?" रामानुजन ने पूछा। हार्डी ने कहा, "उसका नंबर था 1729। रामानुजन ने तुरंत कहा, शायद 1729 से अधिक रोचक संख्या तो कोई हो ही नहीं सकती। ऐसी कुछ ही संख्याएँ हैं जिन्हें दो घनों के योग के रूप में दो अलग–अलग ढंग से लिखा जा सकता है और 1729 उनमें सबसे छोटी संख्या है।"

तब से यह संख्या **हार्डी–रामानुजन संख्या** के नाम से प्रसिद्ध हो गई।

वास्तव में ही यह संख्या एक अत्यंत विशिष्ट संख्या है। इसकी विशिष्टता के कुछ पहलुओं को आगे स्पष्ट किया गया है:

दो घनों के योग के रूप में दो अलग–अलग ढंगों से व्यक्त की जा सकने वाली सबसे छोटी संख्या

$$1729 = 1728 + 1 = 12^3 + 1^3$$
$$1729 = 1000 + 729 = 10^3 + 9^3$$

रामानुजन संख्याएँ

'रामानुजन संख्या' उस प्राकृतिक संख्या को कहते हैं जिसे दो अलग–अलग प्रकार से दो संख्याओं के घनों के योग द्वारा निरूपित किया जा सकता है।

$$4104 = 2^3 + 16^3 = 9^3 + 15^3$$
$$20683 = 10^3 + 27^3 = 19^3 + 24^3$$
$$39312 = 2^3 + 34^3 = 15^3 + 33^3$$
$$40033 = 9^3 + 34^3 = 16^3 + 33^3$$

* *वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, वी. वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान, नौएडा*

तथापि, यदि हम ऋणात्मक पूर्णांकों पर भी विचार करें तो यह शर्त पूरी करने वाली सबसे छोटी संख्या 91 होगी:

$$91 = 64 + 27 = 4^3 + 3^3$$
$$91 = 216 - 125 = 216 + (-125) = 6^3 + (-5)^3$$

संयोगवश 91 संख्या 1729 का एक गुणनखंड भी है।

इसी प्रकार महाराष्ट्र में मुंबई से 100 किलोमीटर उत्तर में स्थित एक छोटे से शहर दहाणु में जन्मे दत्तात्रेय रामचंद्र काप्रेकर के जीवन में संख्याओं का बहुत महत्व रहा है। यूं भी कह सकते हैं कि संख्याओं से खेलना उनका शौक था। उन्होंने एक बार कहा भी था कि एक शराबी शराब पीकर जो आनंद महसूस करता है, वैसा ही मुझे नंबरों के साथ महसूस होता है। नंबरों के शौक में उन्होंने कई गणितीय सिद्धांत विकसित किए। संख्या 6174 का एक विशेष गुण है जिसका पता कापरेकर ने लगाया था।

1) इसका पता लगाने के लिए चार अंक की कोई भी संख्या ली जाती है जिसके दो अंक भिन्न हों।
2) संख्या के अंकों को अवरोही (घटते) और आरोही (बढ़ते) क्रम में लिखा जाता है। इससे हमें दो संख्याएँ प्राप्त होती हैं।
3) अब छोटी संख्या को बड़ी संख्या से घटाएँ।

जो संख्या मिलती है, इस पर पुनः क्रम संख्या 2 तथा 3 वाली प्रक्रिया दोहराई जाती है। कुछ निश्चित चरणों के बाद संख्या 6174 मिल जाती है। इस प्रक्रिया को 'कार्पेकर व्यवहार' कहते हैं। कुछ निश्चित चरणों के बाद संख्या 6174 मिल जाती है। इसके साथ 'कार्पेकर व्यवहार' अपनाने पर भी फिर यही संख्या मिलती है, इसीलिये इसे **'काप्रेकर स्थिरांक'** कहते हैं।

'काप्रेकर स्थिरांक' में कोई भी चार अंक लिये जाते हैं। फिर उन चार अंकों की सबसे बड़ी और सबसे छोटी संख्या बनाई जाती है। दोनों संख्यों को आपस में घटा दिया जाता है। परिणाम में फिर चार अंक आएगा। अब उन चार अंकों की सबसे बड़ी और सबसे छोटी संख्या बनाई जाती है और उनको आपस में घटा दिया जाता है। इस प्रक्रिया को छह–सात बार दोहराया जाता है। छठी–सातवीं बार में परिणाम 6174 होता है। परिणाम के रूप में 6174 आने के बाद फिर हर चरण में यही यानी 6174 ही परिणाम आता रहता है। उदाहरणार्थ हम चार अंक लेते हैं 7, 6, 5 और 9।

1). इन चारों अंकों की सबसे बड़ी संख्या होगी–9765; इनकी सबसे छोटी संख्या होगी–5679; अब दोनों को घटाते हैं–9765–5679=4086। 2). अब फिर इन चारों अंकों की सबसे बड़ी संख्या=8640; इनकी सबसे छोटी संख्या=0468; दोनों को घटाने पर=8640–0468=8172। 3). इनकी सबसे बड़ी संख्य=8721; इनकी सबसे छोटी संख्या=1278; दोनों का अंतर=8721–1278=7443। 4). इनकी सबसे बड़ी संख्या=7443; इनकी सबसे छोटी संख्या=3447; दोनों का अंतर=7443–3447=3996। 5). इनकी सबसे बड़ी संख्या=9963; इनकी सबसे छोटी संख्या=3699; इनका अंतर=9963–3699=6264। 6). इनकी सबसे बड़ी संख्या–6642; इनकी सबसे छोटी संख्या–2466; दोनों का अंतर=6642–2466=4176। 7). इनकी सबसे बड़ी संख्या–7641; इनकी सबसे छोटी संख्या–1467; दोनों का अंतर–7641–1467=6174। अब इसकी बड़ी और छोटी संख्या को जब भी घटाएंगे तो 6174 ही जवाब आएगा।

काप्रेकर ने जो संख्यात्मक सिद्धांत पेश किए थे, उसका भारत के कई गणितज्ञों ने मजाक उड़ाया। उन्होंने काप्रेकर की खोज को बेतुकी और बेमतलब की चीज बताया। लेकिन किसी तरह वह गणित की कम चर्चित पत्रिकाओं में अपने विचार को प्रकाशित कराने में सफल हुए। साल 1949 में मद्रास में गणित का एक सम्मेलन हुआ था। उन्होंने उस सम्मेलन में अपनी खोज से दुनिया को परिचित कराया। बाद में उनकी खोज को लेकर भारत और विदेश में चर्चा होने लगी। 1970 के दशक में अमेरिका के प्रसिद्ध लेखक मार्टिन गार्डर ने साइंस की एक पत्रिका में उनके बारे में लिखा। खैर दुनिया भर में अब काप्रेकर के काम को मंजूरी मिली चुकी है और दुनिया भर के गणितज्ञ इस पर शोध कार्य में लगे हुए हैं। काप्रेकर संख्या और डेमलो संख्या की खोज भी इन कम चर्चित महाराष्ट्रियन गणितज्ञ कापरेकर जी ने की थी।

काप्रेकर संख्या: किसी दिये हुये आधार पर (हम सामान्यतया 10 आधार वाली दशमलव प्रणाली का इस्तेमाल करते हैं) कोई संख्या (शून्य या उससे बड़ी) जिसके वर्ग को दो ऐसी संख्याओं में विभाजित किया जा सके कि उन्हें जोड़कर हम पुनः प्रारंभिक संख्या को प्राप्त कर सकें, ऐसी संख्या को काप्रेकर संख्या कहते हैं।

संख्या	वर्ग	विभाजन	प्रारंभिक संख्या
703	$703^2 = 494209$	494+209	703
2728	$2728^2 = 7441984$	744+1984	2728
5292	$5292^2 = 28005264$	28+005264	5292
857143	$857143^2 = 734694122449$	734694+122449	857143

कुछ और उदाहरण:

55, 99, 297, 999 आदि। विशेषकर 9, 99, 999, ...श्रेणी की सभी संख्याएँ काप्रेकर संख्याएं हैं।

डेमलो संख्या: डेमलो संख्याएं Repunit संख्याओं के वर्ग का मान हैं। Repunit संख्याओं की एक विशेष श्रेणी को कहते हैं। इसका मतलब है Repunit Unit और यानि दोहराई गई इकाई (1), तो Repunit संख्याएँ हैं: 1, 11, 111, 1111, ...और क्रमशः इनके वर्ग से जो डेमलो (Demlo) संख्यायें प्राप्त होती हैं वो भी बड़ी मनोरंजक हैं।

डेमलो संख्या

$1^2 - 1$; $11^2 - 121$; $111^2 - 12321$; $1111^2 - 1234321$

डेमलो संख्या के नामकरण की भी कहानी है। उस समय डेमलो (Demlo) नामक एक रेलवे स्टेशन था जहाँ उन्हें इस संख्या का विचार आया था।

हर्षद संख्या: हर्षद संख्याओं का एक मजेदार गुण होता है। ये संख्याएँ अपने अंको के योग से भाज्य होती हैं। काप्रेकर ने इन्हें हर्षद संख्या अर्थात आनंददायक संख्या कहा था। उदाहरण के लिये संख्या लेते है 12। अब 1+2=3 संख्या 12 अपने अंको के योग 3 से भाज्य है अर्थात वह हर्षद संख्या है। इन संख्याओं को कनाडाई–अमेरिकी गणितज्ञ इवान एम निवेन के नाम पर 'निवेन संख्या' भी कहा जाता है।

राजभाषा नीति संबंधी मार्गदर्शन एवं अनुश्रवण के लिए गठित समितियाँ

राजभाषा नीति संबंधी मार्गदर्शन एवं अनुश्रवण के लिए कुल छह समितियाँ हैं जिनके विवरण निम्नानुसार हैं:

(1) केंद्रीय हिन्दी समिति

अध्यक्ष – माननीय प्रधानमंत्री जी, उपाध्यक्ष – केंद्रीय गृह मंत्री जी

सदस्य – केंद्रीय गृह राज्य मंत्री, 6 अन्य केंद्रीय मंत्रालयों के मंत्री, 6 राज्यों के मुख्यमंत्री तथा संसदीय राजभाषा समिति के उपाध्यक्ष, संसदीय राजभाषा समिति की तीनों उप समितियों के संयोजक, हिन्दी के विद्वान, समाजसेवी, पत्रकार एवं राजभाषा विभाग के सचिव (कुल 30 सदस्य)

उद्देश्य – सरकारी कामकाज में हिन्दी के उत्तरोत्तर प्रयोग तथा हिन्दी के विकास एवं प्रसार हेतु विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों में समन्वयार्थ शीर्षस्थ समिति

(2) संसदीय राजभाषा समिति

अध्यक्ष – माननीय गृह मंत्री जी

सदस्य – 30 (20 सांसद लोकसभा से और 10 राज्य सभा से)

उद्देश्य – संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में हुई प्रगति की समीक्षा करके उस पर सिफारिश करते हुए राष्ट्रपति जी को प्रतिवेदन प्रस्तुत करना।

(3) मंत्रालयों/विभागों की हिन्दी सलाहकार समितियाँ

अध्यक्ष – संबंधित मंत्रालय/विभाग के मंत्री महोदय

सदस्य – मंत्रालय/विभाग के अधिकारी एवं गैर सरकारी सदस्य

उद्देश्य – मंत्रालयों/विभागों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा करना एवं परामर्श देना।

(4) केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष – सचिव, राजभाषा विभाग

सदस्य – विभिन्न मंत्रालयों/विभागों में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन देख रहे संयुक्त सचिव स्तर या उच्चतर स्तर के अधिकारी

उद्देश्य – मंत्रालयों/विभागों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना तथा उसके अनुपालन में पाई गई कमियों को दूर करने के उपाय सुझाना।

(5) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष – विभाग में राजभाषा नीति का कार्यान्वयन देख रहे संयुक्त सचिव स्तर या उच्चतर स्तर के अधिकारी

सदस्य – विभाग एवं संबद्ध तथा अधीनस्थ कार्यालयों के अधिकारी एवं राजभाषा अधिकारी/प्रभारी

उद्देश्य – तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा करना तथा वार्षिक कार्यक्रम के लक्ष्यों को प्राप्त करने के उपाय सुझाना। बैठक की आवधिकता – 03 महीने में एक बार

(6) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

अध्यक्ष – नगर में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों में नियुक्त अधिकारियों में से वरिष्ठतम अधिकारी

सदस्य – नगर में स्थित केंद्र सरकार के सदस्य कार्यालयों के प्रमुख

उद्देश्य – नगरों में स्थित केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा करना तथा समन्वयन सहित राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन के उपाय सुझाना। बैठक की आवधिकता – 06 महीने में एक बार।

भारतीय
श्रम पुस्तिका

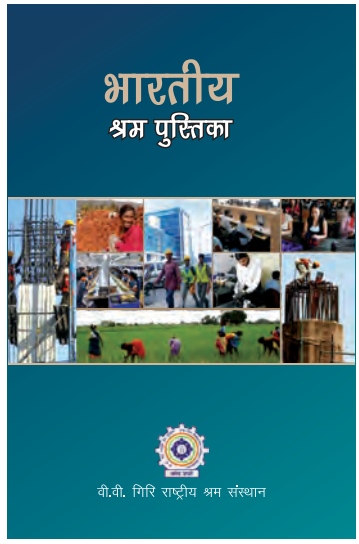

भारत विकास प्रक्रिया के एक बहुत महत्त्वपूर्ण मोड़ पर है। विगत कुछ वर्षों से हमारा देश विश्व की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभर रहा है। यह अत्यावश्यक है कि आर्थिक विकास के इन लाभों का वितरण न्यायपूर्ण ढंग से किया जाए और यह सुनिश्चित किया जाए कि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुंचें। इस संबंध में सबसे महत्त्वपूर्ण आवश्यकता, सभी के लिए गुणवत्ता वाला रोज़गार और श्रम मुद्दों का हल सुनिश्चित करना है, क्योंकि यह पहलू जनता की आजीविका से प्रत्यक्षतः जुड़ा हुआ है। श्रम के संबंध में देश अनेक और विविध प्रश्नों का सामना कर रहा है, जिनका विस्तार रोज़गार और अल्प–रोज़गार के बारे में सरोकारों से लेकर बाल श्रम का उन्मूलन करने के लिए कर्मकारों की सामाजिक सुरक्षा तक है। भारतीय श्रम मुद्दों की व्यापकता और विस्तार पर विचार करते हुए यह महत्त्वपूर्ण है कि इन मुद्दों का हल खोजने की प्रक्रिया में, बड़ी संख्या में सामाजिक साझेदारों तथा हितधारकों (स्टेकहोल्डर्स) को शामिल किया जाए। हितधारकों की रचनात्मक सहभागिता तभी संभव है, जब कि श्रम से संबंधित सूचना और विचारों को सुलभ बनाया जाए। इस परिप्रेक्ष्य में, वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान ने यह पुस्तिका प्रकाशित की है। इसमें भारत में श्रम के परिदृश्य के प्रमुख आयामों से संबंधित मूलभूत सूचनाओं को समेकित करने का प्रयास किया गया है। इसका आशय यह है कि सुसंगत सूचनाएं एक सरल और बोधगम्य तरीके से उपलब्ध कराई जाएं, जिससे इन्हें समाज के व्यापक तबके तक पहुंचयोग्य बनाया जा सके। इस पुस्तिका का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराया जा रहा है।

स्वच्छ भारत अभियान
एक कदम स्वच्छता की ओर

स्वच्छ, साफ–सुथरा एवं गरिमामय बनने के लिए धन की आवश्यकता नहीं होती।

आईये, जन भागीदारी के माध्यम से स्वच्छ भारत अभियान को एक उल्लेखनीय उपलब्धि बनाने हेतु मिलकर काम करें।

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान
नौएडा

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान श्रम एवं इससे संबंधित मुद्दों पर अनुसंधान, प्रशिक्षण, शिक्षा, प्रकाशन और परामर्श का अग्रणी संस्थान है। इस संस्थान की स्थापना 1974 में की गई थी और यह श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है। यह संस्थान विकास की कार्यसूची में श्रम और श्रम संबंधों को निम्नलिखित के द्वारा मुख्य स्थान देने के लिए समर्पित है:

- वैश्विक स्तर के अनुसंधानिक अध्ययनों और प्रशिक्षण हस्तक्षेपों को हाथ में लेना;
- कार्य की दुनिया में रूपांतरण के मुद्दे पर कार्रवाई करना;
- श्रम तथा रोजगार से संबंधित मुख्य सामाजिक भागीदारों तथा पणधारियों के बीच कौशल तथा अभिवृत्ति और ज्ञान का प्रचार–प्रसार करना;
- विश्व प्रसिद्ध संस्थानों के साथ समझ निर्माण तथा सहभागिता विकसित करना।

वी.वी. गिरि राष्ट्रीय श्रम संस्थान

(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन स्वायत निकाय)

सैक्टर 24, नौएडा–201 301
उत्तर प्रदेश (भारत)
वेबसाइट: www.vvgnli.gov.in